नाच के बाद

विश्व-साहित्य के महान उपन्यासकार टॉलस्टॉय के अमर उपन्यास 'दो हुस्सार' और 'इवान इल्यीच की मृत्यु' तथा उनकी प्रसिद्ध रचना 'नाच के बाद' इस पुस्तक में एक साथ प्रकाशित हैं। संसार की लगभग सभी भाषाओं में अनूदित होकर लोकप्रियता प्राप्त करनेवाली ये रचनाएं टॉल्सटॉय की अद्भुत प्रतिभा के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। नर-नारी के आकर्षण और प्रेमियों के मन की अथाह १९०८ ̈. का ऐसा रोचक और मार्मिक अन्यत्र मिलना कठिन है।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

नाच के बाद

... Bhatnagar
M.A. B.Sc., B.Ed.
... Hanuman Gali
RANI BAZAR, BIKANER

विश्व-साहित्य के महान उपन्यासकार
की तीन अमर कथा-कृतियां

अनुवादक : भीष्म साहनी

मूल्य : दो रुपये

दो हुस्सार	...	...	७
इवान इल्यीच की मृत्यु		...	८७
नाच के बाद	...	...	१६४

दो हुस्सार

उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू के दिनों की बात है। उन दिनों रेलें नहीं हुआ करती थीं, न ही बड़ी-बड़ी सड़कें। न तो रोशनी के गैस जला करते थे और न स्टेयरिन बत्तियां। गुदगुदे, कमानीदार कोच भी नहीं हुआ करते थे, और न ही बिना वार्निश का फर्नीचर। जिस तरह के निराश युवक, आंखों पर चश्मे लगाए, आजकल घूमते नज़र आते हैं, वैसे उन दिनों नहीं हुआ करते थे। आजकल जैसी महिलाएं भी नहीं हुआ करती थीं—उदारवादी और दर्शनशास्त्र से प्रेम करनेवाली; और न तो इतनी सुन्दर युवतियां ही, जो आजकल जाने कहां से इतनी संख्या में फूट निकली हैं। बड़ा सीधा-सादा ज़माना था, किसीको मास्को से सेंट पीटर्सबर्ग जाना होता तो घोड़ागाड़ी या छकड़े में भोजन पकाकर साथ ले चलता और वह भी इतनी अधिक मात्रा में कि लगता सारा भंडारा ही उठा लाया है। पूरे आठ दिन गर्द-भरी, कीच-भरी सड़कों पर हिच-कोले खाने पड़ते थे। किसी चीज़ पर मन यदि जमता था तो भुनी हुई, चुरमुरी टिकियों पर या गर्मागर्म पूल्लिक पर, या फिर वल्दाई गाड़ियों की घंटियों की टुनटुन पर। उन दिनों शरद की लम्बी-लम्बी सन्ध्याओं में घरों में चर्बी की बत्तियां जला करती थीं, और उन्हींकी रोशनी में बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों के कुटुम्ब मिल बैठा करते थे। नाच-घरों के शमादानों में मोम और स्पर्मासिटी की बत्तियां जला करती थीं, फर्नीचर बड़े करीने से रखा जाता था। हमारे बाप-दादों का यौवन आंकते समय लोग केवल यही नहीं देखा करते थे कि उनके चेहरों पर झुर्रियां आई हैं या नहीं, या बाल पके हैं या नहीं, बल्कि यह भी कि वे औरतों पर कितने द्वन्द्वयुद्ध लड़ चुके हैं। अगर किसी लड़की का रूमाल

—जाने में या अनजाने में—हॉल में गिर जाता तो युवक फौरन कमरे के दूसरे छोर से भागकर आते और रूमाल उठा देते। हमारी माताएं चौड़ी आस्तीनों और ऊंची कमरवाले गाउन पहना करती थीं, और गृहस्थी की सभी उलझनें पंचियां डाल-डालकर सुलझा लिया करती थीं। सुन्दरियां दिन की रोशनी में बाहर निकलने से घबराती थीं। वह जमाना था फ्री मेसन संस्थाओं का, मार्तीनवादियों, तुगेन्दबन्द, मिलोरादोविच, दवीदोव और पुश्किन का। उन्हीं दिनों की बात है कि क० नामक नगर में जमींदारों की एक सभा हुई। यह नगर प्रान्त का केन्द्र था और हाल ही में वहां कुलीन वर्ग के प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ था।

१

"कोई चिन्ता नहीं, अगर कहीं भी जगह नहीं है तो मैं अपना सामान हॉल में ही टिका लूंगा," एक जवान अफसर ने क० नगर के सबसे बढ़िया होटल में कदम रखते हुए कहा। युवक ने बड़ा ओवरकोट पहन रखा था, और सिर पर हुस्सारों की टोपी थी, और अभी-अभी स्लेज गाड़ी पर से उतरा था।

"बहुत बड़ा जमघट हो रहा है, महामहिम, इस जैसा पहले कभी नहीं देखा," एक छोटे से नौकर ने कहा। उसने पहले ही अफसर के अर्दली से पता लगा लिया था कि अफसर काउण्ट तुर्बीन है। इसी कारण वह उसे महामहिम कहकर सम्बोधित कर रहा था। "अफ्रेमो-व्स्काया जमींदारी की मालकिन ने वादा किया है, हुजूर, कि आज शाम वह अपनी लड़कियों को लेकर चली जाएगी। अगर हुजूर चाहें तो ११ नम्बर कमरे में ठहर सकते हैं," उसने कहा और बरामदे में काउण्ट के आगे-आगे दबे पांव जाने लगा। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह मुड़कर पीछे देखता।

हॉल में, दीवार पर, जार अलेक्सान्द्र की एक पुरानी आदमकद तस्वीर टंगी थी जिसके रंग फीके पड़ चुके थे। उसके नीचे, एक छोटी-सी मेज के आसपास कुछ लोग बैठे शैम्पेन पी रहे थे। स्पष्टतः, ये इसी इलाके के कुलीन लोगों में से थे। उन्हीं के नजदीक, दूसरी मेज पर सौदागरों की एक टोली जमी थी। जिन्होंने गहरे नीले रंग के कोट पहन रखे थे।

काउण्ट ने हॉल में कदम रखते ही अपने कुत्ते को पुकारा। कुत्ता आकार में बड़ा और भूरे रंग का था, नाम ज्यूहर था। फिर काउण्ट ने झटके से ओवरकोट उतार फेंका। ओवरकोट के कालरों पर अभी भी बर्फ जमी थी। नीचे उसने नीले रंग के साटिन का वर्दी-कोट पहन रखा था। उसने थोड़ी शराब का आर्डर दिया और मेज पर बैठते ही वहाँ बैठे लोगों के साथ गप्प-शप्प करने लगा। वे लोग उसके खूबसूरत डील-डौल और बेलाग चेहरे को देखते ही रीझ उठे और उसके सामने शैम्पेन का गिलास भरकर रख दिया। काउण्ट ने पहले वोद्का का एक गिलास चढ़ाया, फिर एक बोतल शैम्पेन अपने नये दोस्तों के लिए मंगवाई। ऐन उसी वक्त बर्फगाड़ी का कोचवान चाय-पानी के लिए बख्शीश मांगने अन्दर आया।

"साशा!" काउण्ट ने पुकारकर कहा, "इसे कुछ पैसे दे दो!"

कोचवान साशा के साथ बाहर चला गया, मगर फौरन ही लौट आया, और अपना हाथ आगे बढ़ाकर हथेली पर रखे पैसे दिखाने लगा।

"यह देखिए हुजूर! मैंने हुजूर की खातिर कितनी जोखिम उठाई। हुजूर ने आधा रूबल देने का वादा भी किया था, मगर देखिए यहाँ केवल एक चौथाई मिल रही है।"

"साशा! इसे एक रूबल दे दो!"

साशा चिढ़ गया। गाड़ीवान के बूटों की तरफ देखते हुए गहरी आवाज में बोला :

"इसके लिए यही बहुत है। मेरे पास और पैसे भी तो नहीं हैं।"

काउण्ट ने अपने बटुए में से पांच-पांच रूबल के दो नोट निकाले (बटुए में यही कुछ बच रहा था) और एक नोट कोचवान की ओर बढ़ा दिया। गाड़ीवान ने काउण्ट का हाथ चूमा और नोट लेकर बाहर चला गया।

"यह खूब रही!" काउण्ट ने कहा, "केवल पांच रूबल अब मेरे पास बच रहे हैं!"

"इसे कहते हैं असली हुस्सार!" एक आदमी ने मुस्कराकर कहा। उसकी मूँछें, उसकी आवाज और लचकदार मजबूत टांगें इस बात की गवाही दे रही थीं कि वह घुड़सेना का अवकाश-प्राप्त अफसर है। "क्या बहुत दिन तक यहाँ रुकने का इरादा है, काउण्ट?"

"मेरा बस चले तो एक दिन भी न रहूं। मगर क्या करूं, मुझे

दैमों का इन्तजाम करना है। इधर, इस मनहूस होटल में रहने के लिए कमरा तक नहीं मिल रहा।"

"मेरा कमरा हाज़िर है, काउन्ट, आप मेरे कमरे में चले आइए," पुलेना के अफसर ने कहा, "मैं ७ नम्बर कमरे में ठहरा हुआ हूँ। अगर आपको मेरे साथ रहने में कोई एतराज न हो तो मैं तो कहूँगा कि यहाँ कम से कम तीन दिन तक जरूर ठहरिए। आज रात कुमीनो मार्तीन के यहाँ नाच गाने की दावत है। वे आपको भी बुलाकर बहुत खुश होंगे।"

"हाँ, हाँ, काउन्ट, जरूर रुक जाइए," एक खूबसूरत युवक बोला, "आखिर इतनी जल्दी भी क्या है? ये उत्सव तीन साल के बाद कहीं एक बार होते हैं। और नहीं तो यहाँ की रिवायतों को तो देखोगे।"

"धन्य! मेरे कपड़े निकालो। मैं पहले हमाम जाऊँगा," काउन्ट ने उठते हुए कहा, "इसके बाद देखेंगे—क्या मालूम, मैं सचमुच मार्तीन की दावत पर जा पहुँचूँ।"

उसने एक बैरे को बुलाया और उसके कान में धीरे से कुछ कहा। बैरा हँसने लगा और बोला, "हर चीज़ मिल सकती है सरकार!" और झुककर बाहर चला गया।

"तो मैं इसे कह दूँगा कि मेरा सामान तुम्हारे कमरे में रख दें," काउन्ट ने बरामदे में से घूमकर कहा।

"बहुत ठीक है," पुलेना का अफसर बोला। फिर [illegible] कमरे के पास आ पहुँचा। "अच्छा जनाब जाइए। भूलिएगा नहीं!"

काउन्ट के कदमों की आवाज दूर चली गई। पुलेना का अफसर [illegible] के पास [illegible] अपनी कुर्सी [illegible] के पास [illegible] उसकी [illegible] मुस्कराता हुआ चला।

"यह कौन आदमी है?"

"[illegible]?"

"[illegible], मैं [illegible] हूँ। यही [illegible] अपने [illegible] के लिए [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। मैं [illegible] कि [illegible]—कोई [illegible] कि [illegible], तीन [illegible] के लिए [illegible] के लिए [illegible]

दोनों को दोषी ठहराया गया था। इसीलिए आज वह जान-बूझकर आज मुझे नहीं पहचान रहा था। आदमी अपने ढंग का है, क्यों, मानते हो न ?"

"बेशक, खूब आदमी है। चाल-ढाल से फ्रांसीसी है ! इसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि वह उस तरह का आदमी होगा," सुन्दर युवक बोला, "कितनी जल्दी हिल-मिल गये हैं मेरे ख्याल में उम्र भी पच्चीस से ज्यादा नहीं होगी, क्यों ?"

"नहीं, इससे ज्यादा होगी, सिर्फ देखने में छोटा लगता है। पर इसके गुण तभी नजर आते हैं जब आदमी इसे अच्छी तरह जान जाए। जानते हो मैडम मिगुनोवा को कौन भगा ले गया था ? यही आदमी। साब्लिन की हत्या किसने की थी ? मत्लेव को दोनों टांगों से पकड़कर खिड़की के बाहर किसने उठा फेंका था ? और ड्यूक नेस्तेरोव से तीन लाख रूबल किसने जीते थे ? तुम अन्दाजा नहीं लगा सकते कि यह कैसी दाहाना तबीयत का आदमी है। जुआ खेलता है, द्वन्द्वयुद्ध लड़ता है, औरतों को फुसलाता है। इसने असली हुस्सार का दिल पाया है, असली हुस्सार का। लोग हम लोगों की निन्दा तो करते हैं लेकिन वे एक सच्चे हुस्सार के गुण नहीं देख सकते ! वाह, वे भी क्या दिन थे !"

और घुड़सेना का अफसर तरह-तरह की रंगरलियों के किस्से सुनाने लगा। उन सबमें वह उन दिनों लेबेदान में काउण्ट के साथ शामिल हुआ था। पर सच तो यह है कि ये रंगरलियां न कभी हुई थीं और न हो सकती थीं। एक तो, कभी इससे पहले उसने काउण्ट को देखा तक नहीं था। काउण्ट के फौज में दाखिल होने के दो बरस पहले ही यह फौज से रिटायर होकर चला आया था। दूसरे, यह शख्स कभी घुड़सेना का अफसर भी नहीं रहा था। वह केवल बेलेव्स्की पलटन में चार साल तक सबसे छोटा कैडेट बनकर रहा था। जब इसे एन्साइन के पद पर नियुक्त किया गया तो यह फौज में से इस्तीफा देकर चला आया। हां, दस बरस पहले, विरासत मिलने पर यह एक बार लेबेदान जरूर गया था, वहां घुड़सेना के कुछेक अफसरों के साथ इसने सात सौ रूबल भी लुटाए थे। घुड़सेना में भरती होना चाहता था। इसलिए इसने अपने लिए एक उल्हन वर्दी भी बनवाई थी जिसकी आस्तीनों पर सतरी रंग के कफ थे। घुड़सेना में दाखिल होने की इसके मन में बड़ी ललक थी। तीन हफ्ते इसने घुड़सेना के अफसरों के साथ लेबेदान में बिताए। उन्हींको यह अपने

जीवन का सबसे सुखमय काल मानता रहा। कल्पना ही कल्पना में यह ललक पूरी भी हो गई और उसके दिमाग में एक स्मृति भी छोड़ गई, यहां तक कि स्वयं उसे पक्का विश्वास होने लगा कि वह घुड़सेना में काम कर चुका है। इस विश्वास के बावजूद उसकी शिष्टता तथा ईमानदारी में कोई फरक नहीं आया और वह सचमुच एक भला आदमी बना रहा।

"हां, ठीक है, लेकिन हम जैसे लोगों को वही आदमी समझ सकते हैं जो घुड़सेना में रह चुके हों।" वह कुर्सी के अगल-बगल टांगें फैलाकर बैठ गया और ठुड्डी को आगे की ओर बढ़ाकर, गहरी आवाज में बोला, "ज़माना था जब मैं घोड़े पर सवार अपने दस्ते की अगुआई किया करता था; वह घोड़ा नहीं था, कमबख्त शैतान था। घोड़े पर सवार होते ही मेरे अन्दर भी गज़ब की फुरती आ जाती। सेना का कमाण्डर निरीक्षण पर आता है, कहता है, 'लेफ्टिनेंट, यह काम तुम्हारे बिना कोई नहीं कर सकता। मेहरबानी करो, परेड में अपने दल की कमान अपने हाथ में लो।' 'जी साहब,' मैं कहता हूं, और बस, कहने की देर है कि काम हुआ समझो। मैं घोड़े का मुंह घुमाता हूं, और मुस्तैद सैनिकों को हुक्म देता हूं। बस,वह गए, वह गए! वाह, क्या सुनाऊं तुम्हें, वे भी क्या दिन थे!"

काउण्ट हमाम से लौट आया। उसका चेहरा लाल हो उठा था और बाल पानी से तर थे। वह सीधे सात नम्बर कमरे में चला गया। वहां घुड़सेना का अफसर, ड्रेसिंग गाउन पहने, मुंह में पाइप रखे चुप-चाप बैठा था और अपने इस आकस्मिक सौभाग्य पर मन ही मन खुश हो रहा था कि विख्यात तुर्बीन उसके साथ उसीके कमरे में रहेगा। पर उसकी खुशी में डर का हल्का-सा पुट था। 'अगर इसके सिर पर सहसा सनक सवार हो जाए और यह मेरे सारे कपड़े उतरवा दे और नंगा करके मुझे शहर के बाहर ले जाए और वहां बर्फ में ज़िन्दा गाड़ दे, या मेरे सारे शरीर पर कोलतार पोत दे तो क्या होगा? या केवल···मगर नहीं, यह ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा, अपने फौजी भाई के साथ ऐसा बर्ताव नहीं करेगा।' और इस विचार से उसके मन को ढाढ़स मिला।

"साशा! कुत्ते को खाना खिलाओ!" काउण्ट ने पुकारकर कहा।

साशा दरवाज़े पर नमूदार हुआ। उसने वोद्का का एक गिलास पहले ही चढ़ा रखा था और काफी सरूर में था।

"अच्छा! तू अभी से धुत हो रहा है, शैतान! थोड़ी देर भी

इन्तजार नहीं कर सकता था ? जाओ और ब्लूहर को खाना खिलाओ !"

"खाए बिना यह मरेगा नहीं, देखिए तो कितना चिकना हो रहा है," साशा ने कुत्ते को थपथपाते हुए कहा।

"आगे से जवाब मत दो जी ! जाओ, इसे खाना खिलाओ।"

"आपको भी बस अपने कुत्ते की ही फिक्र है। अगर नौकर ने एक गिलास पी लिया तो आप उसपर बरसने लगते हैं।"

"खबरदार, मैं मुंह तोड़के रख दूंगा !" काउंट ने ऐसी आवाज में चिल्लाकर कहा कि खिड़कियों के शीशे हिल उठे, और घुड़सेना का अफसर भी सहम गया।

"मुझसे भी पूछा होता कि साशा, क्या तुमने कुछ खाया है। लीजिए अगर आपको इन्सान से कुत्ता ही ज्यादा अजीज है तो तोड़ दीजिए मुंह मेरा, लगाइए मेरे मुंह पर···" साशा ने कहा। मुंह से ये शब्द निकलने की देर थी कि उसकी नाक पर ऐसा घूंसा पड़ा कि उसका सिर दीवार से जा टकराया और वह नीचे गिर पड़ा। दूसरे क्षण वह उठा और नाक पर हाथ रखे, भागता हुआ कमरे में से निकल गया और बरामदे में आकर एक सन्दूक पर लेट गया।

"मालिक ने मेरे दांत तोड़ डाले हैं," एक हाथ से अपनी नाक में से बहता खून पोंछते हुए और दूसरे हाथ से ब्लूहर की पीठ खुजलाते हुए साशा बड़बड़ाया। ब्लूहर अपना बदन चाट रहा था। "देखते हो ब्लूहर, मालिक ने मेरे दांत तोड़ डाले हैं, पर कोई बात नहीं, फिर भी वह मेरा सिर का साहब है, मेरा काउंट है, मैं उसकी खातिर आग-पानी में कूदने के लिए तैयार हूं। मैं सच कहता हूं, ब्लूहर। तुम्हें भूख लगी है, क्या ?"

कुछ देर तक वह वहां लेटा रहा, फिर उठा, कुत्ते को खिलाया, और काउण्ट की खिदमत करने, उसे चाय पहुंचाने के लिए चल पड़ा। उस वक्त तक उसका नशा लगभग उतर चुका था।

"इसे मैं अपना अपमान समझूंगा," बड़े दयनीय स्वर में घुड़सेना का अफसर काउण्ट को कह रहा था। काउण्ट अफसर के बिस्तर पर लेटा अपने पांव पलंग के चौखटे पर फैलाए हुए था। "आखिर मैं भी एक पुराना सिपाही हूं, आपका साथी हूं। बजाय इसके कि किसी और आप पैसे लें, मैं खुद, बड़े शौक से २०० रूबल आपकी नजर कर

दूंगा। इस वक्त मेरे पास ज्यादा रकम नहीं है—केवल एक सौ रूबल हैं—पर मैं आज ही बाकी रकम का इन्तजाम करूंगा। अगर आपने न लिए तो मैं इसे अपना अपमान समझूंगा, काउण्ट।"

"शुक्रिया, दोस्त," उसकी पीठ थपथपाते हुए काउण्ट ने कहा। काउण्ट ने उसी वक्त समझ लिया कि आगे चलकर दोनों के बीच किस तरह के सम्बन्ध रहेंगे। "शुक्रिया। अगर यह बात है तो हम साथ चल सकेंगे। पर बताओ हम यहां क्या करें? कुछ इस शहर की सुनाओ तो? कोई दिलचस्पी? कोई मेले? कोई नाच-गाना?"

घुड़सेना के अफसर ने बताया कि सुन्दरियों का एक झुंड का झुंड नाच पर पहुंचेगा। शहर का सबसे बड़ा छैला पुलिस-कप्तान कोल्कोव है—हाल ही में उसका चुनाव हुआ है, पर फिर भी उसमें वह हेकड़ी नहीं, वह अफसरशाही नहीं जो एक हुस्सार में होती है, पर यों भला आदमी है। जब से चुनाव शुरू हुए हैं, यहां खूब महफिल जमती है, इल्यूश्का की जिप्सी संगीत-मण्डली के गवैये आते हैं। स्तेशा अकेले गाती है। आज सब लोग सोच रहे हैं कि नाच के बाद जिप्सियों का गाना सुनें।

"और जुआ भी काफी चलता है," वह कहता गया। "लुकनोव यहां आया हुआ है। बड़ा धनी आदमी है, सारा वक्त जुआ खेलता है। यहां एक लड़का इल्यीन है, आठ नम्बर कमरे में रहता है, उहलन कोरनेट है, धड़ाधड़ हार रहा है। वे इस वक्त भी खेल रहे होंगे। हर शाम खेलते हैं। और काउण्ट, आप मानेंगे नहीं कि यह इल्यीन कितना भला-मानस है, इसका दिल छोटा नहीं, वह अपनी कमीज तक उतारकर दे दे देगा।"

"तो चलो उससे चलकर मिलें। देखें तो यहां कौन लोग आए हैं," काउण्ट ने कहा।

"चलिए, चलिए। वे सब आपसे मिलकर बेहद खुश होंगे।"

२

उहलन कोरनेट इल्यीन अभी-अभी जागकर उठा था। पिछली शाम उसने आठ बजे जुआ खेलना शुरू किया और सुबह ११ बजे तक बराबर १५ घण्टे तक खेलता रहा। जो रकम वह हार चुका था वह

बहुत बड़ी थी, पर कितनी थी, यह वह खुद भी न जानता था। उसके पास निजी तीन हज़ार रूबल के अलावा पल्टन के खज़ाने के पन्द्रह हज़ार रूबल और भी थे, और ये दोनों रकमें कब की एक दूसरी में मिल चुकी थीं। अब वह बकाया रकम गिनने से घबरा रहा था कि कहीं उसका यह डर ठीक ही साबित न हो कि वह अपनी पूंजी हारने के अलावा पल्टन की रकम में से भी कुछ हार चुका है। दोपहर हो रही थी जब वह सोया और सोते ही गहरी, निःस्वप्न नींद में खो गया। ऐसी नींद केवल जवानी के दिनों में, और वह भी जुए में बहुत कुछ हारने के बाद ही आती है। वह छः बजे शाम को उठा, ऐन उस वक्त जब काउण्ट तुर्बीन होटल में कदम रख रहा था। फ़र्श पर जगह-जगह ताश के पत्ते और चाक बिखरे पड़े थे। कमरे के बीचोंबीच रखी मेज़ों पर धब्बे ही धब्बे पड़े थे। उसे देखकर उसे पिछली रात के जुए की याद आई और वह सिहर उठा, विशेषकर अपने आखिरी पत्ते, एक गुलाम को याद करके, जिसपर वह पांच सौ रूबल हारा था। पर उसका मन अब भी उसकी वास्तविक स्थिति को मानने से इन्कार कर रहा था। उसने तकिये के नीचे से अपनी पूंजी निकाली और उसे गिनने लगा। कई एक नोट उसने पहचान लिए। जुआ खेलते समय, वे कई हाथ बदल चुके थे। उसे अपनी सभी चालें याद आ ही आईं। वह अपनी सारी रकम, तीन के तीन हज़ार रूबल खो बैठा था। इसके अलावा पल्टन के पैसों में से भी ढाई हज़ार रूबल हार चुका था।

उल्हन लगातार चार दिन से खेल रहा था।

जब वह मास्को से चला तो उसके हाथ में पल्टन का पैसा सौंपा गया था। जब वह क० नगर में पहुंचा तो घोड़ाचौकी के अफ़सर ने यह कहकर उसे रोक लिया कि नये घोड़े इस वक्त नहीं मिल सकते। मगर यह एक बहाना था, दरअसल अफ़सर और होटल के मालिक के बीच सांठ-गांठ थी कि रात के वक्त मुसाफ़िरों को आगे न जाने दिया जाए। उल्हन खिलाड़ी तबीयत का जवान था। मां-बाप ने पल्टन में अफ़सर बनने पर उसे तीन हज़ार रूबल उपहार में दिए थे। यह देखकर कि चुनाव के दिनों में क० नगर में बड़ा मौज-मेला रहेगा, उसे कुछ दिन रुक जाने में कोई आपत्ति न हुई, बल्कि वह खुश हुआ कि दिल खोलकर मौज लूटेंगे। पास ही वहीं देहात में, उसका एक परिचित ज़मींदार रहता था। वह घर-गृहस्थीवाला कुलीन सज्जन था। उल्हन

ने सोचा चलो उनसे भी मिल आएंगे। उसकी लड़कियों से भी थोड़ा-बहुत मनबहलाव हो जाएगा। वह गाड़ी लेकर उनसे मिलने जा ही रहा था जब घुड़सेना का अफसर वहां आ मौजूद हुआ और अपना परिचय दिया। उसी शाम, बिना किसी बुरे इरादे के, उसने होटल के हॉल में ढगकर अपने मित्र लुखनोव तथा अन्य जुआरियों से परिचय कराया। उस वक्त से लेकर अब तक उल्हन जुए की मेज पर ही बैठा रहा था। उसे अपना कुलीन जमींदार मित्र भूल गया, वह नये घोड़े तक मांगना भूल गया। सच तो यह है कि लगातार चार दिन से उसने अपने कमरे के बाहर कदम तक नहीं रखा था।

इल्यीन ने कपड़े पहने, नाश्ता किया और टहलता हुआ खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। थोड़ा घूम लूं तो मन पर से यह ताश का बोझ तो कुछ हल्का होगा। उसने अपना बरानकोट पहना और बाहर निकल आया। सामने लाल-लाल छतोंवाले सफेद मकान थे। उनके पीछे सूर्य छिप चुका था और चारों ओर संध्या-प्रकाश की लालिमा छाई हुई थी। हवा में हल्की-हल्की गर्मी थी। सड़कों पर कीच था और आसमान में से भीनी बर्फ के गाले धीरे-धीरे पड़ रहे थे। यह सोचकर उसका दिल उदास हो उठा कि आज का दिन मैंने सोकर गंवा दिया, और अब वह खत्म हुआ चाहता है।

'यह खोया हुआ दिन फिर कभी लौटकर नहीं आएगा,' उसने सोचा। फिर मन ही मन कहने लगा, 'मैंने अपना सारा यौवन ही बर्बाद कर डाला है।' पर यह वाक्य उसने इसलिए नहीं कहा कि वह सचमुच अपने यौवन को बर्बाद हुआ समझता था। वास्तव में उसने इस विषय पर कभी सोचा ही न था। उसने केवल इसलिए ये शब्द कहे थे कि वह वाक्य उसे अचानक याद हो आया था।

'अब मैं क्या करूं?' वह सोचने लगा, 'किसीसे पैसे उधार लूं और यहां से चला जाऊं?' उसी वक्त सड़क की पटरी पर से एक महिला गुजरी। 'कितनी बेवकूफ सी जान पड़ती है!' अचानक यह अजीब-सा असम्बद्ध विचार मन में उठा। 'यहां कोई आदमी ऐसा नहीं जिससे मैं उधार मांग सकूं। मैंने अपना यौवन बर्बाद कर डाला।' वह उस तरफ बढ़ा जहां दुकानों की कतार थी। एक दुकान के बाहर एक व्यापारी लोमड़ी की खाल का ओवरकोट पहने खड़ा था और ग्राहकों की राह देख रहा था। 'अगर मैंने वह आठ वहां छोड़ दिया होता तो अपनी हारी

हुई रकम पूरी कर लेगा।' एक बूढ़ी भिखारिन उसके पीछे-पीछे चलने लगी और सुबकती हुई उससे भीख मांगने लगी। 'कोई आदमी नहीं है जिससे मैं उधार मांग सकूं।' एक आदमी रीछ की खाल का कोट पहने, गाड़ी में बैठा, पास से गुजरा। एक चौकीदार ड्यूटी पर खड़ा था। 'क्या मैं कोई ऐसी बात कर सकता हूं, जिससे सनसनी फैल जाए! इन लोगों पर गोली चला दूं? पर कुछ भी मजा नहीं आएगा! मैंने अपना यौवन बर्बाद कर डाला। यह घोड़ों का साज कितना बढ़िया है! इसे यहां बेचने के लिए लटका रखा है! वाह, क्या लुत्फ आए जो आदमी स्ले में तीन घोड़े जोते और उन्हें सरपट भगाता हुआ शहर से निकल जाए! होटल में लौट चलूं। अब कुछ ही देर में लुखनोव आ जाएगा और चौकड़ी फिर बैठेगी।' वह लौट आया और आते ही फिर गिनने लगा। नहीं, पहली बार गिनने में कोई गलती नहीं हुई थी—पलटन के पैसों में से अब अढ़ाई हजार रूबल गायब थे। 'मैं पहले पत्ते पर पचीस का दांव लगाऊंगा, दूसरे पर 'कार्नर' का दांव, फिर दांव को सात गुना बढ़ा दूंगा, फिर पन्द्रह, तीस, साठ गुना, तीन हजार रूबल तक। फिर मैं वह घोड़े का साज खरीदकर यहां से निकल जाऊंगा। पर वह शैतान, मुझे जीतने नहीं देगा। मैंने अपना यौवन बर्बाद कर डाला।' इसी तरह के खयाल तुर्बिन के मन में चक्कर काट रहे थे जब लुखनोव ने कमरे में प्रवेश किया।

"क्या तुम्हें जागे देर हो गई, मिखाइलो वसील्येविच?" लुखनोव ने पूछा, और अपनी पतली-नोकीली नाक पर से सुनहरे रंग का चश्मा उतारा और जेब में से लाल रंग का रेशमी रूमाल निकालकर उसे पोंछने लगा।

"नहीं, अभी-अभी उठा हूं। खूब गहरी नींद सोया।"

"क्या तुम्हें मालूम है, अभी-अभी यहां एक हुस्सार आया है? जवाल्शेव्स्की के कमरे में ठहरा है। क्या तुमने सुना?"

"नहीं, मैंने नहीं सुना। और लोग कहां हैं?"

"वे रास्ते में प्रयाखिन से मिलने के लिए रुक गए। अभी पहुंचा चाहते हैं।"

उसके मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि और लोग भी आ पहुंचे: स्थानीय सुरक्षा-सेना का एक अफसर जो हमेशा लुखनोव के साथ रहता था; बड़ी-सी तोते जैसी नाक और गहरी काली-काली आंखोंवाला

यूनान का एक व्यापारी; एक मोटा, थलथल-पिलपिल ज़मींदार, जो दिन के वक्त शराब का कारखाना चलाता था और रात को आधे-आधे रूबल के दांव पर जुआ खेलता था। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति जल्दी से जल्दी खेल में जुट जाने के लिए बेचैन हो रहा था। लेकिन मुख्य खिलाड़ियों में से कोई भी यह दिखाना नहीं चाहता था। लुख्नोव तो खास तौर पर बड़े आराम से बैठा मास्को में गुण्डागर्दी की चर्चा कर रहा था :

"ज़रा सोचो तो !" वह कह रहा था, "मास्को, हमारा सबसे बड़ा शहर है, लेकिन गुंडागर्दी का अड्डा बना हुआ है। वहां रात के वक्त गुंडे, हाथों में कांटे उठाए, भूत-पिशाच बने हुए सड़कों पर घूमते फिरते हैं, बेवकूफों को डराते और मुसाफिरों को लूटते हैं, और कोई कुछ नहीं करता। मैं पूछना चाहता हूं कि आखिर पुलिस सोच क्या रही है ?"

उरहन बड़े ध्यान से गुण्डागर्दी के किस्से सुन रहा था। पर आखिर उससे न रहा गया। वह उठा और चुपचाप बाहर जाकर नौकर को खाना लाने का हुक्म दिया। सबसे पहले मोटे ज़मींदार ने सबके दिल की बात कही.

"तो दोस्तो, इस सुनहरे वक्त को क्यों बर्बाद किया जाए ? आइए दो दो हाथ हो जाएं।"

"तुम तो उतावले होगे ही, कल रात की सारी जीत के पैसे जो घर छोड़ आए हो," यूनानी बोला।

"लेकिन देर बहुत हो गई है," सुरक्षा-सेना का अफसर बोला।

इल्यीन ने लुख्नोव की ओर देखा। दोनों की आंखें मिलीं, पर लुख्नोव उसी स्थिरता से गुंडों का जिक्र करता रहा। कभी उनके भूत-ओझाओं जैसे लिबास का वर्णन करता, कभी उनके बड़े-बड़े पंजों का।

"तो चलें बाहर ?" उरहन ने पूछा।

"इसकी जल्दी क्या है ?"

"बैरा !" उरहन ने पुकारा, और उसका चेहरा किसी कारण लाल हो उठा। "मेरे लिए खाना लाओ। मैंने एक कौर तक मुंह में नहीं डाला। शैम्पेन लाओ और ताश लाकर यहां रखो।"

ठीक उसी वक्त काउन्ट और ज़वाल्शेव्स्की कमरे में दाखिल हुए। बातों-बातों में पता चला कि तुर्बीन और इल्यीन फौज के एक ही डिवी-ज़न में हैं। दोनों में फौरन दोस्ती हो गई। शैम्पेन से उन्होंने एक-दूसरे

की सेहत का जाम पिया, और कुछ ही मिनटों में यों घुल-मिलकर बातें करने लगे जैसे बचपन के मित्र हों। काउण्ट पर इल्यीन का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। काउण्ट उसकी तरफ देख-देखकर मुस्कराने लगा और बार-बार उसे यह कहकर छेड़ने लगा कि तुम तो अभी बच्चे हो।

"ऐसे होते हैं उल्हन !" वह कहने लगा, "क्या मूंछें हैं ! कैसी ज़ालिम मूछें हैं।"

इल्यीन के ऊपरले होठ पर के रोए बिल्कुल सुनहरे थे।

"तो क्या ताश खेलने जा रहे हो ?" काउण्ट ने पूछा, "मैं तो सोचता हूं कि तुम जीतोगे, इल्यीन, तुम बढ़िया खिलाड़ी हो, है न ?" मुस्कराते हुए वह बोला।

"खेलने के लिए तैयार तो ये ज़रूर हैं," लुखनोव ने ताश की गड्डी खोलते हुए कहा, "तुम भी शामिल हो जाओ, काउण्ट ?"

"नहीं, आज नहीं। अगर मैं खेला तो तुम्हारे कपड़े तक उतार लूंगा। जब मैं खेलता हूं तो बैंकों का दिवाला बोल जाता है। पर इस वक्त मेरे पास पैसे नहीं हैं। मेरे पास जो कुछ था मैं वोलोचक के नजदीक घोड़ा-चौकी पर हार आया हूं। एक कमबख्त फौजी ने मेरा सफाया कर दिया। हाथों में अंगूठियां पहने हुए था। ज़रूर कोई पत्तेबाज़ रहा होगा।"

"क्या तुम्हें ज्यादा देर घोड़ा-चौकी पर रुकना पड़ा ?" इल्यीन ने पूछा।

"पूरे बाईस घण्टे। वह मनहूस चौकी मुझे हमेशा याद रहेगी। पर मैं यह भी जानता हूं कि वहां का घोड़ों का कारिन्दा मुझे भी कभी नहीं भूलेगा।"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"हुआ यह कि जब मेरी गाड़ी वहां पहुंची तो वह कमबख्त मेरे सामने आ खड़ा हुआ। कैसा मनहूस चेहरा था उसका ! कहने लगा, 'घोड़े नहीं हैं।' अब मैंने एक उसूल बना रखा है, कि जब भी कोई मुझसे कहे कि घोड़े नहीं हैं तो मैं सीधे कारिन्दे के कमरे में चला जाता हूं, अपना ओवरकोट तक नहीं उतारता। उसके दफ्तर में नहीं जाता, बल्कि उसके निजी कमरे में जा पहुंचता हूं और जाते ही सब दरवाज़े और खिड़कियां खोल देने का हुक्म दे देता हूं, समझो जैसे कमरा धुएं से भरा हो। यहां पर भी मैंने यही किया। तुम्हें तो मालूम है न, पिछले

महीने कैसा पाला पड़ा था। चार डिग्री नीचे तक। कारिन्दा मेरे साथ बहस करने लगा। मैंने नीचे एक घूंसा नाक पर जमाया। एक बुढ़िया, और कुछ लड़कियां और औरतें चीखने-चिल्लाने लगीं। उन्होंने अपने बरतन-बरतन उठाए और गांव की ओर जाने लगीं। मैंने रास्ता रोक लिया, और चिल्लाकर कहा: 'मुझे घोड़े दे दो, तो मैं चला जाऊंगा, अगर नहीं दोगे तो मैं किसीको बाहर नहीं जाने दूंगा। बेशक यहां सर्दी में ठिठुरकर मर जाओ।' "

"इन लोगों का सौदा करने का यही तरीका है!" मोटे जमींदार ने ठहाका मारकर हंसते हुए कहा, "सर्दी में झींगुरों की तरह जमकर मर जाने दो।"

"पर मेरी नज़र उनपर से किसी कारण हट गई। मैं कहीं चला गया, और इस बीच कारिन्दा और ये औरतें वहां से सरक गईं। केवल एक बुढ़िया वहां पर रह गई। वह कभी तन्दूर के चबूतरे पर पड़ी छींकें मार रही थी और बार-बार भगवान का नाम ले रही थी। उसे मैंने बन्धक बना लिया। उसके बाद हमारे बीच समझौते की बातचीत शुरू हुई। कारिन्दा लौट आया और दूर ही से खड़े-खड़े गिड़गिड़ाने लगा कि भगवान के लिए बुढ़िया को छोड़ दो। पर मैंने अपने कुत्ते ब्लू-हर को उसपर छोड़ दिया—ब्लूहर कारिन्दों की गन्ध पहचानता है। पर उस शैतान कारिन्दे ने फिर भी मुझे घोड़े दूसरे दिन सुबह ही आकर दिए। इस तरह उस कमबख्त फौजी अफसर से भेंट हुई। मैं साथवाले कमरे में चला गया और उसके साथ खेलने लगा। क्या तुमने मेरे ब्लू-हर को देखा है? ब्लूहर, इधर आओ!"

ब्लूहर आया। सब जुआरियों ने बड़ी कृपालुता से उसकी ओर देखा, पर ज़ाहिर था कि उनका ध्यान किसी दूसरे काम की ओर अधिक था।

"पर दोस्तो, तुम खेलते क्यों नहीं? मेरी खातिर अपना खेल न खराब करो। तुम जानते हो, मैं बड़ा बातूनी आदमी हूं," तुर्बीन ने कहा। "यह भी ताश का दिलचस्प खेल है। इसे कहते हैं 'प्यार-बिहार'।"

३

लुखनोव ने दो मोमबत्तियां अपनी तरफ खिसकाईं, जेब में से मोटा-सा

भूरे रंग का बटुआ निकाला—वह नोटों से भरा था—धीरे-धीरे उसे खोला, मानो कोई रहस्यमय कृत्य सम्पन्न कर रहा हो। फिर उसमें से सौ-सौ रूबल के दो नोट निकाले और उन्हें ताश के नीचे रख दिया।

"कल की तरह आज भी, दो सौ रूबल का बैंक होगा," वह बोला, और अपनी ऐनक ठीक करके ताश की नई गड्डी खोलने लगा।

इल्यीन तुर्बीन से बातें करने में मशगूल था। बिना आंख उठाए बोला .

"ठीक है।"

खेल शुरू हुआ। लुख्नोव मशीन की-सी सफ़ाई से पत्ते बांटता, केवल किसी-किसी वक्त रुककर बड़े आराम से एक प्वाइण्ट लिख लेता, या अपनी ऐनक के ऊपर से पैनी आंखों से देखता हुआ शिथिल-सी आवाज़ में कहता, "तुम्हारी चाल है।" मोटा ज़मींदार सबसे ज्यादा शोर मचा रहा था। ऊंची-ऊंची आवाज़ में अपना हिसाब जोड़ता, मोटी, स्थूल उंगलियों से वह पत्तों के कोने मोड़ता जिससे दाग पड़ जाते। सुरक्षा-सेना का अफ़सर बड़ी साफ़ लिखाई में अपने प्वाइंट लिखता और मेज़ के नीचे हाथ ले जाकर हल्के से पत्तों के कोने मोड़ देता। बैंक बांटने-वाले की बगल में यूनानी बैठा था और अपनी काली-काली आंखों से इतने ध्यान से खेल को देखे जा रहा था मानो वह इस इंतज़ार में हो कि कोई घटना घटने वाली है। मेज़ के पास खड़े जवलोव्स्की में सहसा स्फूर्ति आ जाती, अपनी जेब में से नीले या लाल रंग का नोट निकालकर, उसपर एक पत्ता फेंकता, थाप देकर उसपर हाथ रखता, ऊंची आवाज़ में किस्मत बुलाता, "आ जा, सात आए सात!" मूंछों को दांतों तले दबाता, कभी एक पांव पर अपने शरीर का बोझ डालता, कभी दूसरे पर। उसका चेहरा लाल हो उठता, सारे बदन में फुरफुरी होने लगती, और उस वक्त तक होती रहती जब तक उसके हाथ में पत्ता न आ जाता। इल्यीन के पास, सोफ़े पर, एक प्लेट में बछड़े का गोश्त और खीरे के टुकड़े रखे थे। वह उन्हें उठा-उठाकर खा रहा था, और जल्दी से उंगलियों को जैकेट पर ही पोंछते हुए, एक के बाद दूसरा पत्ता फेंक रहा था। तुर्बीन शुरू से ही सोफ़े पर बैठा था। वह फ़ौरन भांप गया कि ऊंट किस करवट बैठेगा। लुख्नोव आंख उठाकर उल्हन की तरफ़ देखता तक न था, न ही उससे एक शब्द भी कहता, वह केवल अपने चश्मे में से किसी-किसी वक्त उसके हाथों की ओर देखता लेकिन उल्हन

खेल जारी रहा।

सुखनोव ने इल्यीन का एक और पत्ता उठाया। इगनेव तुरन्त बोला :

"बहुत बुरा काम है !"

"किस बात पर नाराज हो रहे हो, काउण्ट ?" सुखनोव ने नर्मी से पर साथ ही बेरुखी दिखाते हुए कहा।

"जिस ढंग से तुम इल्यीन [illegible] उठाते हो [illegible] बाजियां तुम जीत लेते हो और छोटी हार जाते हो। यह बहुत बुरा है।"

सुखनोव ने कन्धे बिचकाए और भौंहे सिकोड़ी मानो कह रहा हो कि हर एक की अपनी-अपनी किस्मत है, और खेल में जुटा रहा।

"ब्लूहर ! इधर आओ !" काउण्ट चिल्लाया और उठ खड़ा हुआ। "पकड़ लो इसे, ब्लूहर !"

ब्लूहर इस तेजी से सोफे के नीचे से उछलकर निकला कि सुरक्षा-सेना का अफसर गिरते-गिरते बचा। कुत्ता भागकर अपने मालिक के पास आ पहुंचा और गुर्राने लगा। वह पूछ हिलाता हुआ कमरे में लोगों की तरफ यों देखने लगा मानो कह रहा हो, 'बताओ इनमें कौन बुरा आदमी है !'

लुखनोव ने पत्ते रख दिए और कुर्सी पीछे को ओर खींच दी।

"इस हालत में खेलना नामुमकिन है," उसने कहा, "मुझे कुत्तों से नफरत है। कौन आदमी खेल सकता है जब कमरा कुत्तों से भरा हो ?"

"और कुत्ते भी इस जैसे—यह कुत्ता नहीं जोंक है, मैं सोचता हू," सुरक्षा-सेना के अफसर ने सुर मे सुर मिलाते हुए कहा।

'कहो, मिखाइलो वसील्येविच, खेल जारी रखें या बद कर दें ?" लुखनोव ने अपने मेजबान से पूछा।

"कृपा करके हमारा खेल खराब न करो, काउण्ट" इल्यीन ने तुर्बीन से कहा।

इसपर तुर्बीन ने इल्यीन की बांह पकड़ी और उसे कमरे से बाहर ले जाने लगा।

"जरा इधर तो आओ।"

काउण्ट की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। वह जान-बूझकर ऊंची आवाज में बोल रहा था। यों भी उसकी आवाज तीन कमरे दूर तक सुनाई देती थी।

"क्या तुम पागल हो गए हो? देखते नहीं कि यह ऐनकवाला आदमी डटा हुआ पत्तेबाज है?"

"नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है?"

"और अब देखो मैं कहता हूं। मुझे तो इसमें कुछ लेना-देना नहीं है। कोई और वक्त होता तो मैं खुशी से यही देखे तुमसे गुर जीतकर न जाता पर आज रात, न मालूम क्यों, मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सकता कि वे लोग तुम्हें लूटकर ले जाएं। क्या अपने पैसों से खेल रहे हो?"

"हां तो!... ल... क्यों?... क्यों पूछते हो?"

"मैं भी इसी रास्ते सफर कर चुका हूं, दोस्त, इन पत्तेबाजों की सब चालें जानता हूं। यह ऐनकवाला आदमी पत्तेबाज है, मैं फिर कहता हूं। बेहतर होगा छोड़ दो, इसी वक्त छोड़ दो। मैं तुम्हें एक दोस्ताना सलाह दे रहा हूं।"

"मैं सिर्फ एक हाथ और खेलूंगा।"

"मैं जानता हूं 'एक हाथ और' का क्या मतलब होता है। चलो, यह भी देख लेते हैं।"

वे वापस आ गए। एक ही हाथ में इल्यीन ने इतने पत्ते खींचे और इतने दांव इतने ज्यादा हारे कि उसे बहुत भारी नुकसान हुआ।

तूशीन ने मेज पर अपना हाथ फैला दिया।

"बस हो चुका!" उसने चिल्लाकर कहा, "अब और मत खेलो।"

"अब मैं [illegible] सकता हूं? तुम इतनी मेहरबानी करो कि मुझे अकेला छोड़ दो," इल्यीन ने [illegible], बिना तूशीन की ओर देखे, [illegible] हुए कहा।

"[illegible] हाथों में इतना मजा आ रहा है [illegible]। मैं [illegible] नहीं [illegible] सकता। [illegible], चलो [illegible], [illegible]।"

[illegible]। किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा, और [illegible] [illegible] नहीं [illegible] उसके [illegible] की [illegible] [illegible] की [illegible] में [illegible] नहीं।

"[illegible] है?" [illegible] ने [illegible] हुए कहा।

"[illegible]," [illegible] से [illegible]

सर ने फुसफुसाकर कहा।
और खेल जारी रहा।

४

साज़िन्दे आस्तीनें चढ़ाए पहले से ही भण्डारे में तैयार खड़े थे। सब-के सब मार्शल के घर के बन्धक-दास थे। इस अवसर पर भण्डारे को आर्केस्ट्रा के लिए खाली कर लिया गया था। इशारा पाते ही वे पोलैण्ड का राष्ट्रीय नाच—'अलेक्सान्द्र-येलिज़वेता'—बजाने लगे। हॉल मोम-बत्तियों की रोशनी से जगमग कर रहा था। नाच करनेवाले जोड़े, एक-एक करके, बड़े बांकपन से, लकड़ी के फर्श पर उतरने लगे। सबसे आगे गवर्नर मार्शल की पत्नी का बाज़ू थामे हुए आया। उसकी छाती पर सितारा चमक रहा था। उसके पीछे मार्शल गवर्नर की पत्नी का बाज़ू थामे हुए आया। इसके बाद अलग-अलग क्रम से जोड़े उतरने लगे। सभी लोग इलाके के शासक परिवारों में से थे। उसी वक्त ज़वश्चेव्स्की अन्दर दाखिल हुआ। नीले रंग का फ्रॉक-कोट, कन्धों पर झब्बे, ऊंचा कॉलर, पावों में ऊंचे मोजे और नाच के जूते चढ़ाए था। उसके अन्दर पहुंचते ही हॉल इत्र की खुशबू से महमह करने लगा। चमेली का इत्र वह मूंछों, कोट के कॉलर और रूमाल पर मानो उंडेल लाया था। साथ में एक बांका हुस्सार था। हुस्सार ने चुस्त, नीले रंग की घुड़सवारों की बिर्जेस पहन रखी थी, और ऊपर सुनहरी कढ़ाई का लाल कोट पहने था। कोट पर व्लादीमिर क्रास तथा १८१२ का तमगा चमक रहा था। काउण्ट का कद सामान्य कद से ज़्यादा नहीं था, पर शरीर का गठन अत्यन्त सुन्दर था। उसकी स्वच्छ, नीली आंखें चमक रही थीं। गहरे भूरे बालों में बड़े-बड़े कुण्डल बनते थे। इनसे उसका चेहरा और भी निखर आया था। मार्शल के घर में उसका प्रवेश अप्रत्याशित नहीं था। जिस सुन्दर युवक से वह होटल में मिला था, उसने मार्शल को सूचना दे दी थी कि सम्भव है काउण्ट भी नाच-पार्टी में शरीक हो। इस समाचार के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया अलग-अलग ढंग की हुई थी। पर सामान्यतया किसीको भी बहुत खुशी नहीं हुई थी। "क्या मालूम वह हमारी खिल्ली उड़ाए," पुरुषों और बड़ी उम्र की स्त्रियों को तो यह ख्याल आया था। "क्या मालूम वह मुझे भगा ले जाए।" यह

ख्याल अधिकांश युवतियों के मन में उठा था।

पोलैण्ड के संगीत की धुन समाप्त हुई और नाचनेवाले जोड़े एक-दूसरे के सामने झुककर अलग हुए। स्त्रियां स्त्रियों में जा मिलीं और पुरुष पुरुषों में। ज़वल्देव्स्की गर्व और खुशी से फूला न समा रहा था। काउण्ट को घर की मालकिन के पास ले गया। मार्शल की पत्नी मन ही मन डर रही थी कि कहीं सबके सामने काउण्ट उसकी हंसी न उड़ाने लगे, लेकिन ऊपर से, सिर एक ओर को झुकाए, बड़े गरूर और सरपरस्ती के लहजे में बोली, "बहुत खुशी हुई। उम्मीद है आप भी नाचेंगे।" और यह कहकर एक ऐसी अविश्वास-भरी नज़र से उसकी ओर देखा मानो कह रही हो, 'अगर तुमने किसी महिला का अपमान किया तो तुम निरे गुण्डे साबित होगे।' पर काउण्ट ने मिनटों में उसका दिल जीत लिया। उसकी विनम्रता, शिष्टता, हंसोड़ तबीयत और सुन्दर रूप को देखकर उसकी बदगुमानी जाती रही। यहां तक कि मालकिन के चेहरे का भाव बदल गया, 'देखा, मैं इस तरह के लोगों को सीधे रास्ते पर लाना जानती हूं। उसे फौरन पता चल गया कि वह किससे बात कर रहा है। देखते जाओ, सारी शाम मेरे आगे-पीछे न घूमता रहे तो कहना।' पर ऐन इसी वक्त गवर्नर काउण्ट के पास आया और बातें करने के लिए उसे एक ओर ले गया। वह काउण्ट के पिता से परिचित था। यह देखकर स्थानीय कुलीनों के शक दूर हो गए। उनकी नज़रों में काउण्ट और भी ऊंचा उठ गया। थोड़ी देर बाद ज़वल्देव्स्की ने उसका परिचय अपनी बहिन से कराया। वह एक गोल-मटोल, युवा विधवा थी। जब से काउण्ट ने कमरे में कदम रखा था, वह अपनी काली-काली आंखों से उसे निहार रही थी। काउण्ट ने उससे वॉल्ज़ नृत्य नाचने का प्रस्ताव किया। साज़िन्दे उस समय इस नाच की धुन बजा रहे थे। काउण्ट बहुत अच्छा नाचता था और उसे नाचते देखकर लोगों के मन से रहा-सहा लिहाज़ भी दूर हो गया।

"क्या खूब नाचता है!" एक मोटी-सी औरत बोली। यह देहात के किसी कुलीन की पत्नी थी और काउण्ट की थिरकती टांगों की ओर देखे जा रही थी, और अपने-आप ताल दिए जा रही थी, "एक, दो, तीन; एक, दो तीन, वाह! बहुत अच्छा!" नीली विर्दी में काउण्ट बड़ी फूर्ती से हॉल में इधर से उधर पैंतरे लेकर नाच रहा था।

"उफ़, कितना अच्छा नाचता है, वाह-वाह!" एक दूसरी स्त्री

में कहा। वह शहर में कुछ दिन के लिए आई हुई थी। इस सोसाइटी में उसे अशिष्ट समझा जाता था। "आश्चर्य की बात कि उसकी एड़ी किसी को छूती तक नहीं। वाह, कितनी सफाई से कदम रखता है!"

काउण्ट ऐसा नाचा कि इलाके के तीन सबसे अच्छे नाचनेवालों को मात कर गया। इनमें से एक था गवर्नर का सहकारी अफसर। कद का लम्बा और बाल सन जैसे थे। नाच में अपने फुर्तीलेपन के लिए मशहूर था। जिस किसी स्त्री के साथ नाचता, उसे अपने साथ खूब जोर से चिपकाए रखता। इस बात के लिए भी मशहूर था। दूसरा था घुड़सेना का अफसर, जिसका बदन बॉल्ज नाचते वक्त बड़े खूबसूरत अन्दाज से झूमता। वह बड़ी नज़ाकत से और जल्दी-जल्दी एड़ियाँ टकराता था। इसी तरह वहां एक और आदमी इतना अच्छा नाचता था कि लोग उसे हर नाच-पार्टी की जान समझते थे, हालांकि उसका दिमाग बहुत तेज न था। वह ग़ैरफौजी आदमी था। जब से पार्टी शुरू हुई वह नाचता रहा और सांस लेने तक के लिए नहीं रुका। हर नाच के बाद वह कुर्सियों पर बैठी स्त्रियों के पास जाता और क्रमानुसार एक-एक से नाचने का अनुरोध करता। केवल किसी-किसी वक्त, मुंह पर से पसीना पोंछने के लिए रुकता था। उसका मुंह लाल और पसीने से तर था, और रूमाल भीग चुका था। काउण्ट ने सबको मात दी और स्त्रियों में से सबसे मुख्य तीन स्त्रियों के साथ नाचा। उनमें से एक गदराए डील-डौल की थी, अमीर, खूबसूरत और बेवकूफ। दूसरी मझले कद की थी, बहुत सुन्दर तो न थी पर नाज़ुक थी और बड़ी शानदार पोशाक पहने हुए थी; और तीसरी एक छोटी-सी स्त्री, जो देखने में साधारण मगर थी बड़ी चतुर थी। अन्य स्त्रियों के साथ भी वह नाचा। या यों कहिए कि सभी सुन्दर स्त्रियों के साथ वह नाचा। और उस नाच-पार्टी पर बहुत-सी सुन्दर स्त्रियां आई हुई थीं—पर जो स्त्री उसे सबसे ज्यादा पसन्द आई, वह थी ज़वल्दोव्स्की की विधवा बहन। उसके साथ वह एक-एक बार क्वाड्रिल, एकोसाएज तथा मज़ुर्का नाचा। शुरू-शुरू में क्वाड्रिल नाचते वक्त उसने उसके रूप की बार-बार सराहना की, उसकी तुलना वीनस से, डायना से, गुलाब के फूल से, और किसी अन्य फूल से करता रहा। नन्ही विधवा जवाब में केवल अपनी सफेद सुघड़ गर्दन एक ओर टेढ़ी कर लेती, और पलकें झुका लेती। उसकी आंखें उसके सफेद मलमल के फ्रॉक पर टिक जातीं, और वह हाथ में पकड़ा हुआ पंखा

[illegible]

पर धीरा कमल की यह कोशिश भी कामयाब [illegible] जिराफ पर कोई असर नहीं हुआ। वह हिलकर बाहर उनके आगे-आगे [illegible] कोशिश करने लगा, [illegible] के बारे में सुनाने लगा। उसे कहा, "बस, आपके हुक्म की देर है, मशीन [illegible], मैं फिर [illegible] हो जाऊंगा, कहेंगे तो मुर्गे की तरह बांग देने लगूंगा, खिड़की से [illegible] पड़ूंगा, नदी पर [illegible], जहां कहीं भी [illegible] गया हूं।" काउन्ट का यह दांव भी [illegible]। नन्ही जिराफ फिर [illegible] और [illegible] मार-मारकर [illegible] लगी। उसके दांतों की [illegible], [illegible] बार-बार [illegible] लगी। उसका [illegible]

गया। इधर काउण्ट पागल हुआ जा रहा था। क्वाड्रिल के ख़त्म होते न होते वह अपनी सुध-बुध खो बैठा।

क्वाड्रिल नाच समाप्त हुआ। इलाक़े के सबसे अमीर ज़मींदार का बेटा मन्ही विधवा के पास आया। १८ बरस का निठल्ला युवक, मुद्दत से विधवा की मुहब्बत में पागल हुआ जा रहा था। (यह वही कण्ठ-माला का रोगी था जिसके हाथ से काउण्ट ने कुर्सी छीन ली थी)। परन्तु विधवा उसके साथ बड़ी बेरुखी से पेश आई। जो उत्तेजना काउण्ट ने उसके अन्दर पैदा कर दी थी, उसका दसवां हिस्सा भी यह लड़का पैदा नहीं कर सकता था।

"तुम अच्छे आदमी हो जी!" वह बोली। उसकी आंखें काउण्ट की पीठ पर लगी थीं और वह मन ही मन हिसाब लगा रही थी कि उसके कोट पर कितने गज़ सुनहरी गोट लगी होगी। "मुझसे तो वादा किया था कि स्ले-गाड़ी पर सैर कराओगे और चाकलेट लाकर दोगे?"

"मैं तो हाज़िर हुआ था आन्ना पयोदोरोव्ना, मगर तुम घर पर नहीं थीं। मैं वहां तुम्हारे लिए सबसे बढ़िया चाकलेटों का डिब्बा छोड़ आया हूं," युवक ने जवाब दिया। क़द का लम्बा होने के बावजूद उसकी आवाज़ पतली-सी थी।

"तुम हमेशा बहाने ढूंढते रहते हो। मुझे तुम्हारे चाकलेटों की ज़रूरत नहीं। यह मत समझो कि····"

"मैं देख रहा हूं आन्ना पयोदोरोव्ना, तुम्हारा रुख़ बदल रहा है। मैं इसका कारण भी जानता हूं। यह तुम अच्छा नहीं कर रही हो," वह बोला। वह कुछ और भी कहना चाहता था मगर व्याकुलता में उसके होंठ इस क़दर कांपने लगे कि वह आगे कुछ कह न पाया।

आन्ना पयोदोरोव्ना ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और सारा वक़्त तुर्बीन की ओर देखती रही।

दावत का मेज़बान, मार्शल, काउण्ट के पास आया। वह बड़े रोब-दाब वाला हट्टा-कट्टा बुज़ुर्ग आदमी था और मुंह में उसके एक भी दांत नहीं था। काउण्ट के बाज़ू पर हाथ रखकर, वह उसे अपने साथ पढ़ने-वाले कमरे में ले चला। वहां सिगरेट, शराब आदि का प्रबन्ध था। तुर्बीन के बाहर निकलने की देर थी कि आन्ना पयोदोरोव्ना के लिए नाच-घर वीरान हो उठा। अपनी एक सहेली को साथ लेकर वह सीधी शृंगार-कक्ष में चली गई। उसकी सहेली, दुबली-पतली, अधेड़ उम्र की अन-

[illegible]

[illegible] में अत्याचारी था, [illegible]

काउण्ट के अन्दर आ [illegible] होटल के साथ काउण्ट का परिचय कराया गया [illegible] ने हाथ मिलाया और [illegible] होने का संकेत देने लगा। [illegible] वाली थी। "यहाँ सब लोग [illegible]" काउण्ट ने निमन्त्रण स्वीकार किया और फिर [illegible] के लिए।

"मगर साहिबान, आप लोग नाच क्यों नहीं रहे हैं?" काउण्ट [illegible] पड़नेवाले कमरे में से बाहर निकलते हुए पूछा।

"हमें नाच से क्या लेना-देना?" पुलिस-कप्तान ने हँसते हुए कहा। [illegible] को ही बगल में लेकर घूम रहे हैं, काउण्ट। और हाँ [illegible]

काउण्ट, ये सब लड़कियां मेरे देखते ही देखते बड़ी हुई हैं। कभी-कभी तो मैं भी एकोसाएज नाच में शामिल हो जाता हूं। अब भी थोड़े-बहुत पैंतरे मार सकता हूं, काउण्ट।"

"तो फिर आओ, अभी नाचें," तुर्बीन ने कहा, "जिप्सियों का गाना सुनने से पहले यहां भी थोड़ा मज़ा ले लें।"

"क्यों नहीं। आओ दोस्तो, और नहीं तो अपने मेज़बान को खुश करने के लिए ही सही।"

तीन लाल-लाल चेहरोंवाले कुलीन उठ खड़े हुए। अब से नाच शुरू हुआ था वे पढ़नेवाले कमरे में बैठे शराब पीते रहे थे। उन्होंने हाथों पर दस्ताने चढ़ाए—एक ने काली खाल के, बाकी दोनों ने सिल्क के बुने हुए। तीनों नाचघर की ओर जाने लगे। परन्तु सहसा, कण्ठ-माला का रोगी युवक वहां आ पहुंचा। उसे देखकर सबके सब रुक गए। युवक के होंठ नीले पड़ गए थे और वह मुश्किल से आंसू रोक पा रहा था। सीधा तुर्बीन के पास जाकर बोला :

"क्या समझते हो तुम अपने-आपको? काउण्ट हो तो क्या हर किसीको धक्के देते फिरोगे? इस जगह को हाट-बाज़ार समझ रखा है?" उसकी सांस फूल रही थी। "यह सरासर बदतमीज़ी है···"

उसके होंठ कांपने लगे और गला रुंध गया।

"क्या है?" तुर्बीन की भवें चढ़ गईं। "क्या कहा, पिल्ले?" तुर्बीन ने चिल्लाकर कहा और युवक के दोनों हाथ पकड़कर इस ज़ोर से दबाए कि उसका चेहरा लाल हो गया—अपमान के कारण इतना नहीं, जितना डर के कारण। "क्या मेरे साथ द्वन्द्वयुद्ध लड़ना चाहते हो? अगर यह बात है तो मैं तैयार हूं।"

तुर्बीन ने उसके हाथ छोड़ दिए। उसी वक्त दो आदमी उस लड़के को बाज़ुओं से पकड़कर कमरे के पीछे दरवाज़े की ओर धकेल ले गए।

"पागल हो गए हो? बहुत पी ली है, क्या? हम तुम्हारे बाप से शिकायत करेंगे। तुम्हें हुआ क्या है?" उन्होंने उससे पूछा।

"मैं पिए हुए नहीं हूं। यह लोगों को धक्के लगाता फिरता है, और माफी तक नहीं मांगता। उल्लू का पट्ठा!" युवक ने बिलख-कर कहा और सचमुच रोने लगा।

उसकी शिकायतों की ओर किसीने कान नहीं दिया, और उसे घर भेज दिया गया।

"इसकी ओर कोई ध्यान न दो, काउंट," पुलिस-कप्तान और उपलोव्स्की दोनों ने एक साथ कहा। दोनों तुर्बीन को तसल्ली देने के लिए बेकरार थे।

"वह तो बच्चा है, अभी तक उसकी घर में पिटाई होती है। सोलह साल की तो उसकी उम्र है। न मालूम उसपर कौन-सा जनून सवार हो गया। जरूर पागल हो गया होगा। उसका पिता बड़ा नेक आदमी है, बड़ी इज्जत है उसकी, चुनावों में हमारा उम्मीदवार था।"

"भाड़ में जाए अगर द्वन्द्वयुद्ध नहीं लड़ना चाहता तो···"

और काउंट फिर नाचनेवाले हॉल में चला गया और बड़े मजे से फिर उसी नन्ही विधवा के साथ एकोसाएज नाच नाचने लगा। जो लोग उसके साथ अध्ययन-कक्ष में से नाचने के लिए आए थे उनका नाच देखकर तुर्बीन को हंसी आने लगी। एक बार पुलिस-कप्तान का पांव फिसला और वह नाचने जोड़ों के बीच धड़ाम से गिर पड़ा। काउंट इतने जोर से ठहाका मारकर हंसा कि सारा हॉल उसकी हंसी में गूंजने लगा।

५

जिस समय काउंट पढ़नेवाले कमरे में गया हुआ था, उस वक्त आन्ना फ्योदोरोव्ना ने सोचा कि उसे काउंट की तरफ बेरुखी बनाए रखनी चाहिए। वह अपने भाई के पास गई और बड़े अनमने ढंग से बोली, 'यह तो बताओ, भैया, यह हुस्सार कौन है जो मेरे साथ अभी नाच रहा था ?" घुड़सेना का अफसर पूरा ब्योरा देकर बताने लगा कि तुर्बीन बड़ा माना हुआ हुस्सार है। केवल इसलिए नाच पर आया है कि रास्ते में पैसे चोरी हो जाने के कारण उसे शहर में रुक जाना पड़ा। अब उसने खुद काउंट को एक सौ रूबल अपनी जेब से दे रखे हैं, मगर यह बहुत मामूली रकम है। फिर अपनी बहिन से पूछने लगा कि क्या तुम दो सौ रूबल और उधार दे सकती हो ? पर इस बारे में किसीसे भी जिक्र नहीं करना, काउंट से तो बिल्कुल ही नहीं। आन्ना फ्योदोरोव्ना ने अपने भाई को वचन दिया कि वह उसी दिन शाम को रुपये दे देगी; और इसका जिक्र भी किसीसे नहीं करेगी। पर एकोसाएज के समय उसके मन में तीव्र इच्छा उठी कि काउंट को यह रकम

खुद दे दे जितनी भी उसे जरूरत हो। पर काउंट को अपने मुंह से यह बात कहने के लिए बड़ी काफी देर के बाद साहस बटोर पाई। पहले तो झिझकती शरमाती रही, पर आखिर, बड़ी कोशिश के बाद उसने बात छेड़ी :

"मेरे भाई ने मुझे बताया है कि रास्ते में आपके साथ कोई दुर्घटना हो गई थी, और अब आपको पैसे की तंगी है। अगर जरूरत हो तो मुझसे ले लीजिए। मुझे बड़ी खुशी होगी।"

पर कहते ही आन्ना फ्योदोरोव्ना डर गई और उसका चेहरा लाल हो गया। काउंट का चेहरा भी मुर्झा गया।

"आपका भाई तो जाहिल है," उसने कड़ाई के साथ कहा, "आप यह तो जानती हैं, कि अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमी का अपमान करे तो उसे द्वन्द्वयुद्ध की चुनौती दी जाती है। पर अगर कोई औरत किसी मर्द का अपमान करे तो जानती हैं क्या नतीजा होता है?"

शर्म के मारे बेचारी आन्ना फ्योदोरोव्ना का गला और कान जलने लगे। उसने आंखें नीची कर लीं और मुंह से एक शब्द भी न निकाल पाई।

"ऐसी औरत को सबके सामने चूम लिया जाता है," काउंट ने झुककर उसके कान में फुसफुसाकर कहा। "इजाजत हो तो मैं आपका हाथ चूम लूं," उसने बड़ी देर चुप रहने के बाद धीमी आवाज में कहा। उसे उस स्त्री की घबराहट को देखकर दया आने लगी थी।

"ओह, मगर इस वक्त तो नहीं," आन्ना फ्योदोरोव्ना ने गहरी सांस खींचकर कहा।

"फिर कब? मैं तो कल सुबह जा रहा हूं। और आप इसकी ऋणी हैं।"

"पर यहां पर मैं इसे कैसे अदा कर सकती हूं?" आन्ना फ्योदोरोव्ना ने मुस्कराकर कहा।

"तो मुझे इजाजत दीजिए कि मैं आपसे मिल सकूं और आपका हाथ चूमूं। मौका तो मैं खुद ढूंढ़ निकालूंगा।"

"आप कैसे ढूंढ़ निकालेंगे?"

"यह मेरा काम है। आपसे मिलने के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं। आपको तो कोई एतराज नहीं?"

"नहीं तो।"

एकोसाएज समाप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने फिर एक बार मज़ुर्का नाच नाचा। काउंट ने वह कौशल दिखाया—कभी उड़ता रूमाल पकड़ता, कभी एक घुटने के बल बैठता और बिल्कुल वारसा के लोगों की तरह दोनों एड़ियां टकराता ! जो वयोवृद्ध मेज़ों पर बैठे ताश खेल रहे थे वे भी वहां से उठकर नाच देखने लगे। घुड़सेना के अफ़सर ने भी अपनी हार मान ली। वह आदमी नृत्यकला में सर्वोत्कृष्ट माना जाता था। इसके बाद भोजन आरम्भ हुआ। लोगों ने अन्तिम बार 'ग्रोस फादेर' नाच नाचा, और मेहमान विदा होने लगे। सारा वक्त काउंट की आंखें उस नन्हीं विधवा पर जमी रहीं। जब उसने कहा था कि वह उसकी खातिर बर्फ़ में बने सूराख में कूद सकता है तो वह अतिशयोक्ति नहीं थी। वह प्यार हो या सनक, या केवल हठीलापन—इस समय उसकी सभी इच्छाएं एक ही बात पर केन्द्रित थीं कि वह उस स्त्री से मिले और उससे प्यार करे। जब उसने देखा कि आन्ना फ्योदोरोव्ना घर की मालकिन से विदा ले रही है, तो वह भागता हुआ नौकरों के कमरे में गया, वहां से, बिना ओवरकोट लिए, सीधा सड़क पर आ पहुंचा जहां मेहमानों की गाड़ियां खड़ी थीं।

"आन्ना फ्योदोरोव्ना जाइत्सेवा की गाड़ी लाओ!" उसने पुकारा। एक बड़ी-सी गाड़ी फाटक की तरफ़ बढ़ने लगी। उसमें चार आदमियों के बैठने की जगह थी, और लैम्प लगे थे। "ठहरो!" उसने कोचवान को पुकारा और घुटनों तक बर्फ़ में भागता हुआ उसकी ओर आया।

"क्या बात है ?" कोचवान ने पूछा।

"मुझे गाड़ी में बैठना है," काउंट ने जवाब दिया, और दरवाज़ा खोलकर साथ साथ भागने लगा। फिर उछलकर गाड़ी में चढ़ने की कोशिश की। "रुको भाई, मूर्ख ?"

"रुक जाओ बाबा !" कोचवान ने पोस्टिलियन को पुकारा और घोड़ों को लगाम खींची। "आप दूसरे आदमी की गाड़ी में क्यों बैठना चाहते हैं, हुज़ूर ? यह गाड़ी तो आन्ना फ्योदोरोव्ना की है।"

"चुप रहो, मूर्ख ! यह लो एक रूबल और नीचे उतरकर दरवाज़ा बन्द करो," काउन्ट ने कहा। कोचवान अपनी जगह से नहीं हिला। काउन्ट ने स्वयं ही पायदान ऊपर उठाया, खिड़की खोली, और किसी तरह दरवाज़ा बन्द कर लिया। गाड़ी में से बासी गन्ध आ रही

थी, जैसी जले बालों से आती है। ऐसी गन्ध अक्सर पुरानी घोड़ा-गाड़ियों में से आया करती है जिनके गद्दों पर सुनहरी गोट लगी हो। घंटों तक सीली बर्फ में रहने के कारण काउण्ट की टांगें सुन्न हो रही थीं। वह हन्टर से बूट और घुड़सवारी की बिर्जेस पहने था। सिर से पांव तक ठिठुर रहा था। कोचवान सीट पर बैठा बड़बड़ा रहा था, लगता जैसे अभी नीचे उतर आएगा। पर काउण्ट ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। न ही उसे किसी तरह की झेंप हुई। उसका चेहरा तमतमा रहा था और दिल धक-धक कर रहा था। ऐंठी हुई उंगलियों से उसने दोनों डोरी को पकड़ लिया और साथवाली खिड़की में से बाहर झांकने लगा। रोम-रोम प्रत्याशित घड़ी का इन्तजार कर रहा था। उसे ज्यादा देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। फाटक पर किसीने पुकारा, "मदाम ज़ारस्तेवा की गाड़ी लाओ!" कोचवान ने लगाम झटकी, और गाड़ी बड़ी-बड़ी कमानियों पर झूलती हुई आगे बढ़ी। गाड़ी की खिड़कियों में सामने घर की जगमगाती खिड़कियां झलकने लगीं।

'खबरदार, चोबदार को मेरे बारे में कुछ भी मत कहना, सुन रहे हो, बदमाश?" सामनेवाली छोटी-सी खिड़की में से काउण्ट ने सिर निकालकर कहा। गाड़ियों में यह खिड़की कोचवान से बात करने के लिए रखी जाती है। "अगर कुछ भी कहा तो तुम्हारी खबर लूंगा। और अगर मुंह बन्द रखा तो दस रूबल इनाम दूंगा।"

काउण्ट ने जोर से खिड़की बन्द कर दी। उसी वक्त गाड़ी भी झटके से खड़ी हो गई। काउण्ट कोने में दुबक गया, सांस रोक ली, और आंखें बन्द कर लीं। वह बहुत घबरा रहा था कि कहीं कोई बाधा न खड़ी हो जाए। दरवाज़ा खुला, एक-एक करके सीढ़ी के पटरे उतरे, एक स्त्री के गाउन की सरसराहट सुनाई दी। पहले जहां गाड़ी में बासी गंध व्याप रही थी, वहां चमेली की खुशबू का झोंका आया, नन्हे-नन्हे पैरों के सीढ़ियां चढ़ने की आवाज़ आई, और आन्ना फ्योदोरोव्ना अपने क्लोक के पल्ले से काउण्ट की टांगों को मानो सहलाते हुए, हांफती हुई बगल की सीट पर बैठ गई।

क्या उसने काउण्ट को देख लिया था? कौन कह सकता है। आन्ना फ्योदोरोव्ना स्वयं भी नहीं कहेगी, पर जब काउण्ट ने उसका बाजू पकड़कर धीमे से कहा, "मैं जरूर आपका हाथ चूमूंगा," तो वह चौंकी नहीं। उसने कोई जवाब भी नहीं दिया। केवल अपना हाथ उसके हाथ में

एकोसाएज़ समाप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने फिर एक बार मज़ुर्का नाच नाचा। काउंट ने वह कौशल दिखाया—कभी उड़ता रूमाल पकड़ता, कभी एक घुटने के बल बैठता और बिल्कुल वारसा के लोगों की तरह दोनों एड़ियां टकराता! जो वयोवृद्ध मेज़ों पर बैठे ताश खेल रहे थे वे भी वहां से उठकर नाच देखने लगे। घुड़सेना के अफ़सर ने भी अपनी हार मान ली। वह आदमी नृत्यकला में सर्वोत्कृष्ट माना जाता था। इसके बाद भोजन आरम्भ हुआ। लोगों ने अन्तिम बार 'ग्रोस फादेर' नाच नाचा, और मेहमान विदा होने लगे। सारा वक्त काउंट की आंखें उस नन्ही विधवा पर जमी रहीं। जब उसने कहा था कि वह उसकी खातिर बर्फ़ में बने सूराख में कूद सकता है तो यह अतिशयोक्ति नहीं थी। यह प्यार हो या सनक, या केवल हठीलापन—इस समय उसकी सभी इच्छाएं एक ही बात पर केन्द्रित थीं कि वह उस स्त्री से मिले और उससे प्यार करे। जब उसने देखा कि आन्ना फ्योदोरोव्ना घर की मालकिन से विदा ले रही है, तो वह भागता हुआ नौकरों के कमरे में गया, वहां से, बिना ओवरकोट लिए सीधा सड़क पर जा पहुंचा जहां मेहमानों की गाड़ियां खड़ी थीं।

"आन्ना फ्योदोरोव्ना जाइत्सेवा की गाड़ी लाओ!" उसने पुकारा। एक बड़ी-सी गाड़ी फाटक की तरफ़ बढ़ने लगी। उसमें चार आदमियों के बैठने की जगह थी, और लैम्प लगे थे। "रुको!" उसने कोचवान को पुकारा और घुटनों तक बर्फ़ में भागता हुआ उसकी ओर आया।

"क्या बात है?" कोचवान ने पूछा।

"मुझे गाड़ी में बैठना है," काउंट ने जवाब दिया, और दरवाज़ा खोलकर साथ साथ भागने लगा। फिर उछलकर गाड़ी में चढ़ने की कोशिश की। "रुको गधे, सूअर?"

"रुक जाओ वास्का!" कोचवान ने पोस्टिलियन को पुकारा और घोड़ों की लगाम खींची। "आप दूसरे आदमी की गाड़ी में क्यों बैठना चाहते हैं, हुज़ूर? यह गाड़ी तो आन्ना फ्योदोरोव्ना की है।"

"चुप रहो, सूअर! यह लो एक रूबल और नीचे उतरकर दरवाज़ा बन्द करो," काउण्ट ने कहा। कोचवान अपनी जगह से नहीं हिला। काउण्ट ने स्वयं सीढ़ी को ऊपर उठाया, खिड़की खोली, और किसी तरह दरवाज़ा बन्द कर लिया। गाड़ी में से बासी गन्ध आ रही

थी, जैसी जले बालों से आती है। ऐसी गन्ध अक्सर पुरानी घोड़ा-गाड़ियों में से आया करती है जिनके गद्दों पर सुनहरी गोट लगी हो। घुटनों तक गीली बर्फ में रहने के कारण काउण्ट की टांगें सुन्न हो रहीं थीं। वह हण्टर से बूट और घुड़सवारी की बिर्जस पहने था। सिर से पांव तक ठिठुर रहा था। कोचवान सीट पर बैठा बड़बड़ा रहा था, लगता जैसे अभी नीचे उतर आएगा। पर काउण्ट ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। न ही उसे किसी तरह की झेंप हुई। उसका चेहरा तमतमा रहा था और दिल धक-धक कर रहा था। ऐंठी हुई उंगलियों से उसने पोली डोरी को पकड़ लिया और सावधानी से खिड़की में से बाहर झांकने लगा। रोम-रोम प्रत्याशित घड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। उसे ज्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। फाटक पर किसीने पुकारा, "मदाम जाव्स्लेवा की गाड़ी लाओ!" कोचवान ने लगाम झटकी, और गाड़ी बड़ी-बड़ी कमानियों पर झूलती हुई आगे बढ़ी। गाड़ी की खिड़कियों के सामने घर की जगमगाती खिड़कियां झलकने लगी।

"खबरदार, चोबदार को मेरे बारे में कुछ भी मत कहना, सुन रहे हो, बदमाश?" सामनेवाली छोटी-सी खिड़की में से काउण्ट ने सिर निकालकर कहा। गाड़ियों में यह खिड़की कोचवान से बात करने के लिए रखी जाती है। "अगर कुछ भी कहा तो तुम्हारी खबर लूंगा। और अगर मुंह बन्द रखा तो दस रूबल इनाम दूंगा।"

काउण्ट ने ज़ोर से खिड़की बन्द कर दी। उसी वक्त गाड़ी भी झटके से खड़ी हो गई। काउण्ट कोने में दुबक गया, सांस रोक ली, और आंखें बन्द कर लीं। वह बहुत घबरा रहा था कि कहीं कोई बाधा न खड़ी हो जाए। दरवाज़ा खुला, एक-एक करके सीढ़ी के पटरे उतरे, एक स्त्री के गाउन की सरसराहट सुनाई दी। पहले जहां गाड़ी में बासी गन्ध व्याप रही थी, अब चमेली की खुशबू का झोंका आया, नन्हे-नन्हे पैरों के सीढ़ियां चढ़ने की आवाज़ आई, और आन्ना फ्योदोरोव्ना अपने *क्लोक के पल्ले से काउण्ट की टांगों को मानो सहलाते हुए, हांफती हुई* बगल की सीट पर बैठ गई।

क्या उसने काउण्ट को देख लिया था? कौन कह सकता है। आन्ना फ्योदोरोव्ना स्वयं भी नहीं कहेगी, पर जब काउण्ट ने उसकी बांह पकड़कर धीमे से कहा, "मैं ज़रूर आपका हाथ चूमूंगा," तो वह चौंकी नहीं। उसने कोई जवाब भी नहीं दिया। केवल अपना हाथ उसके हाथ में

बीजा छोड़ दिया। हाथ पर दस्ताना चढ़ा था। काउण्ट ने बाजू के ऊपर, जहां दस्ताना नहीं था, बार-बार चूमना शुरू कर दिया। गाड़ी चल दी।

"कुछ तो कहिए। आप नाराज तो नहीं हैं?"

आन्ना फ्योदोरोव्ना सकुचाकर कोने में दबक गई। फिर सहसा, बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के, उसकी आंखें छलछला आईं और सिर काउण्ट की छाती पर टिक गया।

६

घुड़सेना-कप्तान—जिसने चुनाव जीता था—और पार्टी के अन्य लोग, नये शराबघर में देर से पी रहे थे और जिप्सियों का गाना सुन रहे थे। घुड़सेना का अफसर भी उन्हीं में शामिल था। सहसा वहां काउण्ट भी पहुंच गया और आते ही पार्टी में शामिल हो गया। उसने नीली बनात का लबादा पहन रखा था जिसके नीचे रीछ की खाल का अस्तर लगा था। यह लबादा आन्ना फ्योदोरोव्ना के स्वर्गीय पति का था।

"आइए हुजूर आइए! हम तो आस लगाये बैठे थे, कि अब आप आएंगे!" एक जिप्सी ने काउण्ट का लबादा उतारते हुए कहा। वह भागकर दरवाजे के पास आ खड़ा हुआ था। काले बाल, ऐंठी आंखें, जब हंसता तो उसके सफेद दांत खिलखिलाने लगते। "नेपेशन के बाद आज आपके दर्शन हुए। ओला तो आपके बिछोह में मरी जा रही है।"

ओला भी भागी हुई काउण्ट से मिलने आई। जिप्सी लड़की, सांचे में ढली हुई—सांवला रंग, चेहरे पर लाली, चमकती, बड़ी-बड़ी, काली आंखें, ऊपर लम्बी-लम्बी, घनी पलकें जो लम्बा आंखों की छाया में विश्राम खोज रही हैं।

"अरे, काउंट आ गए! हमारी आंखों का तारा, हमारा नन्हा सा काउंट, हम, मैं नाखुशी से मरी जा रही हूं," वह बोली। उसका चेहरा खिल उठा था।

बूढ़ा भी मिलने के लिए भागता आया। वह भी दिखाना चाहता था कि काउंट के साथ उसका बड़ा मेल है। बूढ़ी औरतें, औरतें, युवतियां सभी दौड़-दौड़कर आने लगीं और काउंट को घेरकर खड़ी हो गईं। हरेक का उससे नाता-सम्बन्धी जानकारी थी, क्योंकि वह उनके बच्चों

ा धर्मपिता बना हुआ था। बुढ़ेक ने उसके साथ सलीब अदला-बदली किए थे।

काउंट ने सभी जिप्सी युवतियों के होंठ चूमे। बूढ़ी जिप्सी स्त्रियों और पुरुषों ने उसे कन्धे पर तथा हाथ पर चुम्बन किया। कुलीन पुरुष भी इसे मिलकर बेहद खुश हुए, विशेषकर इसलिए कि नाच-रंग का जोश, अपने शिखर पर पहुंचने के बाद अब ठण्डा पड़ने लगा था। हरेक आदमी थका-थका-सा महसूस कर रहा था, सोचता था कि बस, काफी हो गया, तृप्ति हो गई। शराब अब नसों को उत्तेजित नहीं कर पा रही थी, बल्कि मेदे पर बोझ बनने लगी थी। मेहमान जितना हंसी-मज़ाक कर सकते थे, कर चुके थे और अब एक-दूसरे से ऊब गए थे। सब गीत गाए जा चुके थे। अब उनकी धुनें इनके मस्तिष्क में खलबली और शोर मचा रही थीं। अब भी नये-नये और दिलेराना करतब दिखाए जा रहे थे, पर किसीका भी मन उनमें नहीं लग रहा था। पुलिस-कप्तान बड़े अटपटे ढंग से फर्श पर एक बूढ़ी औरत के पांवों के पास बैठा था।

"शैम्पेन!" वह पांव पटककर चिल्लाया, "काउंट आ गए हैं! शैम्पेन लाओ! मैं एक पूरा हौज़ शैम्पेन से भर दूंगा और उसमें गुस्ल करूंगा। मेरे रईस मेहरबानो! आज मैं ऐसे बड़े-बड़े लोगों की महफ़िल में हूं! मैं कितना खुशकिस्मत आदमी हूं! ल्योशा, गाओ, 'सूनी सड़क' वाला गीत गाओ!"

घुड़सेना का अफसर भी मस्त था, पर उसकी मस्ती का रंग कुछ दूसरा ही था। वह एक कोच के कोने में, ऊंचे कद की एक खूबसूरत जिप्सी लड़की की बगल में बैठा था। वह बार-बार आखें मिचकाता, और शराब के धुंधलके को दूर करने के लिए सिर झटकता एक ही वाक्य दोहराए जा रहा था—"स्त्युशा, मेरे साथ भाग चलो!" स्त्युशा सुन रही थी, और मुस्करा रही थी, मानो उसकी बात उसे बड़ी मनोरंजक और साथ ही साथ, कुछ-कुछ करुणाजनक लग रही हो। किसी-किसी वक्त वह आंख उठाकर ऐंची आंखोंवाले एक आदमी की ओर देखती, जो उसके सामने एक कुर्सी के पीछे खड़ा था। वह उसका पति, सारका था। इस प्रेमालाप के जवाब में उसने झुककर घुड़सेना के अफसर से धीमी-सी आवाज़ में कहा, "मुझे कुछ रिबन तो ले दो, और एक इत्र की शीशी, पर किसीको बताना मत।"

"हुर्रा!" काउंट के अन्दर आने पर घुड़सेना का अफ़सर चिल्लाया।

सुन्दर युवक इधर से उधर चहलकदमी कर रहा था। उसकी चाल में आत्माभिमान-सी दृढ़ता थी, और चेहरे पर चिन्ता की झलक। वह 'हंगर गाने में बगावत' नामक संगीत-रचना में से कोई धुन गुनगुना रहा था।

एक वृद्ध बुर्जुआ जाति को ये कुलीन मौज बड़ी मिन्नत-समाजत करके, जिप्सियों का लालच देकर ले आए थे। उसने कहा था कि आप न गए तो यह फिर फीकी रहेगी, आप नहीं जाएंगे तो हम भी नहीं जाएंगे। यहां पहुंचकर वह बुजुर्ग एक सोफे पर लेट गया था और अभी तक वहीं पड़ा था। किसीको रत्ती-भर भी उसकी परवाह न थी। एक सरकारी कर्मचारी अपना फ्रॉक-कोट उतारकर, एक मेज के ऊपर टांगें चढ़ाए बैठा था और बार-बार अपने बालों को बिगाड़ रहा था, यह दिखाने के लिए कि उससे बड़ा लफंगा कोई नहीं है। काउंट के अन्दर आने पर, इसने कमीज का कॉलर खोल दिया और मेज पर और भी फैलकर बैठ गया। किस्सा यह कि काउंट के आ जाने से पार्टी में फिर जान आ गई।

जिप्सी लड़कियां पहले कमरे में इधर-उधर घूम रही थीं, अब चक्कर बनाकर बैठ गईं। काउंट ने स्तेशा को घुटनों पर बिठा लिया और शैम्पेन का आर्डर दे दिया। स्तेशा जिप्सी-मण्डली में अकेली गानी थी।

इल्यूश्का ने गिटार उठाई और सामने बैठ गया, और स्तेशा को 'ल्यास्का' गाने का इशारा किया। 'ल्यास्का' जिप्सियों की एक संगीत-रचना है जिसमें बहुत-से गाने एक विशेष क्रम से गाए जाते हैं। गानों के बोल हैं : 'जब कभी सड़क पर चलता हूं,' 'ऐ हुस्नारो !' 'सुनो और समझो' आदि। स्तेशा खूब गाती थी। उसकी भरपूर, गहरी आवाज में बड़ी लोच थी। लगता, न जाने किन गहराइयों से आवाज निकल रही है। होंठों पर लुभावनी मुस्कान, चंचल, कटीली नजरें, गाने के साथ-साथ वह फर्श पर नन्हे-नन्हे पैरों से थाप देती जाती। हर बार, सहगान से पहले, हल्की-हल्की, थरथरी चीखें मारती। सुननेवालों के दिल के तार बज उठते। बेसुध होकर गाती थी। इल्यूश्का गिटार पर संगत कर रहा था। गीत के साथ उसका तन-मन एकरस हो रहा था। उसकी पीठ हिल रही थी, पांव फर्श पर थाप दे रहे थे, होंठों पर मुस्कान खेल रही थी। गीत की लय के साथ-साथ उसका सिर झूम रहा था। आंखें स्तेशा के चेहरे पर गड़ी थीं। उसकी एकाग्रता और तन्मयता को देखकर [illegible] बार उसका गीत सुन रहा हो। गीत के अन्तिम स्वर

शान्त हुए। इल्यूस्का सहसा तनकर खड़ा हो गया, मानो दुनिया में वह अपने बराबर किसीको न समझता हो। जान-बूझकर, बड़े गर्व से उसने गिटार को घुटने पर झटका। गिटार घूमती हुई हवा में उछली। फिर वह स्वयं एड़ियों से फर्श पर टंकार देने लगा, बाल झटककर पीछे को हटाए और भौंह चढ़ाए मेहमान-मंडली की ओर देखा। इसके बाद वह नाचने लगा। उसका अंग-अंग थिरक उठा। बीस आदमी, ज़ोरदार ऊंची आवाज़ में, एक साथ गाने लगे। लगता जैसे सभी एक-दूसरे से होड़ ले रहे हों और अदाकारी में अपनी मौलिकता तथा विशेषता दिखाना चाहते हों। बूढ़ी स्त्रियां अपनी जगह पर ही बैठी-बैठी, रूमाल हिला-हिलाकर हंसने और हल्के-हल्के थिरकने लगीं, और गीत की लय के साथ-साथ चिल्ला-चिल्लाकर एक-दूसरी से होड़ लेने लगीं। मर्द उठकर अपनी कुर्सियों के पीछे खड़े हो गए और गहरी, गंभीर आवाज़ में गाने लगे। उनके सिर एक ओर को झुके थे और गलों की नसें फूल रही थीं।

जब भी स्तेशा का स्वर ऊंचा उठता, इल्यूस्का अपनी गिटार को उसके चेहरे के नज़दीक ले आता, मानो उसकी मदद करना चाहता हो। सुन्दर युवक पागलों की तरह चिल्लाने लगता कि सुनो, अब स्तेशा पंचम स्वर में गाएगी।

जब नाच की धुन बजने लगी तो दुन्याशा सामने आ गई, और कंधे और उरोज हिलाती हुई काउंट के सामने नाचने और चक्कर लगाने लगी। फिर जैसे तैरती हुई कमरे के ऐन बीचोबीच जा पहुंची। इसपर तुर्बीन उछलकर खड़ा हो गया, जैकेट उतार डाली—अब वह केवल एक लाल कमीज़ पहने था—और उसके साथ मिलकर नाचने लगा। उसने टांगों के वे करतब दिखाए कि जिप्सी एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्कराने लगे और उसके नृत्य-कौशल पर 'वाह-वाह' करने लगे।

पुलिस-कप्तान एक तुर्क की तरह उकड़ूं बैठा था। अपनी छाती पर घूंसा मारते हुए बोला, "वाह वा!" और काउण्ट की टांगों के साथ चिपटकर अपना भेद बताने लगा कि मैं जब यहां आया था तो मेरे पास पूरे दो हज़ार रूबल थे और उनमें से अब केवल पांच सौ बच रहे हैं, मगर कोई परवाह नहीं, मैं इन पैसों के साथ जो चाहूंगा करूंगा, बस सिर्फ तुम्हारी इजाज़त चाहिए। वृद्ध कुटुम्बपति उठ बैठा और घर जाने लगा, मगर उसे किसीने नहीं जाने दिया। सुन्दर युवक ने एक जिप्सी

लड़की को बड़ी मिन्नत-समाजत के बाद अपने साथ नाचने के लिए राज़ी कर लिया। घुड़सेना का अफसर, यह दिखाने के लिए कि वह काउंट का गहरा मित्र है, अपने कोने में से निकल आया और अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं।

"वाह दोस्त!" वह बोला, "तुम आखिर हमें छोड़कर चले क्यों गए थे?" काउण्ट ने कोई उत्तर न दिया। ज़ाहिर था कि वह कुछ और ही सोच रहा था। "तुम कहां चले गए थे? तुम बड़े दुष्ट हो! मैं जानता हूं तुम कहां गए थे।"

किसी कारण तुर्बीन को यह घनिष्ठता अच्छी नहीं लगी। बिना मुस्कराए और बिना कुछ कहे उसने घुड़सेना के अफसर को घृणा से घूरकर देखा और फिर एक साथ ही इतनी अश्लील और भद्दी गालियां देने लगा कि वह सकते में आ गया और समझ नहीं पाया कि उसे मज़ाक समझे या क्या। आखिर वह खिसियाकर मुस्कराता हुआ वापस अपनी जिप्सी लड़की के पास लौट गया और उसे आश्वासन देने लगा कि मैं ज़रूर ईस्टर के बाद तुम्हारे साथ ब्याह कर लूंगा। सारी मंडली ने मिलकर एक और गीत गाया, इसके बाद एक और। फिर नाच शुरू हुआ। एक-दूसरे के सम्मान में गीत गाए गए। सभी यह समझ रहे थे कि हम बहुत ही आनन्द लूट रहे हैं। शैम्पेन की नदी बह रही थी। काउंट ने भी बहुत शराब पी। उसकी आंखों में नमी आ गई मगर वह लड़खड़ाया नहीं, बल्कि पहले से भी बढ़िया नाचने लगा। अब भी किसी बात पर वह स्थिर आवाज़ में। जब जिप्सी गहगान गाने लगे तो वह भी उनमें शामिल हो गया, और जब स्तेशा 'प्रेम-पक्षों की कहानी' नामक गीत गाने लगी तो काउण्ट भी सुर में सुर मिलाकर साथ-साथ गाने लगा। गीत अभी चल ही रहा था कि शराबघर का मालिक आया और मेहमानों से घर जाने का आग्रह करने लगा। सुबह [illegible] तीन बज चाहते थे।

काउण्ट ने उसकी गरदन पीछे से पकड़ ली और उसे पालथी मार-कर नाचने को कहा। उसने नाचने से इन्कार कर दिया। काउण्ट ने शैम्पेन की एक बोतल उठाई, शराबघर के मालिक को सिर के बल खड़ा कर दिया और दूसरे लोगों से कहा कि उसे पकड़े रखें। फिर सारी की सारी बोतल उसपर उंडेल दी। लोग सारा वक्त हंसते रहे।

पौ फट रही थी। सिवाय काउण्ट के, सभी लोगों के चेहरे ज़र्द और

पड़े हुए थे।

"मास्को जाने का वक्त हो गया है," उसने सहसा कहा और उठ खड़ा हुआ, "मेरे साथ होटल तक चलिए, साहिबान, और मुझे विदा कीजिए, और आइए, वहां एक साथ चाय पिएंगे।"

सभी तैयार हो गए, सिवाय उस वृद्ध कुटुम्बपति के जो अब सो रहा था। उसे वहीं छोड़ दिया गया। सबके सब दरवाजे पर खड़ी तीन बर्फगाड़ियों में जैसे-तैसे घुसकर बैठ गए, और होटल के लिए रवाना हो गए।

७

"घोड़े जोत दो!" ब्लिस्सियो तथा अन्य मेहमानों के साथ होटल के हॉल में कदम रखते हुए काउंट ने चिल्लाकर कहा। "साशा!—जिप्सी साशा नहीं, मेरा साशा—घोड़ों के कारिन्दे को जाकर कह दो कि अगर उसने खराब घोड़े दिए तो मैं उसकी खाल उधेड़ दूंगा। और हमारे लिए चाय लाओ! जवल्शेव्स्की, तुम चाय का इन्तज़ाम करो, और मैं चलकर देखता हूं कि इल्यीन का काम कैसे चल रहा है।" यह कहकर तुर्बीन बाहर बरामदे में निकल आया और उल्हन के कमरे की ओर चल दिया।

इल्यीन अभी-अभी खेलकर हटा था। अपनी सारी रकम, आखिरी कोपेक तक हार चुका था और अब सोफे पर लेटा था। सोफे में घोड़े के बाल भरे थे और वह जगह-जगह से फटा हुआ था। इल्यीन एक-एक करके घोड़े के बाल सोफे में से खींचकर निकालता, उन्हें मुंह में डालता, दांतों से काटता और थूक देता। एक मेज पर, जहां ताश के पत्ते बिखरे पड़े थे, दो मोमबत्तियां जल रही थीं। एक तो लगभग नीचे कागज तक जल चुकी थी। उनकी क्षीण रोशनी सुबह के उजाले से संघर्ष कर रही थी जो खिड़की में से आ रहा था। उस समय उल्हन के मन में कोई भी विचार न था। उसकी सभी मानसिक शक्तियां जुए की उत्तेजना के कारण धूमिल हो रही थीं। उसे पछतावा तक न हो रहा था। एकबारगी उसने यह जरूर सोचने की कोशिश की थी कि अब मैं क्या करूंगा। एक कोपेक भी मेरे पास नहीं है, मैं इस जगह से कैसे जाऊंगा, फौज के पन्द्रह हजार रूबल कैसे लौटाऊंगा, फौज का कमाण्डर क्या कहेगा, मेरी मां क्या कहेगी, मेरे साथी क्या कहेंगे—और सहसा अपने प्रति

घृणा और डर ने उसे जकड़ लिया। मन में से इन बातों को हटाने के लिए वह सोफे पर से उठ खड़ा हुआ और कमरे में टहलने लगा। टहलते हुए वह बड़े ध्यान से फर्श में लगी लकड़ी के जोड़ों पर कदम रखता। मन ही मन एक बार फिर उसे वे सभी दांव एक-एक करके याद आने लगे जो उसने खेले थे। छोटी से छोटी तफसील याद आई। उसे याद आया कि वह एक बार बिलकुल जीतने लगा था—उसने एक नहला उठाया था और हुकुम के बादशाह पर दो हजार रूबल लगाए थे : दाईं तरफ—बेगम, बाईं तरफ—इक्का, दाईं तरफ—ईंट का बादशाह, और—वह सब कुछ हार गया था। अगर छक्का दाईं तरफ होता और ईंट का बादशाह बाईं तरफ तो वह अपनी सारी की सारी रकम जीत लेता और इस रकम पर दाव लगाकर पन्द्रह हजार रूबल ऊपर से और साफ जीत लेता। तब वह अपनी फौज के कमाण्डर से एक सवारी घोड़ा खरीद लेता, और एक फिटन गाड़ी और घोड़ों की जोड़ी अलग। और क्या ? उफ ! कमाल हो जाता, सचमुच कमाल हो जाता !

वह फिर एक बार सोफे पर लेट गया और घोड़े के बाल चबाने लगा।

'सात नम्बर कमरे में गा क्यों रहे हैं ?' उसने सोचा। 'जरूर तुर्बीन कोई दावत दे रहा होगा। शायद मुझे भी उनके साथ शामिल होना चाहिए और खूब पीनी चाहिए।"

ऐन उसी वक्त काउंट कमरे में दाखिल हुआ।

"कहो, सब पैसे साफ हो गए कि नहीं ?" उसने पूछा।

'मैं सोने का बहाना करूंगा,' इल्यीन ने सोचा, 'नहीं तो मुझे बातें करनी पड़ेंगी, और मैं बहुत थका हुआ हूं।'

पर तुर्बीन उसके पास चला आया और उसके बाल सहलाने लगा।

"तो सब सफाया हो गया, क्यों ? सब कुछ हार गए ? क्या बात है ?"

इल्यीन ने कोई जवाब न दिया।

काउंट ने उसकी आस्तीन खींची।

"हां, मैं हार गया हूं। तुम्हें इससे क्या ?" इल्यीन ने शिथिल-सी आवाज में कहा जिसमें क्रोध और उपेक्षा का भाव झलकता था। उसने करवट तक नहीं बदली।

"क्या सब कुछ ?"

"हां, सब कुछ। तो क्या हुआ ? तुम्हें इससे क्या ?"

"सुनो, मुझे अपना दोस्त समझकर सच-सच बता दो," काउं
कहा। शराब के नशे में उसकी कोमल भावनाएं जाग उठी थीं। वह
भी युवक के बाल सहलाए जा रहा था। "मैं तुमसे सचमुच प्यार क
गया हूं। मुझे सच-सच बताओ, अगर तुम फौज का पैसा हार बैठे
तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा। मुझे अभी बतला दो, यह न हो कि मो
हाथ से निकल जाए। क्या वह फौज का पैसा था ?"

इल्यीन सोफे पर से उछलकर खड़ा हो गया।

"अगर तुम सचमुच चाहते हो कि मैं तुम्हें बता दूं तो मेरे
इस तरह बातें मत करो जैसे कि···जैसे कि···तुम मेरे साथ बात
करो···मेरे सामने अब एक ही रास्ता रह गया है कि अपने को गो
का निशाना बना लूं," गहरी निराश आवाज़ में उसने कहा, और द
हाथों से सिर पकड़कर बैठ गया और फूट-फूटकर रोने लगा, हाल
घड़ी-भर पहले वह एक सवारी घोड़ा खरीदने के स्वप्न देख रहा था

"वाह, तुम तो लड़कियों से भी गए-बीते हो। हम सब
यह बीत चुकी है। अभी भी कुछ न कुछ हो सकता है, मामला सु
सकता है। तुम यहां मेरा इन्तजार करो।"

काउंट बाहर चला गया।

"ज़मींदार लुख्नोव किस कमरे में ठहरा हुआ है ?" उसने प
से पूछा।

प्यादा उसे कमरा दिखाने के लिए साथ हो लिया। लुख्नो
नौकर ने बार-बार यह कहकर रोकने की कोशिश की कि मालिक अ
अभी अन्दर गए हैं और अभी कपड़े उतार रहे होंगे। लेकिन क
सीधा कमरे में घुस गया। लुख्नोव ड्रेसिंग गाउन पहने मेज के स
बैठा नोट गिन रहा था। नोटों के पुलिन्दे सामने पड़े थे। मेज
राईन शराब की एक बोतल भी थी। यह शराब उसे सबसे अ
पसन्द थी। इतने पैसे जीतने के बाद आज उसने अपने को थोड़
ऐश करने की इजाज़त दे रखी थी। लुख्नोव ने चश्मे से काउं
तरफ तीखी और उपेक्षापूर्ण नज़र से देखा मानो वह उसे जानता ह
हो।

"लगता है आपने मुझे पहचाना नहीं," काउंट ने बड़ी दृढ़
सीधे मेज के पास जाकर कहा।

[illegible] के [illegible] को [illegible] किया और बोला :

"[illegible] क्या [illegible] कर सकता हूँ ?"

"[illegible] बेचता [illegible] हूँ," [illegible] पर बैठे हुए [illegible]

[illegible]

[illegible] हूँ [illegible] के साथ [illegible], [illegible],

[illegible] हूँ और [illegible] हूँ। [illegible] बात कोई

[illegible] है।"

"[illegible] बेचता [illegible] हूँ।"

[illegible] कोई [illegible] नहीं। [illegible]

[illegible] [illegible]।

[illegible]

[illegible] किया [illegible] को [illegible]

[illegible]।

[illegible] नहीं [illegible]

[illegible]

इस बीच थोड़ा-सा विराम आया जब काउंट का चेहरा अधिकाधिक सफेद पड़ता गया। सहसा सुसनोव के सिर पर एक इतने ज़ोर का घूंसा पड़ा कि वह सुन्न हो गया और सोफे पर गिर पड़ा। उसने नोटों का पुलिन्दा पकड़ने की कोशिश की, फिर बड़े ज़ोर से चिल्ला उठा। उम्मीद नहीं हो सकती थी कि उस जैसा शान्त और गम्भीर आदमी इतना ऊंचा चिल्लाने लगेगा। तुर्बीन ने पैसे मेज़ पर से उठा लिए, नौकर को धक्का देकर रास्ते में से हटाया, जो अपने मालिक की चीख सुनकर भागा हुआ अन्दर आया था, और दरवाज़े की ओर लपका।

"अगर आप द्वन्द्वयुद्ध लड़ना चाहते हैं तो मुझे मंजूर है। मैं और आधे घण्टे तक अपने कमरे में रहूंगा," काउंट ने दरवाज़े पर पहुंचकर कहा।

"चोर ! दगाबाज़ !" कमरे के अन्दर से आवाज़ आई, "मैं तुम्हें कैद करवा दूंगा !"

इल्यीन अब भी निराश, सोफे पर लेटा हुआ था। रह-रहकर उसका गला रुंध जाता। उसे काउंट के वचन पर विश्वास नहीं था कि वह मामले को ठीक कर देगा। पहले उसके मन पर एक धुंधलका-सा छाया हुआ था और तरह-तरह के विचार चक्कर काट रहे थे। परन्तु काउंट के सहानुभूतिपूर्ण शब्दों ने उसके दिल पर गहरा असर किया था और उसे अपनी दु:स्थिति का बोध होने लगा था। यह विचार भी उसके मन में घूम रहा था कि उसका यौवन जिससे लोगों को इतनी आशाएं थीं, उसका आत्मसम्मान, उसके साथियों का उसके प्रति आदर-भाव, प्रेम और मैत्री के स्वप्न—सब सदा के लिए धूल में मिल गए हैं। आंसुओं का सोता अब सूखता जा रहा था और उसके स्थान पर गहरी निराशा छा रही थी, और आत्महत्या के विचार, अधिकाधिक दृढ़ता के साथ उसके मन में उठ रहे थे। आत्महत्या के प्रति घृणा और डर का भाव अब नहीं उठता था। ऐन इसी वक्त उसे काउंट के पांवों की आहट सुनाई दी।

काउंट के चेहरे पर अब भी क्रोध के चिह्न थे, उसके हाथ अब भी कुछ-कुछ कांप रहे थे। पर उसकी आंखें प्रसन्नता तथा आत्मसन्तोष से चमक रही थीं।

"लो, मैं सब जीत लाया हूं !" उसने कहा और मेज़ पर नोटों का पुलिन्दा फेंक दिया, "इन्हें गिनकर देख लो कि रकम पूरी है या नहीं।

और जल्दी से हॉल में पहुंचो, मैं जा रहा हूं," वह बोला, और बिना यह दिखाए कि उसने उन्हन के चेहरे पर कृतज्ञता और खुशी का भाव देख लिया है, वह कोई जिप्सी धुन गुनगुनाता हुआ कमरे में से बाहर निकल गया।

८

साशा, कमरबन्द कसे, अन्दर आया और सूचना दी कि घोड़े तैयार हैं। फिर काउण्ट से कहने लगा कि मेहरबानी करके अपना बड़ा ओवरकोट वापस मंगवा लीजिए। उसकी कीमत तीन सौ रूबल से कम नहीं। फर का तो उसपर कॉलर लगा है। और उस बदमाश को उसका सीधा चोगा वापस भेजें। कैसा मनहूस चोगा उसने मार्शल के घर आपको दिया है। पर तुर्बीन ने जवाब दिया कि ओवरकोट लेने की कोई जरूरत नहीं, और अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिए चला गया।

घुड़सेना का अफसर जिप्सी लड़की के पास चुपचाप बैठा बराबर हिचकियां ले रहा था। पुलिस-कप्तान ने वोद्का का आर्डर दिया और सब लोगों को निमन्त्रण दिया कि उसके घर चलकर नाश्ता करें। कहने लगा, "मैं वादा करता हूं कि मेरी पत्नी जरूर जिप्सियों के साथ नाचेगी।" सुन्दर युवक बड़ी संजीदगी से इल्यूश्का को समझाने की कोशिश कर रहा था कि पियानो ज्यादा जानदार साज है, और गिटार पर 'ब' फ्लैट नहीं बज सकती। सरकारी कर्मचारी एक कोने में बैठा चाय पी रहा था, और चूंकि अब दिन चढ़ आया था, अपने भ्रष्टाचार पर लज्जित जान पड़ता था। जिप्सी अपनी भाषा में एक-दूसरे के साथ झगड़ रहे थे, और जिद कर रहे थे कि रईसों के सम्मान में एक गीत और गाएं, मगर स्तेशा आपत्ति कर रही थी कि 'बड़ोराय' (मतलब 'काउण्ट' या 'राजकुमार,' ठीक-ठीक अर्थ में 'बड़ा रईस') नाराज होंगे। किस्सा यह कि नाचरंग की टिमटिमाती लौ भी बुझने को थी।

"बस, आखिरी बार विदाई का गीत और सब अपने-अपने घर जाओ," सफरी पोशाक पहने काउण्ट ने कमरे में कदम रखते हुए कहा। वह पहले से भी ज्यादा तरोताज़ा, खूबसूरत और खुश लग रहा था।

जिप्सी आखिरी गीत गाने के लिए वृत्त बनाकर खड़े हो गए। तभी बक्त हसीन हाथों में नोटों का पुलिन्दा पकड़े अन्दर आया और

काउण्ट की एक तरफ ले गया।

"मेरे पास फौज के सिर्फ पन्द्रह हजार रूबल थे और तुमने मुझे सोलह हजार तीन सौ रूबल दे दिए हैं," उसने कहा, "यह बाकी रुपया तुम्हारा है।"

"खूब ! तो लाओ दे दो !"

इल्यीन ने पैसे दे दिए। फिर शर्माकर काउण्ट की तरफ देखा और कुछ कहने को हुआ, मगर मुंह से बोल नहीं निकले और वह खड़ा शर्माता रहा, यहां तक कि उसकी आंखों में आंसू आ गए, और काउण्ट का हाथ अपने हाथ में लेकर जोर से दबाने लगा।

"अब तुम जाओ ! और इल्यूश्का, सुनो ! यह लो कुछ पैसे। तुम लोग गाते हुए मुझे शहर के फाटक तक छोड़ आओ," और उसने एक हजार तीन सौ रूबल जो इल्यीन ने उसे दिए थे, जिप्सी की गिटार पर फेंक दिए। मगर एक सौ रूबल जो उसने पिछली रात घुड़सेना के अफसर से उधार लिए थे, उन्हें लौटाने का ख्याल उसे नहीं आया।

सुबह के दस बज रहे थे। सूरज मकानों की छतों के ऊपर चढ़ आया था, सड़कों पर लोगों की चहल-पहल शुरू हो गई थी। दुकानदारों ने कब से दुकानों के दरवाजे खोल दिए थे। कुलीन लोग और सरकारी कर्मचारी गाड़ियों में इधर-उधर आ-जा रहे थे। स्त्रियां एक दुकान से दूसरी दुकान पर चहलकदमी करती हुई जा रही थीं। जिप्सियों की टोली, पुलिस-कप्तान, घुड़सेना का अफसर, सुन्दर युवक, इल्यीन और रीछ की खाल के अस्तरवाला नीला चोगा पहने काउंट बाहर होटल की सीढ़ियों पर आकर खड़े हो गए। धूप खिल रही थी और बर्फ पिघल रही थी। तीन बर्फगाड़ियां होटल के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गईं। एक-एक के साथ तीन-तीन घोड़े जुते थे और घोड़ों की पूंछें दोहरी करके बांध दी गई थीं। सारी की सारी पार्टी हंसी-मज़ाक करती हुई उनपर सवार हो गई। पहली गाड़ी में काउंट, इल्यीन, स्तेशा, इल्यूश्का और काउंट का नौकर साशा बैठ गए। काउंट का कुत्ता ब्लूहर बेहद उत्तेजित था। वह दुम हिलाता हुआ आया और बीचवाले घोड़े पर भूकने लगा। जिप्सी और अन्य लोग दूसरी गाड़ियों में बैठ गए। ज्यों ही वे होटल से निकले गाड़ियां एक-दूसरी के पीछे आ गईं, और जिप्सी एक स्वर में गाने लगे।

गीतों की गूंज और छोटी-छोटी घण्टियों की टुनटुन के बीच वह

हैं और मर गए हैं। उन गए दिनों का बहुत कुछ बुरा और बहुत कुछ अच्छा खत्म हो गया है, कई नई अच्छी बातें पनपी हैं और इनसे भी अधिक कई नई बुराइयां पैदा हो गई हैं।

काउण्ट फ्योदोरोव्ना तुर्बीन को मरे कितने ही बरस बीत चुके हैं। वह एक द्वन्द्वयुद्ध में एक परदेसी के हाथों मारा गया था। इसने उसने सड़क पर चाबुक की मूठ से पीटा था। काउण्ट तुर्बीन का बेटा बिल्कुल अपने बाप की तस्वीर है। वह तेईस वर्ष का खूबसूरत जवान है और घुड़सेना में अफसर है। पर स्वभाव में छोटा तुर्बीन अपने बाप से बिल्कुल भिन्न है। उसमें पिछली पीढ़ी के लोगों के विशेष गुण, उनका अल्हड़पन, उनकी मस्ती, और साफ-साफ कहें तो उनकी विलासिता लेशमात्र भी नहीं है। कुशाग्रबुद्धि है, सुशिक्षित है, प्रतिभासम्पन्न है। इन गुणों के अलावा उसमें कुछेक विशिष्ट गुण हैं—शिष्टता और आराम की जिन्दगी से मोह, लोगों और परिस्थितियों को व्यावहारिक स्तर पर समझना और जीवन के प्रति एक सतर्क विवेकशील दृष्टिकोण। नौकरी में छोटे काउण्ट ने बड़ी जल्दी तरक्की की है। तेईस साल की ही उम्र में वह लेफ्टिनेण्ट बन गया है। जिन दिनों फौजी मुहिम शुरू हुई उसने निश्चय कर लिया कि मोर्चे पर जाने से उसे फौज में तरक्की जल्दी मिलेगी। इसलिए उसने अपना तबादला हुस्सारों की फौज में करवा लिया। यहां वह कप्तान के पद पर काम करता रहा। फिर जल्दी ही उसे एक सैनिक टुकड़ी की कमान दी गई।

सन् १८४८ के मई महीने में हुस्सारों की स० फौज क० के इलाके में से गुजर रही थी। छोटे काउण्ट तुर्बीन की सैनिक टुकड़ी को मोरोज़ोव्का गांव में रात बितानी थी। अन्ना फ्योदोरोव्ना इस गांव की मालकिन थी। अन्ना फ्योदोरोव्ना अब भी जीवित थी, और उम्र में काफी ढल चुकी थी, यहां तक कि उसने अपने को अब जवान समझना छोड़ दिया था। इस तरह का भाव स्त्रियों को सचमुच ही बड़ी देर से प्राप्त होता है। शरीर मोटा हो गया था। कहते हैं, मोटी होने से स्त्री उम्र में और भी छोटी लगने लगती है। पर उसके कोमल और गोरे गालों पर गहरी झुर्रियों का जाल बिछने लगा था। अब वह गाड़ी में बैठकर कभी भी शहर को नहीं जाती थी। सच तो यह है कि उसके लिए गाड़ी पर चढ़ना भी मुश्किल हो गया था। पर अब भी वह पहले जैसी हंसमुख, दयालु और खुशमिजाज थी। अब चेहरे की सुघड़ाई उसकी

मूढ़ता को छिपा नहीं सकती थी। उसकी बेटी लीज़ा और भाई उसके साथ रहते थे। उसके भाई से हम परिचित हैं। यह वही घुड़सेना का अफ़सर था। बेटी तेईस वर्ष की हो चली थी और ठेठ रूसी देहाती सुन्दरी थी। भाई, अपनी आराम-तलब तबीयत के कारण सारी विरासत लुटा चुका था और अब बुढ़ापे में बहिन के दरवाज़े पर बैठा था। सिर के बाल बिल्कुल सफ़ेद हो चुके थे, ऊपर का होंठ अन्दर की ओर मुड़ गया था। पर मूछों को उसने वस्मा लगाकर काला कर रखा था। झुरिया न केवल उसके गालों और माथे पर ही फैली थीं, बल्कि उसकी नाक और गले पर भी अपना जाल बिछाए थीं। पीठ झुक गई थी, पर फिर भी टेढ़ी और शिथिल टांगों में पहले के घुड़सेना के अफ़सर की कुछ-कुछ लोच बाकी थी।

जिस दिन का हम ज़िक्र कर रहे हैं, उस रोज़ आन्ना फ्योदोरोव्ना परिवार और नौकर-चाकरों के साथ अपने पुराने घर की छोटी-सी बैठक में बैठी थी। घर के बरामदे का दरवाज़ा और खिड़कियां पुराने ढंग के बाग में खुलती थीं। बाग का आकार सितारे की शक्ल का था और उसमें लाइम के पेड़ लगे थे। आन्ना फ्योदोरोव्ना के बाल पक गए थे। वह हल्के बैंगनी रंग की रुयली जाकेट पहने, सोफ़े पर बैठी महोगनी लकड़ी की मेज़ पर ताश बिछा रही थी। बूढ़ा भाई, नीला कोट और साफ़ सफ़ेद पतलून पहने, हाथ में सफ़ेद धागा और सलाइयां पकड़े, खिड़की के पास बैठा कोई जाली-सी बुन रहा था। यह हुनर उसे उसकी भांजी ने सिखा दिया था। अब इस काम में उसकी दिलचस्पी भी खूब बढ़ गई थी। उसमें कोई उपयोगी काम करने की योग्यता नहीं थी। बीनाई कमज़ोर पड़ गई थी, इस कारण वह अखबार तक नहीं पढ़ सकता था, हालांकि अखबार पढ़ना उसे बहुत अच्छा लगता था। पिमोच्का नाम की एक छोटी-सी लड़की उसके पास बैठी थी और लीज़ा की देख-रेख में अपना सबक पढ़ रही थी। इस लड़की को आन्ना फ्योदोरोव्ना ने गोद ले रखा था। लीज़ा स्वयं मामाजी के लिए बकरी की ऊन के मोज़े बुन रही थी। दिन ढल रहा था। डूबते सूरज की तिरछी किरनें लाइम के पेड़ों में से छन-छनकर आ रही थीं। आखिरी खिड़की का शीशा और उसके पास रखा किताबदान चमक रहे थे। बाग और कमरा, दोनों पर गहरी निस्तब्धता छाई थी। किसी-किसी वक्त जब बाग में अबाबील पर फड़फड़ाती या आन्ना फ्योदोरोव्ना गहरी सांस

लीजा ने सलाइयां हाथ में लीं, सिर पर बंधे रूमाल में से पिन खींचकर निकाला, दो-तीन बार फन्दे को उठाकर अपनी जगह पर ले आई, और नानी मामा के हाथ में दे दी। खिड़की में से हवा बह-बहकर अन्दर आ रही थी। पिन निकालने से लीजा के सिर पर का रूमाल फून उठा था।

"मेरा मेहनताना लाइए," रूमाल में पिन खोंसते हुए उसने कहा और अपना गोरा गुलाबी गाल, मामा के सामने कर दिया ताकि वह उसे चूम सके। "आज चाय के साथ आपको रम मिलेगी। आज शुक्रवार है, मालूम है न ?"

वह फिर लौटकर चायवाले कमरे में चली गई।

"आओ, मामाजी आओ, देखो, हुस्सार आ रहे हैं !" उसने स्पष्ट ऊंची आवाज में पुकारा।

आन्ना फ्योदोरोव्ना और उसका भाई चायवाले कमरे में पहुंचे। कमरे की खिड़कियां ऐन गांव के सामने खुलती थीं। खिड़कियों में से बहुत कम दिखाई पड़ता था। धूल के बवण्डर उड़ रहे थे और उनमें केवल एक भीड़-सी जाती हुई दिखाई दे रही थी।

लीजा का मामा आन्ना फ्योदोरोव्ना से बोला :

"बड़े अफसोस की बात है कि हमारा घर इतना छोटा है और नये कमरे भी अभी तक बनकर तैयार नहीं हुए, वरना हम कुछ अफसरों को अपने यहां ठहरने के लिए बुला लेते। हुस्सार अफसर बड़े खुश-मिजाज जवान होते हैं। मुझे तो उनसे मिलने की बड़ी इच्छा होती है।"

"मुझे भी उन्हें अपने यहां ठहराने में बड़ी खुशी होती, भैया, पर ठहराने के लिए हमारे पास जगह जो नहीं है। एक मेरा सोनेवाला कमरा है, एक छोटा कमरा लीजा के पास है, एक बैठक और एक तुम्हारा कमरा, बस। हम उन्हें ठहरा कहां सकते हैं ? खुद ही सोचो। मिखाइलो मत्वेयेव ने गांव के मुखिया का बंगला उनके लिए ठीक करवा दिया है। वह कहता है कि वह भी साफ-सुथरा है।"

"लीजोच्का, हम उन्हीं हुस्सारों में से तुम्हारे लिए वर चुनेंगे, कोई खूबसूरत-सा हुस्सार युवक," मामा ने कहा।

"मैं हुस्सार नहीं चाहती, मुझे उल्हन ज्यादा अच्छे लगते हैं। आप उल्हन फौज में ही थे न मामाजी ? मैं तो उन हुस्सारों को दूर से भी

महा दसूगा, माम महते हैं व बड़ अन्दर तबीयत के होते हैं।"

मीरा के मालों पर हल्की-सी लाली दौड़ गई पर वह फिर मुस्करा- कर हँसने लगी :

"मां देखो, अम्यूस्का दौड़ी चली आ रही है, उसने मुझे कि क्या देखकर आई है," उसने कहा।

अन्ना पर्वोदोरोव्ना ने अम्यूस्का को घूमा देखा।

"दूसरे घर में कोई काम नहीं जो यों छोकरियों को देखने भागती फिरती हो," अन्ना पर्वोदोरोव्ना ने कहा, "बताओ, अफसरों के ठहरने का क्या इन्तजाम किया गया है?"

"येरेम्किन के बगीचे में ठहरेंगे। दो अफसर हैं, मार्तीनन, और मैं क्या बताऊं दोनों इतने सुन्दर हैं! कहते हैं, उनमें से एक काउण्ट है।"

"नाम क्या है?"

"कजारोव या तुर्बीनोव, या कुछ ऐसा ही। मुझे ठीक से याद नहीं।"

"तुम तो पागल हो, कुछ भी नहीं बता सकती। कम से कम उनका नाम तो मालूम किया होता।"

"आप कहें तो मैं अभी भागकर पूछ आऊं?"

"हां, क्यों नहीं, यह करने में तो तुम बड़ी होशियार हो, मैं खूब जानती हूं। नहीं, घर पर बैठो, अबकी बार दनिल्का जायगा। मैंया, उसे भेज दो, और कहना, पूछकर आए कि अफसरों को किसी चीज की जरूरत तो नहीं। हमें उनकी पूरी-पूरी खातिरदारी करनी चाहिए। और यह कहना कि यहां आकर कहे कि मालकिन ने भेजा है।"

बुढ़िया और उसका भाई फिर चाय के कमरे में बैठ गए। मीरा नौकरानियों के कमरे में जाकर रखने चली गई। वहां पर भी अम्यूस्का हुस्सारों की ही बातें कर रही थी।

"ओह, छोटी मालकिन, क्या बताऊं तुम्हें, काउण्ट कितना सुन्दर है!" वह कहने लगी, "बिल्कुल जैसे कोई फरिश्ता हो। काली-काली भवें, अगर तुम्हें ऐसा पति मिल जाए तो कितनी सुन्दर जोड़ी बने, क्यों?"

अन्य नौकरानियां मुस्कराकर हामी भरने लगीं। बूढ़ी धाय खिड़की के पास बैठी मोजा बुन रही थी। उसने गहरी सांस ली, और दबी जिह्वा से प्रार्थना के शब्द बुदबुदाने लगी।

"... के बारे में यही कुछ देखकर आई हो!" मीरा बोली,

ताज़ा और 'कला' का रंग न जाता। कुछ-कुछ मोटी होनी चाहिए जो हुस्सारों को पसन्द आए।"

इसके बाद लीज़ा शक्कर का प्याला उठाए, हंसती हुई, बाहर निकल गई।

'मैं भी उस हुस्सार को देखना चाहती हूं, जाने कैसा है,' वह सोचने लगी, 'सुनहरे बालोंवाला है या काले बालोंवाला? बेशक, उसे हम लोगों से भी मिलकर खुशी होगी। पर शायद वह यहां से चला जाएगा और उसे मालूम तक न हो पाएगा कि यहां कोई लड़की थी जो उसके बारे में सोचती रही थी। अब तक कितने ही युवक यहां आए और चले गए। मामाजी और उस्त्युश्का के सिवाय मुझे कोई देखनेवाला तक नहीं है। क्या फरक पड़ता है कि मेरे बाल किस ढंग से बने हैं, या मेरे फ्रॉक की आस्तीन किस काट की है, मेरी तारीफ करनेवाला तो यहां कोई है ही नहीं।' अपनी गोल-गोल बाहों की ओर देखते हुए उसने ठण्डी सांस भरी और सोचने लगी, 'वह कद का ऊंचा-लम्बा होगा, बड़ी-बड़ी आंखें होंगी, शायद पतली-सी काली मूंछ होगी। मैं बाईस बरस की हो चली, अभी तक किसीने मुझसे प्रेम नहीं किया, सिवाय इवान इपातिच के, जिसके मुंह पर चेचक के दाग हैं। चार साल पहले तो मैं और भी ज्यादा खूबसूरत हुआ करती थी। लड़की तो अब मैं रही ही नहीं। सारा लड़कपन बीत गया और मैं किसीका मन नहीं रिझा पाई। उफ, मेरी किस्मत ही खोटी है। मैं तो बस, बदनसीब देहातिन हूं!'

मां ने आवाज़ दी। लीज़ा के विचारों की श्रृंखला टूट गई। मां उसे चाय ढालने के लिए बुला रही थी। लीज़ा सिर झटककर चायवाले कमरे में चली गई।

सबसे अच्छी घटनाएं वे होती हैं जो अचानक घट जाएं। जितनी अधिक कोशिश करके हम किसी चीज़ को प्राप्त करना चाहें, उतना ही परिणाम बुरा निकलता है। देहात में बच्चों की शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए अधिकांश स्थितियों में उन्हें जो शिक्षा मिलती है, वह अद्भुत होती है। लीज़ा के साथ भी ऐसा ही हुआ। आन्ना फ्योदोरोव्ना का दिमाग छोटा था, और स्वभाव अत्यन्त आलसी। लीज़ा को किसी प्रकार की शिक्षा भी वह नहीं दे पाई। न संगीत सिखाया, न फ्रांसीसी भाषा—जिसका सीखना परमावश्यक माना जाता

है। सीज़ा के जन्म से पहले, मां-बाप को उम्मीद भी न थी कि बच्ची इतनी स्वस्थ और सुन्दर निकलेगी। आन्ना फ्योदोरोव्ना ने उसे एक धाय के सिपुर्द कर दिया जो उसकी देखभाल करती थी। धाय ही उसे खाना खिलाती, उसे गाढ़े के फ्रॉक और बकरी की खाल के जूते पहनाती, बाहर घुमाने ले जाती जहां बच्ची बेर और खुमियां इकट्ठी करती फिरती। एक युवा विद्यार्थी उसे पढ़ना-लिखना और गणित सिखाने आया करता। इसी तरह सात-आठ साल बीत गए। तब अचानक आन्ना फ्योदोरोव्ना ने देखा कि सीज़ा तो बड़ी खिली तबीयत की, मिलनसार और मेहनती लड़की निकल आई है, और एक सहेली का ही नहीं, बल्कि छोटी-सी घर-मालकिन का भी स्थान लेने लगी है। आन्ना फ्योदोरोव्ना स्वयं बड़ी दयालु स्वभाव की थी। हमेशा किसी मज़दूर-दास के बच्चे या किसी निराश्रित बालक को गोद लिए रहती थी। सीज़ा, दस वर्ष की उम्र से ही, इन गोद लिए बच्चों की देख-भाल करने लगी थी। वह उन्हें वर्णमाला सिखाती, कपड़े पहनाती, लिखने में ले जाती, शरारत करते तो डांटती, दण्ड देती। फिर घर में सीज़ा का बूढ़ा मामा आकर रहने लगा। दुबला-पतला एक बेसहारा आदमी था। उसकी देखभाल भी सीज़ा को एक बच्चे की तरह करनी पड़ती। इसके अलावा घर में नौकर-चाकर थे। और ये मज़दूर-दास अपना दुखड़ा रोने इसके पास आते। कोई बीमार होता, किसी को कभी दर्द होता, वह उन्हें इलाज के लिए एरंडर के फूलों का रस, पेपरमिंट और कपूर का तेल देती। साथ ही सारे घर का प्रबन्ध करती। घर की सारी ज़िम्मेदारी अचानक ही इसके सिर पर आ पड़ी थी। उधर प्रेम की भावना भी हृदय में दबी पड़ी थी जो यद्यपि-प्रेम तथा पर्व में प्रकट होने लगी। इस तरह सीज़ा, अचानक ही, एक स्नेहशील, मधुर, मिलनसार, शुद्ध हृदय तथा धर्मानुरागी लड़की निकल आई। हां, जब कभी गिरजे में पड़ोसियों को नये फैशन की पोशाकें पहने देखती, जिन्हें वे शहर से लाई होतीं, तो सीज़ा के हृदय में ईर्ष्या की टीस उठती। मां बूढ़ी थी और मनमौजी भी, उसकी बातें सीज़ा को बर्दाश्त करनी होतीं। प्रेम के उसके स्वप्न अटपटे और बेढंगे-से थे। घर-बार के काम-काज में वे लगन लिए आते। यह दिन-रात की, बहु काम उसके लिए बहुत आवश्यक हो गया था। अब यौवन अवस्था में, शारीरिक तथा नैतिक सौन्दर्य के बावजूद, इस पूरनूर सुन्दरी की आत्मा पर कुछ भी बोझ, एक भी धब्बा न था

मझले कद की थी, डील-डौल में गोलाई अधिक थी। नाक-नक्श दी
नहीं थे। आँखें बादामी रंग की और बहुत बड़ी नहीं थीं, निचली पलक
के नीचे हल्की-सी छाया पड़ती थी; बाल लम्बे और सुनहरे थे। ज
चलती तो सुते उग भरती हुई, झूमकर। जब वह व्यस्त होती और उस
मन पर किसी चिन्ता का बोझ न होता तो उसके चेहरे का भाव ह
देखनेवाले को यही कहता जान पड़ता : उन लोगों के लिए जीवन सु
मय ध्यान होता है जिनकी अन्तरात्मा साफ हो और जिनके हृदय
दूसरों के लिए प्रेम हो। ऐसे समय में भी जब किसी क्लेश या क्रो
के कारण, या घबराहट या दुःख के कारण उसका मन विक्षिप्त होत
तो बरबस उसकी आँखें आसुओं से भर आतीं, होठ स्थिर हो जाते औ
बाईं आँख के ऊपर की भौंह सिकुड़ जाती। उस समय न चाहते ह
भी उसके दयालु और निष्कपट हृदय की ज्योति, किसी प्रकार की
कृत्रिमता से अस्पृश्य, उसके गालों के गढ़ों, उसके होंठों के कोनों औ
उसकी चमकती आँखों में झलकती रहती।

१०

जिस समय बुड्ढेशा की टुकड़ी मोरोजोव्का गांव में दाखिल हु
उस समय सूरज डूब चुका था, मगर हवा में अभी गर्मी थी। टुकड़ी
आगे-आगे, गांव की गर्द-भरी सड़क पर, एक चितकबरी गाय भा
चली आ रही थी। किसी-किसी वक्त वह थकती, और रम्भाने लगती
वह यह नहीं समझ पा रही थी, कि घोड़ों के सामने से हटने के लिए केव
रास्ता छोड़ देना काफी है। बूढ़े किसान, गांव की स्त्रियां और ब
हुस्सारों को देखने के लिए सड़क के दोनों तरफ भीड़ लगाए खड़े थे
हुस्सार काले हिनहिनहिनाते घोड़ों पर सवार, हाथों में छोटी-छो
लगामें थामे, गर्द के बवण्डर में से बढ़े चले आ रहे थे। टुकड़ी के द
हाथ, दोनों अफसर, घोड़ों की पीठ पर शिथिल-से बैठे थे। उनमें से ए
काउंट तुर्बीन था। वह कमाण्डर था। दूसरा पोलोज़ोव नाम का य
युवक था, जिसकी हाल ही में नियुक्ति हुई थी।

गांव के सबसे बढ़िया बंगले में से, सफेद कोट पहने एक हुस्सा
निकला और सिर पर से फौजी टोपी उतारकर सीधा अफसरों के प

"रहने का क्या इन्तजाम हुआ है ?" काउंट ने उससे पूछा।

"हुजूर के लिए ?" सेना के पड़ाव-प्रबन्धक ने कहा। वह बिल्कुल तनकर खड़ा था। "आपके लिए हमने गांव के मुखिया का यह बंगला साफ करवा दिया है। जमींदार के घर में हमने एक कमरा तलाश किया मगर वह नहीं मिला। मालकिन कमीनी-सी औरत है।"

"अच्छी बात है," काउंट ने घोड़े पर से उतरकर टांगें सीधी करते हुए कहा और मुखिया के बंगले की तरफ चल दिया। "क्या मेरी गाड़ी आ गई है ?"

"हुजूर," पड़ाव-प्रबन्धक ने अपनी टोपी से फाटक के सामने खड़ी गाड़ी की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया, और आगे-आगे बंगले के दरवाजे की ओर भागकर जाने लगा। दरवाजे पर एक किसान परिवार अफसरों को देखने के लिए भीड़ लगाए खड़ा था। उसने झटके से फाटक खोला। एक बूढ़ी औरत गिरते-गिरते बची। फिर एक तरफ को हटकर प्रबन्धक खड़ा हो गया ताकि काउंट अन्दर जा सके। बंगला अभी-अभी धोकर साफ किया गया था।

बंगला बड़ा और खुला था, लेकिन बहुत साफ नहीं था। एक जर्मन अर्दली लोहे का पलंग बिछाकर अब सफरी बैग में से बिस्तर के कपड़े निकाल रहा था।

"उफ कितनी गन्दी जगह है !" काउंट ने खीझकर कहा, "दावेंको, क्या जमींदार के घर में पड़ रहने के लिए थोड़ी-सी भी जगह नहीं मिल सकती ?"

"हुजूर, हुक्म देंगे तो मैं अभी जाऊंगा और घर खाली करवा लूंगा," दावेंको ने जवाब दिया, "पर हुजूर, जमींदार का घर भी बहुत मामूली-सा है, इस बंगले से ज्यादा अच्छा नहीं है।"

"अब बहुत देर हो गई है। तुम जाओ।" और काउंट बिस्तर पर लेट गया और दोनों हाथ सिर के नीचे रख लिए।

"जोहान्न !" उसने अपने अर्दली को पुकारा, "यह फिर तुमने बिस्तर के बीच में गांठ-सी क्या रहने दी है ! क्या बात है ? क्या तुम बिस्तर भी ठीक तरह से नहीं लगा सकते ?"

जोहान्न उसे ठीक करने के लिए आगे बढ़ा।

"रहने दो अब, बहुत देर हो गई है। मेरा ड्रेसिंग गाउन कहां

है ?"

अर्दली ड्रेसिंग गाउन लाया।

पहनने से पहले काउंट ने उसके किनारे को ध्यान से देखा।

"मुझे पहले ही मालूम था। तुमने वह धब्बा साफ नहीं किया। मैं नहीं समझ सकता कि तुमसे ज्यादा निकम्मा नौकर भी किसीके पल्ले पड़ सकता है।" और अर्दली के हाथ से गाउन छीनकर खुद पहनने लगा। "क्या जान-बूझकर ऐसा करते हो? बात क्या है? चाय तैयार है?"

"मुझे वक्त ही नहीं मिला हुजूर।"

"गधा कहीं का!"

काउंट ने एक फ्रांसीसी नावल उठा ली जिसे ऐसे मौकों के लिए वह साथ रखता था, और थोड़ी देर तक चुपचाप लेटकर पढ़ता रहा। जोहान्न बाहर दरवाजे के पास समावार गरम करने के लिए चला गया। जाहिर है कि काउंट का पारा तेज था। वह थका हुआ था, धूल-मिट्टी के कारण गन्दा हो रहा था, कसकर कपड़े पहन रखे थे और पेट खाली था।

"जोहान्न!" उसने फिर पुकारा, "इधर आओ और दस रूबल का हिसाब दो जो मैंने तुम्हें दिए थे। शहर में क्या-क्या खरीदा था?"

हिसाब के पुर्जे पर काउंट नज़र दौड़ाने लगा, और चीजों की महंगाई के बारे में बड़बड़ाता हुआ कुछ बोला।

"मैं चाय के साथ रम पिऊंगा।"

"मैंने रम तो नहीं खरीदी।"

"खूब! कितनी बार मैंने तुमसे कहा है कि रम साथ रखा करो!"

"मेरे पास काफी पैसे नहीं थे।"

"पोलोजोव ने क्यों नहीं खरीदी थी? तुम उसीके आदमी से ले लेते।"

"कोरनैट पोलोजोव? मुझे मालूम नहीं। उसने सिर्फ चाय और चीनी खरीदी थी।"

"नालायक! हट जाओ यहां से! तुमने मुझे इतना परेशान कर रखा है जितना कभी किसीने नहीं किया। तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मार्च पर मैं चाय के साथ रम पीना पसन्द करता हूं।"

"ये दो चिट्ठियां सदर मुकाम से हुजूर के नाम आई हैं," अर्दली ने

कहा।

काउंट ने बिस्तर पर लेटे-लेटे चिट्ठियां खोलीं और पढ़ने लगा ऐन उसी वक्त कोरनेट अन्दर दाखिल हुआ। उसका चेहरा खिल रहा था। वह सिपाहियों को उनके ठिकाने तक पहुंचाने गया हुआ था।

"कहो तुर्बीन, देखने में तो यह जगह बुरी नहीं है। पर मैं थककर चूर हो गया [illegible]। दिन-भर बहुत गरमी रही।"

"बुरी नहीं है! गन्दी, बदबूदार खोली है यह, और चाय के साथ रम भी पीने को नहीं है, तुम्हारी मेहरबानी से। तुम्हारा पाजी नौकर भी खरीदना भूल गया और मेरा आदमी भी। तुमने अपने आदमी को तो कह दिया होता।"

वह फिर चिट्ठियां पढ़ने लगा। पहला खत पढ़ चुकने के बाद उसने उसे मरोड़कर फर्श पर फेंक दिया।

इस बीच, दरवाजे के पास कोरनेट अपने नौकर के कान में फुस-फुसाकर पूछने लगा:

"तुमने रम क्यों नहीं खरीदी? पैसे तो थे तुम्हारे पास?"

"हम ही क्यों सब चीजें खरीदा करें? सब खर्च यों भी मैं ही करता हूं। उस जर्मन को तो बस पाइप पीने के अलावा कोई काम ही नहीं।"

दूसरा खत, जाहिर है अरुचिकर नहीं था, क्योंकि काउंट उसे पढ़ते हुए मुस्करा रहा था।

"कहां से आया है?" पोलोजोव ने पूछा। वह कमरे में लौट आया था और अंगीठी के पास तख्ते पर अपना बिस्तर बिछा रहा था।

"मिना की तरफ से आया है," काउंट ने खुशी-खुशी जवाब दिया और खत आगे बढ़ा दिया, "पढ़ना चाहते हो? बड़ी प्यारी लड़की है! हमारी लड़कियों से बहुत अच्छी है! जरा पढ़के देखो इस खत में कितनी सूझ और कितना नाजुक दिल है। एक ही बात उसमें बुरी है—वह पैसे मांगती है।"

"हां, यह बुरी बात है," कोरनेट ने कहा।

"मैंने उसे कुछ पैसे देने का वादा किया था, पर फिर हम लोग इस मार्च पर निकल आए...हां, फिर...अगर टुकड़ी की कमान मेरे हाथ ...न महीने तक रही तो मैं उसे कुछ न कुछ भेज दूंगा। मुझे पैसे देने ... इन्कार नहीं। अच्छी लड़की है न, क्यों?" उसने मुस्कराते

हुए, पोलोज़ोव के चेहरे का भाव देखते हुए, पूछा।

"बिल्कुल अनपढ़ है, मगर है भोली-भाली। लगता है तुम्हें सचमुच प्यार करती है," कोरनेट ने कहा।

"ठीक है। उस जैसी लड़कियों का ही प्यार सच्चा होता है, अगर वे प्यार करें तो।"

"और दूसरा खत कहां से आया है?" कोरनेट ने खत लौटाते हुए पूछा।

"ओह, यह? एक आदमी है, बेहूदा-सा, जिससे मैं जुए में पैसे हार गया था। तीसरी बार मुझसे पैसे मांग रहा है। इस वक्त तो मैं उसे कुछ नहीं दे सकता। कैसी फ़िज़ूल-सी चिट्ठी है!" काउंट ने कहा। उस घटना को याद करके वह क्रुद्ध हो उठा था।

इसके बाद दोनों अफ़सर कुछ देर तक चुप रहे। कोरनेट काउंट को बहुत मानता था। काउंट की मनःस्थिति को देखते हुए, वह भी चुपचाप चाय पीता रहा। बातचीत करने से घबराता था। किसी-किसी वक्त वह तुर्बीन के सुन्दर चेहरे की तरफ़ नज़र उठाकर देख-भर लेता। तुर्बीन किसी विचार में खोया हुआ, बराबर खिड़की में से बाहर देखे जा रहा था।

"हो सकता है सब कुछ ठीक-ठीक हो जाए," सहसा काउंट ने सिर झटका और पोलोज़ोव की ओर देखते हुए कहा, "अगर हमारी रेजिमेंट में इस साल तरक्कियां मिलने जा रही हैं, और साथ ही हमें फ़ौजी कार्यवाही पर भी भेजा जाएगा, तो मुमकिन है मैं अपने दोस्तों से आगे निकल जाऊं। वे इस वक्त गार्ड में कप्तान हैं।"

चाय का दूसरा दौर शुरू हुआ। इसमें भी इसी तरह के विषयों पर वार्तालाप चलता रहा। तब आन्ना फ्योदोरोव्ना का सन्देश लेकर दनीलो आ पहुंचा।

"मालकिन जानना चाहती हैं कि हुज़ूर काउण्ट फ्योदोर इवानोविच तुर्बीन के सुपुत्र तो नहीं हैं?" अपनी ओर से जोड़ते हुए दनीलो ने पूछा, क्योंकि उसने अफ़सर का नाम सुन रखा था और स्वर्गीय काउंट के क॰ नगर में विश्राम के बारे में भी जानता था। "हमारी मालकिन आन्ना फ्योदोरोव्ना उन्हें बहुत अच्छी तरह जानती थीं।"

"वह मेरे पिता थे। अपनी मालकिन से कहो कि हम उनके बहुत आभारी हैं कि उन्होंने हमारी सुध ली। हमें किसी चीज़ की ज़रूरत

नहीं, हां, उन्हें इतना कहना कि अगर हमें अपनी कोठी में या कहीं और रहने के लिए छोटा-सा कमरा दिला सकें तो हम बहुत आभार मानेंगे।"

"तुमने यह क्यों कहा ?" दनीलो के चले जाने पर पोपोडोव ने पूछा। "क्या फरक पड़ता है ? हमें एक ही रात तो यहां रहना है, उसके लिए हम क्यों उन्हें परेशान करें ?"

"तुम और तुम्हारी जमीर ! मुर्गीखानों में सो-सोकर तुम्हारा जी नहीं भरा ? तुममें व्यावहारिक सूझ तो नाम को भी नहीं। अगर एक रात के लिए भी हम कहीं आराम से सो सकें, तो हम क्यों न मौके का फायदा उठाएं ? वे तो इसे अपना मान समझेंगे।"

"बस एक बात मुझे पसन्द नहीं, कि वह औरत मेरे पिता को जानती थी," धीरे से मुस्कराते हुए काउण्ट ने कहा। उसके दांत चमक रहे थे। "जब कभी मुझे अपना पिता याद आता है तो बड़ी शर्म महसूस होती है। कहीं बदनामी और कहीं कर्ज, कहीं कहानियां सुनने को मिलती हैं। इसीलिए उनके पुराने वाकिफकारों से मैं दूर रहता हूं। पर वह जमाना ही ऐसा था," उसने गम्भीरता से कहा।

"मैं तुम्हें एक बात बताना भूल गया," पोपोडोव बोला, "मुझे एक बार उल्हन ब्रिगेड का एक कमाण्डर मिला था। उसका नाम इल्यीन था। वह तुम्हें बहुत मिलना चाहता था। तुम्हारे पिता का तो वह बड़ा आदर करता था।"

"वह इल्यीन खुद कोई निकम्मा आदमी रहा होगा। बात यह है कि जो सज्जन मेरे साथ घनिष्ठता बढ़ाने के लिए यह दावा करते हैं कि वे मेरे पिता के मित्र थे, वही मुझे ऐसी कहानियां सुनाते हैं जिन्हें सुनकर मैं शर्म से गड़ जाता हूं, हालांकि वे उन्हें चुटकुले समझकर सुनाते हैं। मैं हर बात को ठण्डे दिल से, उसकी असलीयत में आकर देखता हूं। मैं समझता हूं कि मेरा बाप बड़ा तेज मिज़ाज आदमी था और कई बार बड़ी अनुचित बातें कर बैठता था। लेकिन वह जमाना ही ऐसा था। अगर आज के जमाने में पैदा हुआ होता तो वह एक बहुत कामयाब आदमी होता, क्योंकि यह मानना पड़ता है कि वह बहुत ही योग्य आदमी था।"

लगभग पन्द्रह मिनट के बाद दनीलो वापस आया और अपनी [illegible] के नाम निमन्त्रण लाया कि वे उसके घर रात बिताएं।

११

आन्ना फ्योदोरोव्ना को मालूम हुआ कि यह हुस्सार युवा अफसर काउंट फ्योदोर तुर्बीन का बेटा है तो वह अत्यन्त उद्विग्न हो उठी।

"हाय भगवान! दनीलो, फौरन भागकर वापस आओ और उनसे कहो कि मालकिन चाहती हैं कि आप हमारे यहां आकर रहें," उसने कहा और भागती हुई नौकरानियों के कमरे में गई, "लीजोन्का! ऊस्त्युश्का! वे लोग तुम्हारे कमरे में ठहर सकते हैं, लीजा! तुम आज रात अपने मामा के कमरे में चली जाओ, और आप भैया···आपको भैया, आज रात बैठक में सोना पड़ेगा। एक रात वहां सोने से तुम्हें तकलीफ नहीं होगी।"

"बिल्कुल नहीं, बहिन, मैं फर्श पर लेट रहूंगा।"

"अगर उसकी शक्ल बाप से मिलती है तो वह जरूर बड़ा खूबसूरत होगा। ओह, उसका मुखड़ा देखने को कैसा जी चाह रहा है!···तुम देखोगी तो जानोगी, लीजा! उसका बाप बहुत ही खूबसूरत आदमी था! यह मेज कहां लिए जा रही हो? इसे यहीं रहने दो," आन्ना फ्योदो-रोव्ना ने उद्विग्न होकर कहा, "दो पलंग मंगवा लो—एक कारिंदे के घर से मिल जाएगा—और वह बिलौरी शमादान जो मेरे जन्मदिन पर मुझे भैया ने दिया था वह लेती आओ और उसमें स्टेयरिन बत्ती लगा दो।"

आखिर सब तैयारी मुकम्मल हो गई। मां के बार-बार दखल देने के बावजूद लीजा ने अपना कमरा अपनी रुचि के अनुसार सजाया। वह बिस्तर के लिए नई चद्दरें ले आई, उनमें से इत्र की खुशबू आ रही थी। फिर खुद अपने हाथ से दोनों बिस्तर बिछाए। पलंग के साथ एक मेज पर पानी का जग और शमादान रखे; खुशबूदार कागज को नौकरानियों के कमरे में जलाया; और अपना बिस्तर अपने मामा के कमरे में लगा दिया। जब आन्ना फ्योदोरोव्ना का मन कुछ शान्त हुआ तो वह अपनी रोज की जगह पर जा बैठी और ताश की गड्डी निकाल ली···पर पत्ते नहीं बिछाए। अपनी [illegible] पर टिका-कर सपने देखने लगी, 'वक्त कैसे [illegible] तेजी से गुजर जाता है!' उसने धीमी [illegible] कहा। 'लगता है जैसे कल की [illegible] के सामने

है···कैसा बेपरवाह आदमी था !' और आन्ना फ्योदोरोव्ना की आंखों में आंसू आ गए। "अब लीज़ोच्का की बारी है—पर इसमें वह बात नहीं जो मुझमें थी जब मैं इसकी उम्र की थी—बड़ी सुन्दर बच्ची है, मगर···वह बात नहीं जो मुझमें थी···"

"लीज़ोच्का, अच्छा हो अगर तुम आज अपनी मसलिन की पोशाक पहन लो।"

'क्या तुम उनकी आवभगत करना चाहती हो, मां ? मगर इसकी क्या ज़रूरत है, मां ?' यह सोचकर ही कि वह अफसरों से मिलेगी, लीज़ा से अपनी उत्तेजना दबाए न दबती थी। 'मैं तो समझती हूं इसकी कोई ज़रूरत नहीं।'

सच तो यह है कि वह उनसे मिलने के लिए बेताब थी किन्तु मिलने से डरती भी थी। दिल ही दिल में उसे यह भास हो रहा था कि उसे अपार सुख मिलनेवाला है, परन्तु इस सुख में व्याकुलता छिपी होगी।

'मुमकिन है ये खुद हमसे मिलना चाहें, लीज़ोच्का !' मन ही मन सोचते हुए और बेटी के बाल सहलाते हुए आन्ना फ्योदोरोव्ना ने कहा। 'इसके बालों में भी वह बात नहीं जो मेरे बालों में थी जब मैं जवान थी···ओह, लीज़ोच्का, मैं चाहती हूं तुम्हें···' और उसने सच-मुच ही उसके लिए मन ही मन किसी बात की कामना की। पर वह न ही यह आशा कर सकती थी कि लीज़ा की युवा काउंट के साथ शादी होगी, और न ही वह चाहती थी कि लीज़ा का युवा काउंट के साथ उसी तरह का सम्बन्ध हो जैसा बड़े काउंट के साथ उसका अपना रहा था। फिर भी उसके मन में किसी चीज़ की कामना उठ रही थी। शायद उसे यह आशा थी कि वह अपनी बेटी के द्वारा उन भावनाओं को पुनः जागृत कर पाए जो किसी समय स्वर्गीय काउंट [illegible] थीं। उसके हृदय में उठी थीं।

काउंट के आ जाने से घुड़सेना का बूढ़ा अफसर भी कुछ-कुछ उत्तेजित हो उठा था। वह अपने कमरे में गया और अन्दर से ताला लगा लिया। पन्द्रह मिनट बाद वह फ़ौजी कोट और नीली घुड़सवारी की पतलून पहने बाहर निकला। जब कोई लड़की पहली बार नाच के लिए गाउन पहनकर आती है तो वह खुश भी होती है और शरमाती भी है। यही स्थिति घुड़सेना के अफसर की थी जब वह

उस कमरे में दाखिल हुआ जो मेहमानों के लिए तैयार किया गया था।

"देखें तो नई पीढ़ी के हुस्सार कैसे हैं, बहिन। अगर सच्चे मानों में कोई हुस्सार हुआ है तो वह बड़ा काउंट ही था। देखें ये लोग कैसे हैं।"

दोनों अफसर पिछले दरवाज़े से अपने कमरे में दाखिल हुए।

"मैंने क्या कहा था?" काउंट ने कहा और धूल से अटे बूट पहने नये बिस्तर पर लेट गया। "क्या यह जगह उस झोंपड़े से अच्छी नहीं? वहां तो झींगुर ही झींगुर थे।"

"ज़्यादा अच्छी है, ज़रूर, मगर हमने फिज़ूल ही मेज़बानों का एहसान सिर पर लिया।"

"छि! आदमी की नज़र हमेशा व्यावहारिक होनी चाहिए। निश्चय ही हमारे आने से वे बेहद खुश हैं...मुलाज़िम!" उसने ज़ोर से कहा। "उनसे कहो कि इन खिड़कियों के ऊपर कोई पर्दा-वर्दा टांग दें ताकि रात को हवा तंग न करे।"

ठीक इसी वक्त वह बुज़ुर्ग अफसरों से परिचय प्राप्त करने के लिए कमरे में दाखिल हुआ। वह यह कहे बिना नहीं रह सका—और यह स्वाभाविक ही था—कि मैं स्वर्गीय काउंट का साथी रह चुका हूं, वह मेरे दोस्त थे, उन्होंने मुझपर बड़े एहसान किए थे। ये बातें कहते वक्त बूढ़े के चेहरे पर लाली दौड़ गई। एहसान से उसका मतलब, क्या उन १०० रूबलों से था जो काउंट ने उसे वापस नहीं किए थे, या इस बात से कि काउंट ने उसे बर्फ पर पटक दिया था, या उसपर गालियों की बौछार की थी? इसका जवाब देना मुश्किल है—बुज़ुर्ग ने इसकी व्याख्या नहीं की। युवा काउंट घुड़सेना के बूढ़े अफसर के साथ बड़ी इज़्ज़त से पेश आया, और उसे वहां ठहराने के लिए उसे धन्यवाद दिया।

"काउंट, माफ करना, यह कमरा बहुत आरामदेह नहीं है," (ऊंचे रुतबे के आदमियों से बात करने की उसकी आदत छूट गई थी, यहां तक कि वह उसे 'हुज़ूर' कहकर सम्बोधित करने जा रहा था) "मेरी बहिन का घर बहुत छोटा है। हम उस खिड़की पर अभी कुछ टांग देंगे, जिससे हवा अन्दर नहीं आएगी," उसने कहा, और पर्दा लाने के बहाने, पाव घण्टे को कमरे से निकल गया। वास्तव में वह घरवालों से अफसरों की चर्चा करना चाहता था।

इसके बाद खूबसूरत उस्त्युश्का हाथों में माल्किन की शाल
उसे खिड़की पर टांगने के लिए कमरे में दाखिल हुई। माल
उससे यह भी कहा था कि अफसरों से पूछना कि क्या वे चा
चाहेंगे ?

जगह अच्छी थी, साफ-सुथरी थी। इस बात का असर का
भी हुआ। उसकी उदासी जाती रही। उस्त्युश्का के सा
हंसी-मजाक करने लगा। वह उस लापरवाही से बातें करने
लड़की बीच ही में बोल उठी : "आप तो बड़े दुष्ट हैं !" काउंट ने
मालकिन के बारे में पूछा कि क्या वह खूबसूरत है ? आखिर जब
के बारे में उस्त्युश्का ने मालकिन का सन्देश दिया तो काउंट
'क्या हर्ज है, बेशक चाय भेज दें, पर हां, हमारा आदमी अभी तक
तैयार नहीं कर पाया इसलिए कुछ वोद्का और कुछ खाने को
और अगर हो सके तो थोड़ी चैरी भी चाय के साथ भेज दें।"

लीज़ा का मामा छोटे काउण्ट की चाल-ढाल पर ही लट्टू हो
था। नई पीढ़ी के अफसरों की तारीफों की पुल बांधने लगा। पि
पीढ़ीवालों से ये लोग कहीं ज्यादा रोबदार हैं, दोनों का कोई मुका
ही नहीं।

आन्ना फ्योदोरोव्ना इस बात को नहीं मानती थी। काउण्ट फ
दोर इयानोविच से बेहतर कोई नहीं हो सकता। यहां तक कि वह
गई और कहने लगी, "तुम्हारा क्या है, भैया, तुम्हारे साथ तो
कोई मेहरबानी करेगा तुम उसीकी तारीफ करने लगोगे। कौन न
जानता कि अब लोग ज्यादा चतुर हो गए हैं। पर काउण्ट फ्यो
इयानोविच का-सा सलीका तो किसीमें हो ? उस जैसा एकोसाए
नाच तो कोई नाचकर दिखाए ? हर कोई उसपर लट्टू था। फिर
उसकी आंख को कभी कोई नहीं भाया—सिवाय मेरे। तुम्हें मानन
पड़ेगा कि पिछली पीढ़ी में बहुत अच्छे-अच्छे आदमी हो गुजरे हैं।"

उसी वक्त वोद्का, चैरी और खाने-पीने के सामान की फर्माइ
पहुंची।

"देख लिया भैया, तुम कभी भी कोई बात ढंग की नहीं करते हो
तुम्हें चाहिए था कि खाना तैयार करवाते," आन्ना फ्योदोरोव्ना ने
कहा, "लीज़ा, बेटी अब सब काम खुद सम्भालो।"

लीज़ा भागती हुई भण्डारे में खुमियां और ताजा मक्खन लाने के

लिए गई और रसोइए से कहा कि थोड़ा मांस भून दे।

"क्या घर मे कुछ वोदी है भैया ?"

"नही, बहिन, मुझे वोदी मिली ही कब है ?"

"यह कैसे हो सकता है ? तुम चाय के साथ कुछ पिया तो करते हो ?"

"रम पीता हू, आन्ना पयोदोरोव्ना।"

"क्या फरक पड़ता है ? वही भेज दो···ख···रम ही भेज दो, पर क्या यह ज्यादा मुनासिब नही होगा कि हम उन्हें यही पर बुला लें। तुम बताओ क्या करना चाहिए ? यहां बुलाने पर वे नाराज तो नही होंगे न, क्यों ?"

वृद्धेना के अफसर को पूरा विश्वास था कि काउण्ट बड़ा उदार-हृदय आदमी है, कभी आने से इन्कार नहीं करेगा और वह जरूर उन्हें लिवा लाएगा। आन्ना पयोदोरोव्ना अपनी 'ग्रास ग्रैन' की पोशाक और नई टोपी पहनने चली गई, पर लीज़ा इतनी व्यस्त थी कि उसे कपड़े बदलने का ख्याल तक नहीं आया। जो चौड़ी आस्तीनवाली, गुलाबी लिनेन की पोशाक पहने थी, वही पहने रही। वह बेहद घबराई हुई थी। उसका मन कह रहा था कि कोई बहुत बड़ी बात होनेवाली है। लगता था मानो किसी घने बादल ने उसकी आत्मा को ढक लिया हो। वह समझती थी कि यह काउण्ट, यह सुन्दर हुस्सार युवक कोई बहुत ही नामदार आदमी होगा। उसकी हर बात मे नवीनता होगी और वह उसे समझ नही पाएगी। उसकी चाल-ढाल, बात करने का ढग, उसकी हर बात निराली होगी। उसका सोचने का ढग, उसके मुह से निकला हुआ एक-एक वाक्य, सच्चाई और विद्वत्ता से भरा होगा। उसकी हर क्रिया यथार्थ और यथोचित होगी। उसके चेहरे का एक-एक नक्श सुन्दर होगा। लीज़ा को इसमे तनिक भी सदेह नही था। काउण्ट ने वोदी और खाने-पीने की चीजों के लिए कहला भेजा था। लेकिन अगर वह इत्र मे नहाने की भी माग करता तो भी वह हैरान न होती, वह समझ लेती कि यही उचित और ठीक होगा।

आन्ना पयोदोरोव्ना का निमन्त्रण मिलते ही, काउण्ट ने उसे स्वीकार कर लिया। भेंट वालो मे [illegible] की, कोट पहना और अपने सिगारों का डब्बा उठा लिया।

"चलो भई," उसने पोलोजोव [illegible] कहा।

मैं तो सोचता हूं कि [illegible] ," [illegible]
[illegible] । [illegible] है।"

"[illegible] ! [illegible] मैं [illegible]
है। [illegible] है कि [illegible] की [illegible] है।
[illegible]," [illegible] ने [illegible] में कहा।

"[illegible] ।" [illegible] ने [illegible]
ने [illegible] कहा कि [illegible] भी [illegible] है और [illegible]
[illegible] में आ गई है।

१२

वे [illegible] हुए। लीज़ा का चेहरा [illegible] में [illegible] हो गया।
[illegible], [illegible] रही [illegible] कि [illegible]
[illegible] है। [illegible] उदाहरण, अन्ना [illegible]
और [illegible] से [illegible] था। इसके विपरीत, अन्ना प्योदोरोव्ना
[illegible] हो गई, [illegible] उसका स्वागत किया,
काउण्ट के चेहरे पर आँखें गड़ाए, बिना झिझक-संकोच के, उनके [illegible]
[illegible] लगी। "काउण्ट, तुम तो [illegible] अपने बाप की तस्वीर हो
फिर अपनी बेटी से उसका परिचय कराया। काउण्ट के सामने [illegible]
रही, हाथ में जैम और [illegible] का [illegible]। बोरिस देखने में [illegible]
सीधा-सादा था, इसलिए किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। बो[illegible]
इसके लिए वह दिल ही दिल में उन्हें धन्यवाद भी दे रहा था। [illegible]
इस तरह उसे चुपचाप, [illegible] से लीज़ा का रूप निहारने का मौका
मिल गया था। लीज़ा पर नज़र पड़ते ही उसने देख लिया कि [illegible]
असाधारण है। बूढ़ा मामा इस इन्तज़ार में था कि कब बहन बोलना
बन्द करे कि वह भी कुछ कह सके। वह भी बोलने के लिए बेताब था
और चाहता था कि अपने घुड़सवारी के ज़माने के किस्से उन्हें सुनाए।
काउण्ट ने सिगार सुलगाया। वह इतना तेज़ था कि लीज़ा को खाँसी
आ गई। वह बातें करने का बड़ा शौकीन और साथ ही नम्र स्वभाव [illegible]
निकला। पहले तो अन्ना प्योदोरोव्ना की चटर-पटर में अपनी ओर [illegible]
से एकाध शब्द जोड़ देता रहा, बाद में स्वयं चहकने लगा। उसकी बातें [illegible]
भी [illegible] एक बात उसके व्यवहार में विचित्र लगी : वह ऐसे [illegible]

शब्दों का प्रयोग करता था, जो उसकी अपनी मण्डली में तो बेशक बुरे न लगते होंगे, मगर यहां वे जरूर बहुत खटकते थे। आन्ना फ्योदोरोव्ना उन्हें सुनकर कुछ सहम-सी गई। लीज़ा के शर्म के मारे कान तक लाल हो गए। मगर काउण्ट को इसका भास नहीं हुआ, वह उसी तरह आराम से और बड़ी विनम्रता से बतियाता रहा। लीज़ा ने चुपचाप गिलास भर दिए, पर मेहमानों के हाथों में देने के बजाय उनके नजदीक रख दिए। अब भी वह बड़ी घबरा रही थी और काउण्ट की बातों का एक-एक शब्द कान लगाकर सुन रही थी। काउण्ट की बातें सीधी-सादी थीं। बोलते हुए वह बार-बार रुकता था। लीज़ा का मन कुछ-कुछ सम्भलने लगा। जिन विद्वत्ता-भरी बातों को सुनने की उसे आशा थी, वे सुनने को नहीं मिलीं। न ही काउण्ट की चाल-ढाल में उस बांकपन की कोई झलक ही मिली जिसकी धुंधली-सी याद सारा वक्त उसके मन में रही थी। चाय का तीसरा दौरा चलने लगा। लीज़ा ने लजाते हुए आंख उठाकर उसकी ओर देखा। काउण्ट ने उसकी नजर को जैसे अपनी आंखों से बांध लिया, और बिना किसी झेंप के बातें भी करता गया, टिकटिकी बांधे उसे देखता रहा और हल्के-हल्के मुस्कराता रहा। लीज़ा के अन्दर उसके प्रति एक विरोध भाव-सा उठ खड़ा हुआ और फौरन ही उसे महसूस होने लगा कि इस आदमी में कोई भी विलक्षण बात नहीं। इतना ही नहीं, इसमें और उन सभी आदमियों में जिन्हें वह जानती थी उसे कोई अन्तर नजर नहीं आता था। इसलिए उससे डरने की कोई जरूरत नहीं महसूस हुई। यह ठीक है कि इसके नाखून लम्बे थे और ध्यान से तराशे हुए थे, पर देखने में भी वह कोई खास खूबसूरत नहीं था। इसलिए जब लीज़ा ने जाना कि उसके स्वप्न निराधार थे तो सहसा उसका मन क्षुब्ध हो उठा, पर साथ ही उसे एक तरह का ढाढस भी मिला। उसे अब एक ही बात विचलित कर रही थी। कॉर्नेट चुपचाप बैठा बराबर उसकी ओर देखे जा रहा था। लीज़ा अपने चेहरे पर उसकी नजर महसूस कर रही थी। 'शायद वह नहीं, यह होगा,' उसने सोचा।

१३

चाय के बाद वृद्ध महिला अपने मेहमानों को दूसरे कमरे में ले गई।

अन्दर पहुंचकर वह अपनी रोज़ की जगह पर बैठ गई।

"शायद आप आराम करना चाहेंगे, काउण्ट ?" उसने पूछा। काउण्ट ने सिर हिला दिया। इसपर वह बोली, "तो मैं आप लोगों के मनबहलाव के लिए क्या इन्तज़ाम करूं ? काउण्ट, क्या आप ताश खेलते हैं ? भैया, तुम कोई ताश का खेल शुरू कर दो।"

"तुम तो खुद 'प्रेफ़ेन्स' खेलती हो बहिन," उसके भाई ने जवाब दिया, "आइए, एक बाज़ी हो जाए, काउण्ट ? और आप ?"

अफ़सरों ने कहा कि जो भी खेल मेज़बानों को पसन्द है, वे शौक़ से खेलेंगे।

मीशा एक पुरानी ताश की गड्डी उठा लाई। इनके साथ वह किस्मत बांचा करती थी कि आन्ना फ़्योदोरोव्ना के दांत का दर्द जल्दी दूर होगा या नहीं, मामा शहर से कब तक वापस लौटेंगे, पड़ोसी उनसे मिलने आएंगे या नहीं, और इसी तरह की कई बातें। इस गड्डी के पत्ते, पिछले दो महीने से इस्तेमाल किए जा रहे थे, फिर भी उस गड्डी के पत्तों से ज़्यादा साफ़ थे जिनसे आन्ना फ़्योदोरोव्ना किस्मत बांचा करती थी।

"पर शायद आप छोटे दांव पर खेलना पसन्द नहीं करते ?" मामा ने पूछा। "आन्ना फ़्योदोरोव्ना और मैं तो आधा कोपेक की पाइन्ट खेलते हैं। इसपर भी वह हमें लूट लेती है।"

"जिस दांव पर भी आप खेलना चाहें, मैं खुशी से खेलूंगा," काउण्ट ने कहा।

"तो फिर चलिए, एक कोपेक की पाइन्ट रहा,—और असाइनो नोटों से। ऐसे अच्छे मेहमानों के लिए मैं सब कुछ करने के लिए तैयार हूं। भले ही वे मुझे गरीब को भिखारिन बनाकर छोड़ें," आन्ना फ़्योदोरोव्ना ने कहा और आरामकुर्सी पर बैठकर अपनी जालीदार शाल ठीक करने लगी।

उसने मन में सोचा, 'क्या मालूम जीत जाऊं और इनसे एक रूबल तक बना लूं।' लगता था जैसे बुढ़ापे में उसे जुआ खेलने का चस्का पड़ गया था।

"इस खेल को खेलने का एक दूसरा ढंग भी है। चलो तो सिखा दूं। इसे 'आनर्स' और 'मिज़री' से खेलना कहते हैं। बड़ा मज़ेदार है," काउण्ट ने कहा।

पीटर्सबर्ग में खेला जानेवाला यह नया ढंग सब लोगों को बहुत पसन्द आया। मामा कहने लगा कि मैं किसी जमाने में इस तरह खेलना जानता था, यह 'बोस्टन' से बहुत कुछ मिलता है, पर अब यह मुझे कुछ-कुछ भूलने लगा है। आन्ना फ्योदोरोव्ना के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। पर उसने यही ठीक समझा कि सिर हिलाती रहे और मुस्करा-मुस्कराकर कहती जाए कि मैं सब समझ गई हूं, सब बात साफ है। खेल के बीच में, यक्का और बादशाह हाथ में पकड़े हुए, आन्ना फ्योदोरोव्ना ने 'मिज़री' पुकारा और छः मरें उठा ली। सब लोग ठहाका मारकर हंस पड़े। उसे बड़ी झेंप हुई। धीमे से मुस्कराई और झट कहने लगी कि नया तरीका कोई इतनी जल्दी कैसे सीख सकता है। पर वह हार गई थी और उसके नाम के आगे अंक लिख लिया गया था। वह बार-बार हारने लगी। काउण्ट ऊंचे दांव पर खेलने का आदी था, और इस वक्त बड़ी सावधानी से खेल रहा था। बाकायदा एक-एक चाल का हिसाब रख रहा था। मेज़ के नीचे कोरनेट बार-बार उसे पांव से ठोकर मारकर समझाने की कोशिश करता पर काउण्ट कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। कोरनेट खुद बड़ी गलतियां कर रहा था।

लीज़ा खाने पीने का और सामान ले आई—तीन तरह का जैम, फलों का गूदा, और एक खास ढंग के अचारी सेब। वह मां की कुर्सी के पीछे खड़ी हो गई और खेल देखने लगी। किसी किसी वक्त वह उड़ती आंखों से अफसरों को देखती, विशेषकर काउण्ट को। काउण्ट बड़ी चतुराई, आत्मविश्वास और सफाई से खेल रहा था। जब पत्ते फेंकता या सर उठाता तो उसके गोरे-चिट्टे हाथ और गुलाबी नाखून लीज़ा का ध्यान आकर्षित करते।

एक बार फिर आन्ना फ्योदोरोव्ना ने सबर आगे निकलने की कोशिश की। घबराहट में उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। उसने चार तक की चाल बोल दी। पर आए उसके पास केवल चार। भाई के कहने पर अंकोंवाले कागज़ पर उसने अपने अंक लिख तो दिए पर इस ढंग से कि पढ़े न जा सकें।

"घबराओ नहीं मां, तुम हारोगी नहीं। सब वापस जीत लोगी," लीज़ा ने मुस्कराते हुए कहा। वह चाहती थी कि मां को किसी तरह इस अटपटी स्थिति में से निकाल दे। "अगर तुम मामाजी के पत्ते ले लो तो वे फंस जाएंगे।"

[illegible] अब तक आप इससे ऊब उठी होंगी।" जो लोग कोरनेट को [illegible] पसन्द हुआ करते थे, उनके सामने वह जरूर कोई अप्रिय-सी बात [illegible]। यह उनकी आदत थी।

'[illegible]? आपको यह ख्याल कैसे आया? आदमी रोज एक ही चीज [illegible] कर ऊब जाता है या एक ही फ्रॉक रोज पहनकर ऊब सकता है [illegible] सुन्दर बाग से वह क्योंकर ऊबने लगेगा? खास तौर पर जब [illegible] आसमान में [illegible] भी ऊपर उठ आता हो। मामाजी के कमरे में से [illegible] का दृश्य नजर आता है। आज रात मैं उसे जरूर [illegible]।'

मैं [illegible] हूँ [illegible] बुलबुलें नहीं हैं, क्यों?" काउण्ट ने पूछा। वह [illegible] से [illegible] नाराज था [illegible] वह बीच में आ टपका है और अब [illegible] के [illegible] मिलने का स्थान और समय निश्चित नहीं कर [illegible]।

'नहीं, [illegible] पहले थी। [illegible] एक शिकारी आया और एक [illegible] गया। इस साल—[illegible] की बात है—मैंने [illegible] बुलबुल [illegible] सुना था। उसकी आवाज में बड़ी मिठास थी। [illegible] कहीं से आ निकला। [illegible] सुनकर बुलबुल डर गई और [illegible] उड़ गई। [illegible] मैं और मामाजी, [illegible] बुलबुल का गाना सुनते रहे [illegible]।"

"[illegible] बड़ी बातूनी है। क्या सुना नहीं हो उन्हें?" [illegible]। आइए, कुछ खा-पी लें।'

[illegible] अपनी भूल का [illegible] किया। [illegible] का दिन कुछ कुछ छिपने [illegible] लगा। [illegible] की ओर अपने कमरे [illegible]। काउण्ट ने मामा के साथ हाथ मिलाया। इसके बाद [illegible] के साथ परन्तु उसके हाथ को चूमा नहीं। [illegible] गई। [illegible] काउण्ट ने [illegible] से भी हाथ मिलाया [illegible]। उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कानी [illegible]।

'[illegible] है,' सीता ने मन ही मन कहा 'आप बड़े [illegible] कुछ है।'

दोनों अफसर कमरे मे पहुचे।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए," पोलोझोव ने कहा, "मैं तो कोशिश करता रहा कि हम लोग कुछ पैसे हार जाए। मेज के नीचे से तुम्हें इशारे भी करता रहा। लेकिन तुम बडे संगदिल आदमी निकले। बुढ़िया बेचारी को रुला मारा।"

काउण्ट ठहाका मारकर हस पडा।

"बडी अजीब औरत है! तुमने देखा, जब हार गई तो कैसे मुह बनाने लगी!"

वह फिर ठहाका मारकर हसा, इस बेपरवाही से कि सामने खडा नौकर—जोहान्न—भी, आखें झुकाकर मुस्कराने लगा।

"परिवार के पुराने दोस्त का बेटा! हा! हा! हा!" काउण्ट खिलखिलाकर हसता गया।

"पर सचमुच तुमने ठीक नही किया। मुझे तो बुढ़िया पर तरस आने लगा था," कोरनेट ने कहा।

"छि! तुम अभी कमसिन हो। क्या तुम समझे बैठे थे कि मैं जान-बूझकर हार जाऊंगा? मैं क्यों हारू? जब खेलना नहीं जानता था तो हारा करता था। ये दस रूबल काम आएगे, दोस्त। आदमी में व्यवहार-कुशलता होनी चाहिए, नहीं तो बेवकूफो मे शुमार होने लगता है।"

पोलोझोव चुप हो गया। वह अन्दर ही अन्दर सिमटकर लीजा के बारे में सोचना चाहता था। उसके विचार मे लीजा अत्यन्त पवित्र और सुन्दर लडकी थी। पोलोझोव ने कपड़े बदले और गुदगुदे, साफ बिस्तर पर लेट गया।

'सैनिक जीवन मे बडा मान है, बडा गौरव है—सब झूठ!' खिड़की की ओर देखते हुए वह सोचने लगा। खिडकी पर टगी शाल में से चादनी छन-छनकर आ रही थी। 'सच्चा सुख तो इसमें है कि मनुष्य किसी एकान्त स्थान पर, किसी सरल, समझदार और सुन्दर पत्नी के साथ जीवन बिता दे। इसीमे सच्चा और स्थायी सुख है!'

पर पोलोझोव ने अपने मित्र के सामने अपने विचार व्यक्त नहीं किए, इस ग्रामीण युवती का जिक्र तक नहीं किया हालांकि वह भली भांति जानता था कि काउण्ट भी उसीके बारे में सोच रहा है।

"तुम कपड़े क्यों नही बदल रहे हो?" उसने काउण्ट से पूछा। काउण्ट कमरे मे टहल रहा था।

"मेरी सोने की इच्छा नहीं हो रही है, न मालूम क्यों। तुम बेशक बत्ती बुझा दो, मुझे इसकी जरूरत नहीं है।"

और वह कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलने लगा।

"सोने की इच्छा नहीं है," पोलोज़ोव ने काउण्ट के शब्दों को दोहराया। पोलोज़ोव पर काउण्ट का बड़ा रोब था। परन्तु आज शाम की घटनाओं के बाद वह दिल ही दिल मे कुढ़ने लगा था। ऐसा उसने पहले कभी महसूस नहीं किया। जी मे आता कि डटकर काउण्ट का विरोध करे। 'मैं जानता हू तुम्हारी इस चिकनी-चुपड़ी खोपड़ी के अन्दर किस तरह के विचार घूम रहे हैं,' उसने मन ही मन तुर्शी से कहा। 'मैं देख रहा था, तुम्हारा मन उस लड़की पर बुरी तरह रीझ उठा है। पर उस जैसी सरल और सच्ची लड़की को समझने की योग्यता भी तुममें हो। तुम्हें तो मिना जैसी औरतें चाहिए, और वर्दी पर कर्नल के एपोलेट चाहिए।' पोलोज़ोव के मन मे आया कि काउण्ट से पूछे कि लीज़ा पसंद आई या नहीं।

पर काउण्ट की ओर मुखातिब होते ही पोलोज़ोव ने इरादा बदल दिया। उसने सोचा कि लीज़ा के बारे मे काउण्ट का विचार वही हुआ जो मैंने समझा है तो उसका विरोध करने की मुझमें हिम्मत नहीं होगी, बल्कि मैं इस हद तक इसके रोब के नीचे हू कि मैं उसकी हां में हां मिलाने लगूगा। यह जानते हुए भी कि दिन ब दिन उसका यह रोब अनुचित और असह्य होता जा रहा है।

'कहां जा रहे हो?" काउण्ट को टोपी पहनकर दरवाजे की ओर जाते देखकर उसने पूछा।

"अस्तबल की तरफ जा रहा हू। देखना चाहता हू कि वहां इन्तज़ाम ठीक है या नहीं।"

"अजीब बात है," कोरनेट ने सोचा। पर उसने बत्ती बुझा दी और करवट बदल ली, और अपने मन में से ईर्ष्या और द्वेष-भरे विचार निकालने की कोशिश करने लगा जो इस भूतपूर्व मित्र ने उसके मन में उठ... ये।

इस बीच आन्ना फ्योदोरोव्ना भी अपनी आदत के मुताबिक अपने ..., बेटी और बौढ़ सी सहेली पर क्रास का चिह्न बनाकर, और उन्हें

चुनकर अपने कमरे में चली गई। बड़ी मुद्दत के बाद आज पहली बार एक ही दिन में उसने इतनी विभिन्न और गहरी भावनाओं का अनुभव किया था। कुछ तो स्वर्गीय काउण्ट की विषादमयी एवं सजीव स्मृतियों के कारण, कुछ इस युवा छैले का खयाल करके जिसने इतनी बेहयाई से उसके पैसे झाड़ लिए थे, उसका मन बहुत विचलित हो उठा था। वह चैन से प्रार्थना भी नहीं कर पाई। तिसपर भी, रोज़ की तरह उसने कपड़े बदले, पलंग के पास तिपाई पर रखे क्वास का आधा गिलास पिया और पड़ रही। (क्वास का गिलास हर रोज़ इस समय वहां रख दिया जाता था।) उसकी चहेती बिल्ली चुपचाप कमरे में सरक आई। उसने बिल्ली को अपने पास बुलाया और उसकी पीठ सहलाने लगी, और बिल्ली की धीमी धीमी आवाज़ सुनने लगी।

'इस बिल्ली के कारण मैं सो नहीं पा रही हूं,' उसने सोचा और बिल्ली को धकेलकर पलंग के नीचे पटक दिया। बिल्ली बिना आवाज़ किए, मुलायम, रोएंदार पूंछ टेढ़ी किए अंगीठी के चबूतरे पर चढ़ गई। उसी वक्त नौकरानी अपना नमदा उठाए अन्दर आई, नमदे को फर्श पर बिछाया, बत्ती बुझाई, देव प्रतिमा के आगे लैम्प जलाया, और लेटते ही खर्राटे भरने लगी। पर आन्ना फ्योदोरोव्ना को नींद नहीं आई और उसके बेचैन दिल को शान्ति नहीं मिली। ज्योंही वह आंखें बन्द करती, हुस्सार का चेहरा सामने आ जाता। जब आंखें खोलती तो कमरे की सब चीज़—कमोड, मेज़, लटकते सफेद फ्राक, जिनपर देव-प्रतिमा के लैम्प की धीमी सी रोशनी पड़ रही थी, सभी अजीब-अजीब शक्लों में उसके प्रतिरूप-से बनकर नज़र आने लगते। एक क्षण वह ऐसा महसूस करती जैसे गरम रजाई में उसका दम घुट रहा हो, दूसरे क्षण वह घड़ी की टनटन या नौकरानी के खर्राटों से परेशान होने लगती। उसने लड़की को जगा दिया और गुस्से में बोली कि खर्राटे मत ले। उसके दिमाग में बेटी, स्वर्गीय काउंट तथा छोटे काउंट के चेहरे और नाच के खेल की स्मृतियां अजीब तरह से घुल-मिल रही थीं। किसी-किसी वक्त उसकी आंखों के सामने एक तस्वीर खिंच जाती—वह स्वर्गीय काउण्ट के साथ नाच रही है, उसे अपने गोरे-गोरे कंधे नज़र आते, उनपर किसीके होंठों का अनुभव होता, फिर उसे अपनी बेटी, छोटे काउण्ट की बाहों में, नज़र आती। उत्सुकता फिर खर्राटे भरने लगी थी ...

'उफ़, नहीं ! अब लोग बदल गए हैं, वह आदमी आग और पानी

"तुम करते क्यों नहीं कहत रहे हो?" उसने काउण्ट से पूछा। [illegible] करने के इरादा रहा था।

"मेरी करने की इच्छा नहीं हो रही है, न मालूम क्यों। तुम बेशक [illegible] मुझे इसकी जरूरत नहीं है।"

और वह कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलने लगा।

[illegible] की उम्मीद नहीं है", ओब्लोन्स्की ने काउण्ट के शब्दों को [illegible] का बड़ा शौक था। परन्तु [illegible] के [illegible] दिन ही दिन में [illegible] लगा था। ऐसा उसने [illegible] किया। [illegible] कि [illegible] काउण्ट का [illegible] दूसरी [illegible] के [illegible] रहे हैं [illegible] नहीं। [illegible] तरह [illegible] है। [illegible] और [illegible] मुझमें [illegible] और नहीं [illegible] के [illegible] कि काउण्ट [illegible]

[illegible]

[illegible] ओब्लोन्स्की [illegible] काउण्ट का [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चुनकर अपने कमरे में चली गई। बड़ी मुद्दत के बाद आज पहली बार एक ही दिन में उसने इतनी विभिन्न और गहरी भावनाओं का अनुभव किया था। कुछ तो स्वर्गीय काउण्ट की विषादमयी एवं सजीव स्मृतियों के कारण, कुछ इस युवा छैले का खयाल करके जिसने इतनी बेहयाई से उनन पैसे भाड लिए थे, उसका मन बहुत विचलित हो उठा था। वह चैन से प्रार्थना भी नहीं कर पाई। तिसपर भी, रोज की तरह उसने कपड़े बदले, पलंग के पास तिपाई पर रखे क्वास का आधा गिलास पिया और पड रही। (क्वास का गिलास हर रोज इस समय वहां रख दिया जाता था) उसकी चहेती बिल्ली चुपचाप कमरे में सरक आई। उसने बिल्ली को अपने पास बुलाया और उसकी पीठ सहलाने लगी, और बिल्ली की धीमी धीमी आवाज सुनने लगी।

'इस बिल्ली के कारण मैं सो नहीं पा रही हूं,' उसने सोचा और बिल्ली को धकेलकर पलंग के नीचे पटक दिया। बिल्ली बिना आवाज किए, मुलायम, रोंएदार पूंछ टेढ़ी किए अंगीठी के चबूतरे पर बढ़ गई। उसी वक्त नौकरानी अपना नमदा उठाए अन्दर आई, नमदे को फर्श पर बिछाया, बत्ती बुझाई, देव प्रतिमा के आगे लैम्प जलाया, और लेटते ही खर्राटे भरने लगी। पर आन्ना फ्योदोरोव्ना को नींद नहीं आई और उसके बेचैन दिल को शान्ति नहीं मिली। ज्योंही वह आंखें बन्द करती, हुस्सार का चेहरा सामने आ जाता। अब आंखें खोलती तो कमरे की सब चीजें—कमाड, मेज, लटकते सफेद फ्रॉक, जिनपर देव-प्रतिमा के लैम्प की धीमी-सी रोशनी पड रही थी, सभी अजीब-अजीब शक्लों में उसके प्रतिरूप-से बनकर नजर आने लगते। एक क्षण वह ऐसा महसूस करती जैसे गरम रजाई में उसका दम घुट रहा हो, दूसरे क्षण वह घड़ी की टनटन या नौकरानी के खर्राटों से परेशान होने लगती। उसने लड़की को जगा दिया और गुस्से से बोली कि खर्राटे मत ला। उसके दिमाग में बेटी, स्वर्गीय काउंट तथा छोटे काउंट के चेहरे और ताश के खेल की स्मृतियां अजीब तरह से घुल-मिल रही थीं। किसी-किसी वक्त उसकी आंखों के सामने एक तस्वीर खिंच जाती—वह स्वर्गीय काउण्ट के साथ नाच रही है, उसे अपने गोरे-गोरे कंधे नजर आते, उनपर किसीके होंठों का अनुभव होता, फिर उसे अपनी बेटी, छोटे काउण्ट की बाहों में, नजर आती। उत्सुकता फिर खर्राटे भरने लगी थी···

'उफ, नहीं ! अब लोग बदल गए हैं, वह आदमी आग और पानी

के मेरी खातिर कुछ सकता था। और कुत्ता भी क्यों नहीं? वह यह दूसरा आदमी कुछ ज्यादा कमीना है, इस बार सबों की तरह मो [illegible] होता, अपनी जीत पर मस्त। उसे यह ख़याल तक न आया कि उस [illegible] मतलब [illegible] था है। पर इसका मतलब था कि [illegible] उसने [illegible] घुटने टेककर गाई थी, 'तुम क्या चाहती हो? [illegible] [illegible] मैं हंसते हुए तुम्हारी खातिर [illegible] [illegible]।' [illegible] मैं [illegible] को [illegible] भी देता।'

[illegible] [illegible] में किसी के [illegible] को [illegible] हुई। कोई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुई [illegible] आई। उसका चेहरा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सिर से [illegible] [illegible] रही थी। उसके [illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] रही थी। [illegible] यह माँ के [illegible] [illegible] लिए [illegible]

सकती थी, पर वह बहुत ही सीधा-सादा और चुप्पू किस्म का आदमी था और कब का इसके मन पर से उतर भी चुका था। पर काउण्ट को याद करते ही उसका मन गुस्से और क्षोभ से भर उठता। 'नहीं, यह वह व्यक्ति नहीं है,' वह मन ही मन कहती। उसकी कल्पना का वीर नायक दूसरे ही प्रकार का व्यक्ति था—सर्वांगीण सुन्दर, मन-वचन-कर्म से सुन्दर। उसके साथ, सुहावनी रात के समय, प्रकृति के स्निग्ध विलास-कानन में प्रेम करते हुए, प्रकृति का सर्वव्यापी सौन्दर्य अनुचित नहीं होगा। लीज़ा के मन में अपने आदर्श प्रेम की धारणा ज्यों की त्यों बनी थी। उसे भौंडी यथार्थता के अनुकूल बनाने के लिए लीज़ा ने अपने आदर्श को छोटा नहीं किया था।

विधाता ने हर प्राणी को प्रेम करने की क्षमता समान रूप से दी है। पर लीज़ा की प्रेम-क्षमता अविकल और अक्षय बनी रही थी। कारण, उसका जीवन एकान्त में कटता था, और आसपास अपनी रुचि का कोई व्यक्ति न था। इससे सुख के साथ असन्तोष भी था। अब तो इस स्थिति में रहते उसे इतनी मुद्दत हो चुकी थी कि उसके लिए किसी नवागन्तुक पर अपना प्रेम लुटा देना असम्भव हो गया था। किसी-किसी समय वह अन्तर्मुखी हो, हृदय में छिपी भावनाओं के खजाने को निहारने लगती। उसका रोम-रोम पुलकित हो उठता। हमारी हार्दिक कामना है कि वह आजीवन अपने इस छोटे-से सुख में सुखी रह सके। कौन जाने, शायद यही जीवन का सबसे गहरा और परमसुख हो, यही जीवन का सच्चा और सभाव्य सुख हो!

'हे भगवान!" वह बुदबुदाई, "क्या यह सम्भव है कि [redacted] यौवन और सुख से वंचित रह गई हूं? मैं उनका कभी भी अनुभव नहीं कर पाऊंगी? क्या यह सच है?" उसने आंख उठाकर आकाश की ओर देखा। चांद-तारों से जगमगाते आकाश में, सफेद बादलों के पुंज चन्द्रमा की ओर जाते हुए तारों को ढकते जा रहे थे। 'यदि सबसे आगे वाला वह बादल चन्द्रमा को छू गया तो यह सच है,' उसने मन ही मन कहा। बादल के धुंधलके से चांद का निचला भाग ढकने लगा और धीरे-धीरे ताल, लाइम वृक्षों के शिखरों तथा घास पर चांदनी मन्द पड़ने लगी, पेड़ों का धूमिल आकार और भी अस्पष्ट होने लगा। प्रकृति को ढकने-वाले इन उदास पर्दों के पीछे, हल्की-हल्की हवा बहने लगी, पत्ते सर-सराने लगे। ओस से भीगे पत्तों, गीली मिट्टी और लीलक के फूलों की

महक के झोंके खिड़की में से अन्दर आने लगे।

'नहीं, यह सच नहीं,' उसने दिल को ढाढ़स बंधाते हुए कहा, 'आज रात यदि किसी बुलबुल के गाने की आवाज़ आई तो मैं समझूंगी कि इस तरह उदास होना पागलपन है, और निराश होने का कोई कारण नहीं।' बड़ी देर तक वह चुपचाप किसीकी प्रतीक्षा में बैठी रही। किसी-किसी वक्त चांद बादलों की ओट में से झांकता जिससे सामने का दृश्य खिल उठता। फिर वह छिप जाता और सारे दृश्य को अपने आंचल से ढक देता। उसकी आंखें झपकने लगीं। सहसा ताल की ओर से बुलबुल की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ बिल्कुल साफ थी। मुग्ध [illegible] ने आंखें खोलीं। चारों ओर निस्तब्धता थी, प्रकृति अपना वैभव लुटा रही थी। नीला की आत्मा नये उल्लास से भर उठी। वह कोहनियों के बल आगे की ओर झुकी। एक सुन्दर उदासी उसके हृदय में अंगड़ाइयां लेने लगी। आंखों में किसी असीम और पावन प्रेम के आंसू छलछला उठे। यह प्रेम पूर्ति के लिए छटपटा रहा था। इन निर्मल, स्वच्छ आंसुओं में सान्त्वना भरी थी। नीला ने खिड़की के तख्ते पर बाहें टिका लिए और उनपर सिर रख दिया। दिल में से, अपने-आप, उमड़ी गहरी प्यारी प्रार्थना के स्वर उठने लगे। बैठे-बैठे उसे झपकी आ गई। उसकी आंखें आंसुओं से तर थीं।

किसीने उसे छुआ। उसकी नींद टूट गई। स्पर्श कोमल तथा प्रिय था। उसकी पकड़ उसकी बांह पर गहरी होने लगी। सहसा उसे इस बात का बोध हुआ कि वह यहां पर है, हल्की-सी चीख उसके मुंह में से निकली, वह उछलकर खड़ी हो गई, और अपने-आपको मनाते हुए कि वह हरगिज़ आनन्द नहीं हो सकता जो चांदनी में इस तरह [illegible] खिल रहा था, वह कमरे में से भाग खड़ी हुई।

१५

वह आनन्द ही था। खिड़की के शीशे पर [illegible] हुआ वह कमरे में अन्दर आया। यह देखकर आनन्द [illegible] हुआ और ओस से भीगी घास पर चलता हुआ नीला बाग के अन्दर घुस गया। [illegible] वह [illegible]। 'कैसा पागल हूं मैं!' उसने [illegible] कहा, [illegible] किया। मुझे अधिक सावधान होना

चाहिए था, उसे आवाज देकर जगाना चाहिए था। कैसा भोंड़ा हूं मैं।' वह एक जगह रुक गया और कान लगाकर सुनने लगा। चौकीदार फाटक में से बाग के अन्दर आ गया था, और लाठी घसीटता हुआ, रेतीली पगडंडी पर चल रहा था। उसे छिप जाना चाहिए था। वह ताल की ओर दौड़ा। मेंढक डरकर उसके पावों के नीचे से उछल-उछलकर ताल में कूदने लगे। वह चौंका। उसके पाव भीग रहे थे पर वह जमीन पर बैठ गया, और मन ही मन सारी घटनाओं पर विचार करने लगा, 'मैं बाड़ से कूदकर अन्दर आया, पर लीजा की खिड़की को ढूंढने लगा, आखिर मुझे लीजा की सफेद आकृति नजर आई। मैं दबे पावों उसके पास गया। मैं नहीं चाहता था कि आहट हो। फिर मैं लौट गया। बार-बार मैं यही करने लगा। उसके नजदीक जाता, फिर लौट पड़ता। कभी मुझे यकीन हो जाता कि लीजा मेरा इन्तजार कर रही है। तब मुझे लगता कि वह कुछ नाराज भी है कि मैंने उसे बहुत देर इन्तजार में रखा। पर शीघ्र ही मेरा विचार बदल जाता। उस जैसी लड़की इतनी जल्दी मिलने के लिए तैयार कभी नहीं होगी। आखिर मैंने सोचा कि देहातिन शर्मा रही है, सोने का बहाना कर रही है, और मैं उसके पास जा पहुंचा। मगर वह सचमुच सो रही थी। किसी कारण मैं वहां से [illegible] गया, पर फिर मुझे अपनी भीरुता पर शर्म आने लगी। मैं लौट पड़ा और सीधा उसके बाजू पर हाथ रख दिया।' चौकीदार फिर एक बार खांसा और बाग में से बाहर जाने लगा। फाटक के चरमराने की आवाज आई। किसीने जोर से लीजा के कमरे की खिड़की बन्द कर दी। अन्दर से शटर भी जोर से बन्द करने की आवाज आई। कात्यूष्ट मन ही मन क्षुब्ध हो उठा। काश कि वह मौका फिर मिल सके! दूसरी बार ऐसी बेवकूफी कभी न करूंगा। कितनी प्यारी लड़की है! ओस से भीगी! प्यार करने के लिए बनी है। मैंने उसे हाथ में से जाने दिया! कैसा मूर्ख हूं मैं!' उसकी नींद काफूर हो गई। खीज में जोर-जोर से पांव पटकता हुआ वह लाइम वृक्षों के बीच रास्ते पर चलने लगा।

पर उस शान्त, निस्तब्ध रात्रि में उस जैसे प्राणी ने भी शान्ति का वरदान पाया। उसका हृदय धैर्यपूर्ण उदासी और प्रेम की लालसा से भर उठा। लाइम वृक्षों के घने पत्तों में से चन्द्रमा की रश्मियां छन-छनकर कच्चे रास्ते पर पड़ रही थीं। रास्ते पर जगह-जगह घास और सूखे डंठल थे। जमीन चितकबरी-सी लग रही थी। टेढ़ी-मेढ़ी शाखों के एक

[illegible] दिखती थी, [illegible] ऊँचे [illegible] में [illegible]
[illegible] के [illegible] किसी-किसी [illegible] एक-दूसरे से [illegible]
[illegible] चारों ओर [illegible]
[illegible] विचित्र [illegible]
[illegible] कैसी [illegible] है !" [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बताया कि वह खिड़की पर मेरा इन्तज़ार करेगी। यह भी कहा कि मैं खिड़की के रास्ते उसके कमरे में चला जाऊं। व्यवहार-कुशलता से यही लाभ होता है। इधर तुम बुढ़िया के साथ बैठे हिसाब जोड़ रहे थे, उधर मैं यह दाव खेल रहा था। तुमने खुद भी तो उसे कहते सुना था कि वह आज रात खिड़की में बैठकर ताल का नज़ारा देखेगी।"

"हां, यही उसने कहा था।"

"बस यही बात है। मैं निश्चय नहीं कर पा रहा हूं कि यह बात उसने अचानक कह दी थी या जान-बूझकर। शायद उसके मन में यह न रहा हो, पर जो कुछ मैंने देखा, वह सब इसके उलट बैठता है। सारे मामले का अन्त कुछ अजीब-सा हुआ। मुझसे बड़ी बेवकूफी की बात हो गई," उसने कहा। उसके होंठों पर अनुतापपूर्ण मुस्कान थी।

"कैसे? तुम इस वक्त कहां से आ रहे हो?"

काउण्ट ने सारी घटना कह सुनाई। पर वार्ता में खिड़की तक पहुंचने से पहले बार-बार अपने सकुचाने और लौट पड़ने का जिक्र नहीं किया।

"अपने हाथों से सब काम चौपट कर आया हूं। मुझे ज्यादा दिलेरी से काम करना चाहिए था। वह चीखी और उठकर भाग गई।"

"चीखी और उठकर भाग गई," कोरनेट ने दोहराकर कहा। काउण्ट को मुस्कराता देखकर उसके भी होंठों पर बेबस-सी मुस्कराहट आ गई। शुरू से उसपर काउण्ट का गहरा प्रभाव रहा था।

"हां, तो अब सोया जाए।"

कोरनेट ने करवट बदली, दरवाज़े की ओर पीठ की और चुपचाप दसेक मिनट तक लेटा रहा। कहना कठिन है कि उस समय उसकी अन्तर्तम की गहराइयों में क्या कुछ हो रहा था, पर जब दूसरी बार उसने करवट बदली तो उसके चेहरे पर वेदना और दृढ़ संकल्प की छाप थी।

"काउण्ट तुर्बीन!" उसने चिल्लाकर कहा।

"क्या है? होश में तो हो?" काउण्ट ने धैर्य से कहा। "क्या है, कोरनेट पोलोज़ोव?"

"काउण्ट तुर्बीन, तुम नीच आदमी हो!" पोलोज़ोव ने चिल्लाकर कहा और पलंग पर से उठकर खड़ा हो गया।

इवान इल्यीच की मृत्यु

अदालत के विशाल भवन में मेलवीन्स्की वाले मुकद्दमे की सुनवाई हो रही थी। बीच में जब थोड़ी देर के लिए विश्राम की छुट्टी हुई तो न्यायालय के सदस्य और पब्लिक प्रोसेक्यूटर इवान येगोरोविच शेबेक के दफ्तर में जा बैठे। गप्प-शप्प का विषय था क्रासोव वाला मुकद्दमा। फ्योदोर वसील्येविच बड़े जोरों से कह रहा था कि यह मुकद्दमा अदालत के अधिकार-क्षेत्र से बाहर है परन्तु इवान येगोरोविच अपनी बात पर अड़ा हुआ था। प्योत्र इवानोविच ने इस बहस में शुरू से ही कोई भाग न लिया। वह बैठा अखबार देख रहा था जो उसे अभी-अभी मिला था।

"दोस्तो !" उसने कहा, "इवान इल्यीच का तो स्वर्गवास हो गया है।"

"नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है ?"

"यह लिखा है, पढ़ लो," उसने फ्योदोर वसील्येविच के हाथ में अखबार देते हुए कहा। अखबार अभी-अभी आया था, अभी छापेखाने की स्याही भी उसपर से न सूख पाई थी।

एक काले हाशिये के अन्दर लिखा था, "प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना गोलोवीना अपने सम्बन्धियों तथा मित्रों को यह दु:खद समाचार देती है कि उनके प्रिय पति न्यायालय के सदस्य इवान इल्यीच गोलोवीन गत ४ फरवरी, १८८२ को स्वर्ग सिधार गए। अन्त्येष्टि क्रिया शुक्रवार को एक बजे होगी।"

इवान इल्यीच इन्हीं सज्जनों के साथ काम करता था, जो इस समय एक साथ बैठे बातें कर रहे थे। सभी उसके मित्र थे। वह कई हफ्तों से

बीमार था और सुनने में आता था कि उसकी बीमारी का कोई इलाज नहीं। उसकी नौकरी तो सुरक्षित थी, पर अफवाह थी कि यदि उसका देहान्त हो गया तो उसके स्थान पर अलेक्सेयेव को नियुक्त किया जाएगा और अलेक्सेयेव के स्थान पर या तो विन्निकोव की या श्तावेल की नियुक्ति होगी। इसलिए, इवान इल्यीच की मृत्यु की खबर सुनते ही पहला विचार जो दफ्तर में बैठे प्रत्येक सज्जन के मन में उठा, वह था उन नौकरियों, तबदीलियों तथा तरक्कियों के बारे में जो इस मृत्यु के परिणामस्वरूप उनके और उनके दोस्तों के बीच बटेंगी।

फ्योदोर वसील्येविच सोच रहा था, 'श्तावेल या विन्निकोव दोनों में से किसी के स्थान पर जरूर मुझे लगाया जाएगा। मुद्दत से मुझे इसका वचन दिया जा चुका है। अगर यह नौकरी मुझे मिल गई तो तनख्वाह में सीधा ८०० रूबल का फायदा होगा, और दफ्तरी खर्च के लिए माहवारी अनुदान अलग मिलेगा।'

प्योत्र इवानोविच सोच रहा था, 'मुझे फौरन अर्जी दे देनी चाहिए कि मेरे साले को कलूगा से तबदील कर दिया जाए। पत्नी खुश हो जाएगी। अब वह शिकायत तो न कर सकेगी कि मैंने उसके परिवार के लिए कुछ नहीं किया।'

"बड़े अफसोस की बात है। मैं जानता था कि यह बीमारी उसे लेकर रहेगी," प्योत्र इवानोविच ने कहा।

"आखिर उसे बीमारी क्या थी ?"

"डाक्टर किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सके। सबने अलग-अलग तशखीस की। आखिरी बार जब मैं उससे मिला तो उसकी सेहत मुझे पहले से बेहतर लगी।"

"छुट्टियों के बाद मैं उसे देखने नहीं जा सका। मन तो बार-बार करता था मगर सम्भव नहीं हो सका।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, पैसे की तंगी तो उसे नहीं रही होगी ?

"उसकी पत्नी के पास थोड़ा-बहुत था, पर जान पड़ता है कि बहुत कम।"

"हां तो, उनके पास जाना ही पड़ेगा। रहते बहुत दूर हैं।"

"तुम्हारे लिए तो हर जगह ही दूर है, तुम्हारे क्या कहने।"

"शेबेक मुझे कभी माफ नहीं करता, इसलिए कि मेरा घर नदी पार है," प्योत्र इवानोविच ने शेबेक की ओर देखकर मुस्कराते हुए

कहा। इसके बाद शहर के लम्बे-लम्बे फासलों की चर्चा होने लगी, और फिर वे सब उठकर अदालत के कमरे में चले गए।

मृत्यु-समाचार सुनकर तरह-तरह के अनुमान लगाए गए कि किस-किसको तरक्की मिलेगी और क्या-क्या तबदीलियां होंगी। मृत्यु एक ऐसे व्यक्ति की हुई थी जिससे वे सब बड़ी अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए हरेक सज्जन मन ही मन खुश भी हुआ कि मौत उसके मित्र की हुई है, उसकी अपनी नहीं हुई।

'ज़रा ख्याल तो करो, वह मर गया है, पर मैं वैसे का वैसा हूं,' हरेक के मन में यही विचार उठ रहा था। जिन लोगों का इवान इल्यीच से अधिक गहरा परिचय था—उसके तथाकथित दोस्त—वे साथ में यह भी सोच रहे थे कि अब एक और कड़ा फर्ज भी निभाना पड़ेगा—शिष्टाचार के नाते, अन्त्येष्टि क्रिया पर भी जाना पड़ेगा और विधवा के घर जाकर संवेदना भी प्रकट करनी पड़ेगी।

फ्योदोर वसील्येविच और प्योत्र इवानोविच इवान इल्यीच के सबसे बड़े दोस्त थे।

प्योत्र इवानोविच और इवान इल्यीच दोनों एक साथ पढ़े थे, इसके अलावा प्योत्र इवानोविच पर अपने मित्र के कई एहसान भी थे।

शाम को भोजन करते समय, उसने अपनी पत्नी को इवान इल्यीच की मृत्यु की खबर सुनाई और कहा कि अब उम्मीद बंधती है कि तुम्हारा भाई तबदील होकर इस हलके में आ जाएगा। इसके बाद रोज़ की तरह आराम करने के बजाय उसने अपना फ्राक-कोट पहना और इवान इल्यीच के घर की ओर चल पड़ा।

वहां पहुंचा तो फाटक पर एक बग्घी और दो किराये की गाड़ियां खड़ी थीं। नीचे, ड्योढ़ी में, दीवार के साथ, कपड़े टांगने की खूंटियों के पास, ताबूत का ढक्कन रखा था। ढक्कन फुंदियों और चमकते सुनहरे गोटे से सजा था। दो स्त्रियां, काले वस्त्र पहने, अपने कोट उतार रही थीं। उनमें से एक को वह जानता था। वह इवान इल्यीच की बहिन थी। दूसरी स्त्री से वह बिल्कुल परिचित नहीं था। उसी समय प्योत्र इवानोविच का एक मित्र सीढ़ियों पर से उतरता नज़र आया। उसका नाम श्वार्ज़ था। प्योत्र इवानोविच को देखते ही वह रुक गया और इस तरह आंख का इशारा किया मानो कह रहा हो, 'देखा? इवान इल्यीच तो सारा गुड़-गोबर कर गया। लेकिन हम-तुम सही-सलामत हैं।'

मृत्यु की शान्ति आज भी श्वार्ज़ में एक विशेष वाक्चातुर्य और सजीवता लिए हुए थी। अंग्रेज़ी काट के गलमुच्छे, छरहरे बदन पर फ़्राक-कोट। यह गम्भीरता उसकी स्वाभाविक चंचलता से बिल्कुल मेल न खाती थी। पर इस मौके पर विशेष रूप से आकर्षक लग रही थी। कम से कम प्योत्र इवानोविच को तो ऐसा ही लगा।

प्योत्र इवानोविच एक तरफ़ हटकर खड़ा हो गया, ताकि स्त्रियाँ पहले जा सकें और उनके बाद उनके पीछे-पीछे सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। श्वार्ज़ वहीं खड़ा रहा और उसका इन्तज़ार करने लगा। प्योत्र इवानोविच इसका अर्थ समझ गया : वह ज़रूर यह फ़ैसला करने के लिए रुक गया है कि आज शाम कहाँ बैठकर ताश खेला जाए। स्त्रियाँ विधवा से मिलने अन्दर चली गईं। श्वार्ज़ के होंठ गम्भीरता से भिंचे हुए थे और आँखों में चंचलता खेल रही थी। उसने अपनी भौंहों के इशारे से प्योत्र इवानोविच को समझा दिया कि मृत व्यक्ति की देह कहाँ पर रखी है।

जैसा कि ऐसे मौकों पर हुआ करता है प्योत्र इवानोविच अन्दर जाते वक्त समझ नहीं पा रहा था कि उसे क्या करना होगा। वह जानता था कि ऐसे मौकों पर छाती पर क्रास का चिह्न बनाया जाता है। पर यह पक्का मालूम नहीं था कि झुककर नमस्कार करना चाहिए या खड़े-खड़े ही। इसलिए उसने जो कुछ किया वह कोई बीच की ही चीज़ थी— कमरे में प्रवेश करते ही उसने क्रास का चिह्न बनाया और एक ऐसी हरकत की जिसे झुकना भी कहा जा सकता है और खड़े रहना भी। इस दौरान उसने, जहाँ तक बन पड़ा, कमरे में चारों ओर देखा। दो युवक, जो शायद इवान इल्यीच के भतीजे थे, और जिनमें से एक विद्यार्थी था, बाहर आने से पहले क्रास का चिह्न बना रहे थे। एक बुढ़िया बिल्कुल चुपचाप, मूर्तिवत् खड़ी थी। उसके पास एक दूसरी स्त्री, अनोखे ढंग से भौंहें चढ़ाए उसके कानों में कुछ फुसफुसा रही थी। फ़्राक-कोट पहने, धुन का पक्का एक उत्साही पादरी, ऊँचे स्वर में पाठ किए जा रहा था। उसके लहजे से ज़ाहिर होता था कि वह किसी का भी विरोध बर्दाश्त नहीं करेगा। भण्डारे का सेवक, गेरासिम, दबे पाँव, फ़र्श पर कुछ छिड़कते हुए, प्योत्र इवानोविच के सामने से गुज़रा। उसे देखते ही फ़ौरन प्योत्र इवानोविच को भास हुआ जैसे देह सड़ने की हल्की हल्की बू आ रही हो। आख़िरी बार जब वह इवान इल्यीच को देखने गया तो यही आदमी उसके कमरे में खड़ा था, बीमार के सिरहाने

खड़ा उसकी सेवा-टहल कर रहा था। इवान इल्यीच को यह टहलुआ बहुत अच्छा लगता था। कोने में एक मेज पर देव प्रतिमाएं रखी थीं। प्योत्र इवानोविच बार-बार क्रास का चिह्न बनाता, और ताबूत और पादरी के बीच, मेज की दिशा में बार-बार थोड़ा-थोड़ा झुककर नमस्कार कर लेता था। जब उसे भास हुआ कि वह जरूरत से ज्यादा त्रास के चिह्न बना चुका है तो वह रुककर एकटक मृत व्यक्ति के चेहरे की ओर देखने लगा।

सभी मृत शरीर की तरह यह शरीर भी, ताबूत में रखे तकियों के बीच धसा हुआ बड़ा बोझल लग रहा था। अवयव अकड़े हुए थे, सिर जैसे स्थायी तौर पर आगे की ओर झुका हुआ था। अन्य लाशों की भांति, इसका भी माथा पीले मोम का बना जान पड़ता था। धसी हुई कनपटियां चमक रही थीं, नाक आगे को निकली हुई ऊपरवाले होंठ को दबाती हुई-सी जान पड़ती थी। इवान इल्यीच में बड़ा परिवर्तन आ गया था। आखिरी बार जब प्योत्र इवानोविच उससे मिला था तो [illegible] इतना दुबला नहीं लग रहा था। फिर भी सभी मृत व्यक्तियों की तरह, उसके चेहरे का भाव अधिक सुन्दर—या यों कहें, अधिक ओजपूर्ण—लगने लगा था। ऐसा वह जीवन में कभी न लगा था। इस भाव से जान पड़ता था मानो इवान इल्यीच कह रहा हो, जो कुछ मुझे करना था, मैं कर चुका और जो कुछ किया, अच्छा ही किया। इसके अतिरिक्त, ऐसा जान पड़ता था मानो वह जीवित लोगों की भर्त्सना कर रहा हो या उन्हें चुनौती दे रहा हो। प्योत्र इवानोविच को चुनौती का भाव असंगत-सा लग रहा था। कम से कम इसका उसके अपने साथ कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता था। वह विचलित-सा महसूस करने लगा। उसने जल्दी-जल्दी छाती पर क्रास का चिह्न बनाया और कमरे से बाहर निकल आया। उसे स्वयं भी अपनी जल्दबाजी बड़ी अशिष्ट लग रही थी। सामनेवाले कमरे में पहुंचकर उसने देखा कि श्वार्त्स उसका इन्तजार कर रहा है। वह पैर पसारकर खड़ा था और टोप हाथ में लिए हुए था। उसके दोनों हाथ पीठ के पीछे [illegible] थे और टोप [illegible] रहे थे। इस चुस्त, बांके, बने-ठने आदमी [illegible] देखने-भर की देर थी कि प्योत्र इवानोविच [illegible] फिर से [illegible]। प्योत्र इवानोविच ने समझ लिया कि [illegible] इन [illegible] से [illegible] अपने को कभी भी उदास नहीं होने देगा। [illegible]

— नहीं बात तय ही थी कि इवान इल्यीच का अन्त्येष्टि संस्कार इतनी [illegible] ना नहीं है कि उसके लिए हम अपनी रोज की बैठक स्थगित कर [illegible] आज भी शाम को नियमानुसार बैठक जमेगी, ताश की नई गड्डी [illegible] जाएगी और उस समय कमरे में मोमदार चार मोमबत्तियाँ [illegible]। लेकिन यह समझने का कोई कारण नहीं कि इस बात को लेकर [illegible] आज शाम का अपना मनबहलाव छोड़ दें। कमरे में से निकलते समय [illegible] इवानोविच का [illegible] बात समझकर श्वार्ज ने कान में कहा और [illegible] भी प्रस्ताव रखा कि चलो फ्योदोर वसील्येविच के यहाँ मिलेंगे और [illegible]। पर उस शाम प्योत्र इवानोविच के भाग्य में ताश खेलना नहीं बदा था। प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना और उसी समय अपने एकान्त [illegible] में पुरुष और स्त्रियों के साथ निकली। वह नाटे कद की मोटी औरत थी, [illegible] और नीचे का हिस्सा उसके ज्यादा चौड़ा था, हालांकि [illegible] था जैसे उसने इसका उल्टा परिणाम पाने की भरसक कोशिश की होगी। वह काला वस्त्र पहने थी और सिर पर जालीदार रूमाल बाँधे थी। उसकी त्योरियाँ ताबूत के पास खड़ी स्त्री की त्योरियों की तरह अजीब ढंग से चढ़ी हुई थीं। वह साथ की स्त्रियों को लाशवाले कमरे के दरवाजे तक ले आई और बोली, "[illegible] अन्दर चलिए, एक धार्मिक रस्म अदा करनी है।"

श्वार्ज एक बार झुककर वहीं रुक गया। निमंत्रण को उसने न तो स्वीकार किया और न ही ठुकराया। परन्तु प्योत्र इवानोविच पर नजर पड़ते ही प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना ने उसे पहचान लिया और आह भरते हुए सीधे उसके पास चली आई, और उसका हाथ पकड़कर बोली, "आप तो इवान इल्यीच के सच्चे दोस्त थे···मैं जानती हूँ।" यह कहकर वह उसकी ओर इस आशा से देखने लगी कि वह इसका कोई उचित जवाब देगा। और जिस भाँति प्योत्र इवानोविच जानता था कि अन्दर कमरे में उसे छाती पर क्रास का चिह्न बनाना था, उसी तरह यहाँ भी वह समझता था, कि उसे इस मौके पर उसका हाथ पकड़कर दबाना है, और ठण्डी साँस भरकर कहना है कि "मैं आपको यकीन दिलाता हूँ···" ऐसा ही उसने किया भी, और कर चुकने के बाद देखा कि इसका वांछित असर भी हुआ है। उसका दिल भर आया, और उसी तरह [illegible] भी।

"रस्म शुरू होने से पहले मुझे आपसे कुछ कहना है," विधवा ने

कहा, "आप अन्दर चलिए। चलिए मैं आपके बाज़ू का सहारा लेकर चलूंगी।"

प्योत्र इवानोविच ने उसे अपने बाज़ू का सहारा दिया और दोनों अन्दरवाले कमरों की ओर चले गए। जब वे श्वार्ज़ के पास से गुज़रे तो श्वार्ज़ ने प्योत्र इवानोविच को आंखों से इशारा किया, मानो अपनी निराशा जता रहा हो, 'लो, खेल लो अब ताश! बुरा नहीं मानना यदि अब हम तुम्हारी जगह किसी दूसरे आदमी को ढूंढ लें। जब यहां से छुट्टी मिले तो बेशक चले आना, खेल में पांचवें की जगह पर बैठ जाना।'

प्योत्र इवानोविच ने और भी गहरी और शोकपूर्ण आह भरी जिस पर प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना ने कृतज्ञता से उसकी उंगलियों को दबाया। बैठक में पहुंचकर दोनों एक मेज़ के पास आ बैठे। कमरे की दीवारों पर गुलाबी रंग का छींटदार कपड़ा लगा था, और एक मद्धिम-सा लैम्प जल रहा था। विधवा सोफ़े पर बैठ गई और प्योत्र इवानोविच एक स्टूल पर जिसपर स्प्रिंगदार गद्दा लगा था। गद्दे के स्प्रिंग टूटे हुए थे, इसलिए जब वह उसपर बैठा तो गद्दा एक तरफ़ को झुक गया। प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना चाहती तो थी कि उसे पहले से सावधान कर दे और वहां बैठने से रोक दे पर स्थिति को देखते हुए उसने कहना मुनासिब नहीं समझा। स्टूल पर बैठते हुए प्योत्र इवानोविच को याद आया कि जब इवान इल्यीच इस बैठक को सजा रहा था तो उसने इसकी राय पूछी थी कि हरे फूलोंवाली गुलाबी छींट का कपड़ा लगाना चाहिए या कोई और। स्वयं बैठने के लिए सोफ़े की ओर जाते हुए विधवा जब मेज़ के पास से गुज़री तो उसका जालीदार रूमाल मेज़ के साथ अटक गया। (बैठक मेज़-कुर्सियों और तरह-तरह के सामान से ठसाठस भरी थी)। उसे छुड़ाने के लिए प्योत्र इवानोविच तनिक-सा अपनी जगह पर से उठा। स्प्रिंगों पर से बोझ हटते ही उसे धचका लगा। विधवा स्वयं ही जाली छुड़ाने लगी और प्योत्र इवानोविच विद्रोही स्प्रिंगों को दबाते हुए एक बार फिर बैठ गया। पर अभी विधवा अपनी जाली पूरी तरह छुड़ा नहीं पाई थी, इसलिए प्योत्र इवानोविच फिर एक बार थोड़ा-सा उठा, जिसपर फिर स्प्रिंग उछले और उसे झटका लगा। जब जाली छूट गई तो विधवा ने एक सफ़ेद रेशमी रूमाल निकाला और रोने लगी। जाली छुड़ाने की घटना से और स्टूल के स्प्रिंगों से जूझने के कारण प्योत्र इवा-

[illegible] पहले ही बुला था, इसलिए वह केवल नाक-भौंह [illegible] पर अब इसके दुर्भाग्य के मौहर मार्कोविच ने उधर [illegible] और [illegible] कि [illegible] ने आर्थिक [illegible] [illegible] है [illegible] देख रहा था [illegible] का [illegible] रहा। [illegible] कर दिया और [illegible] इवानो-[illegible] को [illegible] न रहा। फिर [illegible] [illegible] इस [illegible] [illegible] का [illegible] करना पड़ रहा [illegible] और [illegible] लगी।

[illegible] कीजिए,' उसने दुखी किन्तु [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible]। प्योत्र इवानोविच ने सिगरेट सुलगा ली। [illegible] कि [illegible] से पूछ रही है कि [illegible] के लिए [illegible] सकता है और [illegible] और [illegible]। [illegible] उनसे [illegible] उसको [illegible] का बोध [illegible] था। [illegible] वह उसके साथ [illegible] पर [illegible] के बारे में बातें करने लगी। [illegible] बाद सोकोलोव बाहर [illegible] गया।

"मुझे [illegible] बात का पूरा ध्यान रखना पड़ता है," वह दांतों और मेज पर पड़ी अलबमों का एक तरफ हटा दिया। फिर प्योत्र इवानो-विच की सिगरेट पर नजर पड़ते ही वह झट से उठी और एक राखदानी ले आई। उसे डर था कि राख मेज पर न पड़ जाए। "अगर मैं कहूं कि अपने दुःख के कारण मैं अपने व्यावहारिक कामों की ओर ध्यान नहीं दे सकती, तो यह भी मात्र बहाना होगा। यदि कोई चीज मुझे सान्त्वना दे सकती है, कम से कम मेरा ध्यान दूसरी तरफ हटा सकती है तो यही कि उनकी खातिर मैं यह सब काम कर रही हूं।" उसने फिर रूमाल निकाल लिया, मानो रोना चाहती हो, और फिर मानो कोशिश करके उसने अपने को काबू में कर लिया, और हल्के से सिर झटककर बड़ी स्थिरता से बातें करने लगी।

"एक काम के बारे में मुझे आपसे सलाह लेनी है।"

प्योत्र इवानोविच धीरे से झुका, पर बड़ी सावधानी के साथ [illegible] न बजाने लगें।

"पिछले कुछ दिन उन्होंने बड़ी तकलीफ में काटे।"

"अच्छा ?" प्योत्र इवानोविच ने पूछा।

"बड़ी तकलीफ में। सारा वक्त दर्द से कराहते रहते थे। पूरे तीन दिन तक एक मिनट के लिए भी उन्हें चैन नहीं मिला। मैं बयान नहीं कर सकती, मैं हैरान हूं कि मैं यह सब बर्दाश्त कैसे कर पाई, तीन कमरे दूर तक उनकी आवाज सुनाई देती थी। आप अन्दाज नहीं लगा सकते कि मुझ पर क्या गुजरी।"

"इसका मतलब है कि वह अन्त तक होश में रहा, क्यों ?" प्योत्र इवानोविच ने पूछा।

"हां," वह धीमे से फुसफुसाई, "आखिरी घड़ी तक। मरने से केवल पन्द्रह मिनट पहले उन्होंने हमसे विदा ली और कहा कि वलोद्या को सामने से ले जाओ।"

प्योत्र इवानोविच को यह बात जरूर खटक रही थी कि दोनों पाखंड रच रहे हैं। फिर भी यह जानकर उसे बड़ा दुःख हुआ कि उस आदमी को इतना कष्ट भोगना पड़ा जिसे वह इतनी घनिष्ठता से जानता था, पहले एक चंचल और लापरवाह विद्यार्थी के नाते, फिर एक प्रौढ़ व्यक्ति के नाते, और बाद में साथी सहकारी के नाते। उसकी आंखों के सामने फिर इवान इल्यीच की लाश घूम गई—वही माथा, वही ऊपरवाले होंठ को दबाती हुई नाक। उसे अपने बारे में भय होने लगा।

'तीन दिन की घोर यन्त्रणा और उसके बाद मौत। क्यों, यह तो किसी वक्त मेरे साथ भी हो सकता है!' उसने सोचा और क्षण-भर के लिए उसे भय ने जकड़ लिया। फिर सहसा—और इसका कारण वह स्वयं नहीं जानता था—इस विचार ने उसको फिर ढाढ़स बंधाया कि मौत तो इवान इल्यीच की हुई है, उसकी तो नहीं हुई। उसकी तो मौत हो भी नहीं सकती, न ही होनी चाहिए। ऐसी चिन्ताओं से तो केवल मन उदास हो उठता है, और ऐसा कभी नहीं होने देना चाहिए। श्वार्ज के चेहरे से ही यह बात बड़ी सजीवता से प्रकट हो रही थी। इस प्रकार के तर्क से उसका मन फिर शान्त हो गया, यहां तक कि इवान इल्यीच की मृत्यु किन हालात में हुई, इसकी तफसील उसने सचमुच ध्यान से सुनी, मानो मृत्यु एक ऐसी दुर्घटना थी जो केवल इवान इल्यीच के साथ ही हो सकती थी—उसके साथ कभी नहीं।

इवान इल्यीच को कैसी घोर शारीरिक यन्त्रणा भोगनी पड़ी,

धूप-दीप, मृत देह तथा कार्बोलिक एसिड की गन्ध के बाद, प्योत्र इवानोविच को बाहर आकर ताजी हवा में सांस लेना विशेषकर अच्छा लगा।

"कहां चलें ?" कोचवान ने पूछा।

"अभी देर नहीं हुई। थोड़ी देर के लिए मैं फ्योदोर वसील्येविच के घर रुकूंगा।"

और उसी ओर वह चल दिया। वहां अभी उन्होंने पहली बाजी ही समाप्त की थी इसलिए अगली बाजी में वह बड़े आराम से पांचवें आदमी के स्थान पर जा बैठा।

२

इवान इल्यीच के जीवन की कहानी सरल, साधारण और भयंकर है।

इवान इल्यीच की मृत्यु ४५ वर्ष की अवस्था में हुई। वह न्याय परिषद् का सदस्य था। वह एक ऐसे सरकारी अधिकारी का बेटा था जिसने भिन्न-भिन्न मन्त्रालयों तथा महकमों में काम करने के बाद अपने लिए एक अच्छा स्थान बना लिया था। इस ढंग के आदमी आखिर ऐसे पद पर पहुंच जाते हैं जहां से उन्हें कोई हटा नहीं सकता, हालांकि वे कोई भी महत्वपूर्ण काम करने की योग्यता नहीं रखते। कारण एक तो, उनकी नौकरी लम्बी होती है, दूसरे, पद ऊंचा होता है। जिन पदों पर वे टिके रहते हैं वे केवल नाम के पद होते हैं मगर जो तनख्वाह उन्हें मिलती है वह नाममात्र नहीं होती। छः से दस हजार रूबल सालाना तक वे बुढ़ापे तक पाते रहते हैं।

ऐसा ही प्रिवी कौंसलर इल्या येफीमोविच गोलोवीन था—बहुत-सी अनावश्यक संस्थाओं का अनावश्यक सदस्य।

उसके तीन बेटे थे, जिनमें इवान इल्यीच दूसरा था। सबसे बड़े लड़के ने अपने बाप की ही तरह उन्नति की थी। हां, वह किसी दूसरे मन्त्रालय में काम करता था। शीघ्र ही उसकी भी नौकरी की अवधि उस सीमा पहुंचेगी जिसके आगे तनख्वाहें निष्क्रियता के आधार पर मिलती तीसरे बेटे का कुछ नहीं बन पाया। भिन्न-भिन्न पदों पर काम बदनाम हो गया और अब वह रेल के महकमे में कहीं कर रहा था। उसका पिता और उसके भाई, विशेषकर उनकी

ालियां, उससे मिलने से कतराती थीं, और यथासम्भव उसके अस्तित्व को ही भुलाए रहती थीं। उसकी बहिन की शादी बैरन शेफ के साथ हुई थी, जो अपने ससुर की ही तरह सेंट पीटर्सबर्ग में सरकारी अफसर था। इवान इल्यीच को लोग 'परिवार का गौरव' कहा करते थे। वह अपने बड़े भाई को तरह दुनियादार और तकल्लुफ करनेवाला नहीं था, न ही अपने छोटे भाई की तरह लापरवाह था। वह इन दोनों के बीच में था—चतुर, सजीव, आकर्षक व्यक्ति। वह और उसका छोटा भाई, दोनों कानून के कालेज में पढ़े थे। छोटा अपना कोर्स समाप्त नहीं कर पाया, पांचवीं कक्षा तक पहुंचने से पहले ही उसे विद्यालय से निकाल दिया गया। इवान इल्यीच ने बड़े अच्छे नम्बर पाकर कोर्स समाप्त किया। जिन दिनों वह कानून का विद्यार्थी था तब भी उसका चरित्र वैसा ही था जैसा कि बाद में सारी उम्र रहा योग्य, प्रसन्नचित्त, मिलनसार, नम्र स्वभाव और कर्तव्यनिष्ठ। वह हर उस बात को अपना कर्तव्य समझता था जिसे ऊंचे पदाधिकारी कर्तव्य समझते हैं। जी हुजूरी उसने कभी किसीकी नहीं की थी, न बचपन में और न ही बाद में, जब वह बड़ी उम्र का हो गया था। पर छोटी उम्र से ही वह अपने से ऊंचे पदवालों की ओर उसी तरह खिंचता रहा था जिस तरह पतंगा दीपशिखा की ओर खिंचता है। उसने उन्हींका रहन-सहन और उन्हींके विचार अपना रखे थे और उन्हींके साथ उठता-बैठता था। बचपन और जवानी के सब जोश ठंडे पड़ गए, उनका नाम-निशान तक बाकी न रहा था। किसी ज़माने में उसमें झूठा अभिमान और वासना रही थी। और अन्त में ऊंचे वर्गवालों के बीच वह कुछ देर के लिए उदारवादी भी रह चुका था। पर इन सब खेलों में वह अपनी सहजबुद्धि के सहारे औचित्य की सीमा के अन्दर ही अन्दर रहा।

पढ़ाई के ज़माने में उसने ऐसे-ऐसे काम किए थे जो उस समय उसे अत्यन्त घृणित लगे थे और उसे अपने से नफरत होने लगी थी। पर बाद में जब उसने देखा कि वही काम बड़े-बड़े आदमी बिना किसी दुविधा के कर रहे हैं, तो उसे वे सब भूल गए। उन्हें अच्छा तो वह अब भी न समझता था, पर उन्हें याद करके उसे पछतावा भी न होता था।

... की पढ़ाई समाप्त की तो उसके पिता ने ... लिए पैसे दिए। इनसे उसने घड़ी के चेन में एक बिल्ला

लटका लिया जिसपर फ्रेंच में 'रेस्पीस फोर्ने' (अन्त का अन्दाज लगा लेना) मुद्रा था, विद्यालय के अध्यक्ष से विदा ली, बड़ी शान से अपने दोस्तों के साथ डानन होटल में खाना खाया, और उसके बाद नई तर्ज का नया बेग, नये फैशन के सूट, कपड़े और शेव, नहाने-धोने का सामान सबसे बढ़िया दूकानों से खरीदा। फिर वह एक प्रान्तीय नगर की ओर रवाना हो गया जहां उसके पिता ने उसे गवर्नर के दफ्तर में विशेष सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त करवा दिया था।

अपने विद्यार्थी-जीवन की भांति प्रान्तीय नगर में भी जल्दी ही इवान इल्यीच ने अपना जीवन आरामदेह और सुखी बना लिया। अपना काम करना, अपनी तरक्की का भी ध्यान रखना, और साथ ही शिष्ट रुचि के अनुरूप आमोद-प्रमोद का भी रस लेना। कभी-कभी वह जिले में अपने चीफ के काम पर जाता, जहां अपने से नीचे और ऊपरवाले दोनों प्रकार के अधिकारियों के सामने आत्मसम्मान के साथ पेश आता था। अपना काम ईमानदारी से करता जिससे उसे अपने ऊपर गर्व का भास होता। यहां उसका काम 'पुराने धर्म' के मतावलम्बियों से निबटना होता था।

जब सरकारी काम कर रहा होता तो बावजूद अपनी तरुणावस्था और आमोदप्रियता के वह बहुत गुमसुम और लिखा लिखा रहता, यहां तक कि कठोर तक हो जाता। पर समाज के बीच वह हंसमुख और हाजिरजवाब होता और मन-मिजाज में रहता। उसका चीफ और चीफ की पत्नी, जिनके घर वह अक्सर आया-जाया करता था, उसे 'भले आदमी' कहा करते थे।

यहां उसका एक स्त्री के साथ सम्बन्ध भी हो गया। वह उन स्त्रियों में से था जो इस बांके युवा वकील पर रीझ गई थीं। इसके अलावा एक दूसरी स्त्री भी थी जो सिलाई की दुकान चलाने का काम करती थी। जब अक्सर लोग बाहर से आते उनके साथ पीना पिलाने की पार्टियां होतीं, और रात के भोजन के बाद दूर की एक गली में एक कोठरी पर भी आना-जाना रहता। अपने चीफ और अपने चीफ की पत्नी को खुश करने के लिए चापलूसी भी बरती जाती। पर यह सब एक शिष्टता के इतने ऊंचे स्तर पर किया जाता कि इसे किसी बुरे नाम से पुकारा जा सकता था। फ्रांसीसी कहावत के अनुसार कि 'जवानी में हर प्रकार के अनुभव की आवश्यकता है' सब चालू था। जो कुछ भी किया

आता साफ-सुथरे हाथों से, साफ-सुथरे कपड़े पहनकर, फ्रांसीसी भाषा बोलकर, और सबसे बड़ी बात यह कि ऊंची सोसाइटी में किया जाता, जिसका अर्थ है कि इसमें ऊंचे पदाधिकारियों की अनुमति होती।

इस तरह पांच साल तक इवान इल्यीच काम करता रहा। इस अवधि की समाप्ति पर कानून में तबदीली हुई। नई अदालतें बनाई गईं और उनके लिए नये अधिकारियों की जरूरत पड़ी।

इन नये अधिकारियों में इवान इल्यीच भी था।

उसके सामने जांच-मजिस्ट्रेट की नौकरी का प्रस्ताव रखा गया और वह उसने मंजूर कर लिया, हालांकि इससे उसे दूसरे इलाके में जाना पड़ना था, अपने मौजूदा सम्बन्ध तोड़ने पड़ते थे और वहां जाकर नये सम्बन्ध बनाने पड़ते थे। इवान इल्यीच को विदाई पार्टी दी गई, उसके दोस्तों ने उसके साथ मिलकर तसवीर खिंचवाई, जाते वक्त उन्होंने उसे एक चांदी का सिगरेट-केस भेंट किया। इस तरह वह अपने नये काम पर रवाना हुआ।

जांच-मजिस्ट्रेट के पद पर इवान इल्यीच उतना ही 'यथोचित' था, उतने ही सलीके से रहा, और उतनी ही योग्यता से उसने सरकारी और निजी कामों को अलग-अलग रखा और उसी तरह सबके आदर का पात्र बना जिस तरह उन दिनों, जब वह गवर्नर के विशेष सेक्रेटरी का काम किया करता था। पहली नौकरी की तुलना में उसे मजिस्ट्रेट का काम बहुत अधिक रोचक और प्रिय लगा। इसमें शक नहीं कि पहली नौकरी का भी अपना मजा था। जब दार्मर की दुकान की बनी चुस्त वर्दी पहने वेटिंग रूम में बैठे, ईर्ष्या-भरी नजरों से उसे देखनेवाले मुवक्किलों और अदालत के क्लर्कों के सामने से बड़े रोब से चलता हुआ वह अपने चीफ के दफ्तर में जाकर उसके साथ चाय पीता और सिगरेट के कश लगाता, तो उसके दिल में अजीब गुदगुदी होती। पर वहां पर उसके अधिकाराधीन लोगों की संख्या बहुत कम थी, केवल जिले का पुलिस-कप्तान और 'पुराने धर्म' के समर्थक जिनके साथ सरकारी काम के सिलसिले में उसे वास्ता पड़ता था। पर इनके साथ वह सज्जनता का, यहां तक कि दोस्तों का-सा व्यवहार करता, उन्हें यह महसूस कराता कि, देखो मेरे हाथ में वह ताकत है जिससे मैं चाहूं तो तुम्हें कुचल सकता हूं, फिर भी मेरा व्यवहार तुम्हारे साथ कितना मैत्रीपूर्ण और विनम्र है। इससे उसे अजीब सुख मिलता। पर उस समय ऐसे आदमियों की संख्या

बहुत कम थी। अब वह जांच-मजिस्ट्रेट हो गया था। अब वह महसूस करता था कि सभी लोग, यहां तक कि सबसे प्रतिष्ठित और आत्मतुष्ट लोग भी उसके अधिकार में हैं। सरकारी कागज पर कुछ शब्द लिखकर, मोहर लगाकर, [illegible] देर नहीं कि बड़े से बड़े और इसी से बड़े आदमी को भी वह अपने सामने पेश करवा सकता था, उसे गवाह बनाकर या [illegible] कर सकता है। यह इवान इल्यीच की उदारता थी कि [illegible] किया था, [illegible] उन्हें इसके सामने खड़े होकर उसके सवालों का जवाब देना पड़ता। इवान इल्यीच ने कभी अपने अधिकार का नाजायज फायदा नहीं उठाया। इसके विपरीत इसने उसका सदैव सद्भावना से उपयोग किया। वास्तव में उसकी दृष्टि में इस नई नौकरी का मुख्य आकर्षण ही इस बात में था कि शक्ति के साथ-साथ उसे अपनी दयालुता का भी ज्ञान रहता था। धीरे-धीरे ही उसने अपने काम में एक प्रकार की दक्षता प्राप्त कर ली थी। वह मुकदमों की जांच करते समय उन सब परिस्थितियों को अलग कर देता जिनके प्रति जांच-मजिस्ट्रेट के नाते उसका कोई सीधा उत्तरदायित्व न था। उसने जटिल से जटिल अभियोगों को उनकी बाह्य परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग नाम दे रखे थे। ऐसा करने से उसे अपना मत देने की कहीं भी उलझन न पड़ती और औपचारिक रूप से कानून के सभी नियमों का पालन भी हो जाता। यह काम नया था। सन् १८६४ में, अदालतों की कार्यवाही में कुछ सुधार किए गए थे। जिन लोगों ने उन्हें सबसे पहले अमली जामा पहनाया, उनमें इवान इल्यीच भी शामिल था।

नये शहर में पहुंचकर, जांच-मजिस्ट्रेट के नाते, इवान इल्यीच ने नये सम्पर्क स्थापित किए, नये दोस्त बनाए, नये ढंग से रहना शुरू किया, और बोलचाल का नया लहजा अपनाया। अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल रखते हुए, अब की बार उसने स्थानीय अधिकारियों से अपने को उचित दूरी पर रखा, और केवल सबसे ऊंचे अदालती हल्कों तथा सम्पन्न घरों से [illegible] ने लगा। साथ ही कुछ-कुछ उदारवाद और सामाजिक जीवन में रुचि रखने का भी प्रदर्शन करने लगा। कहीं-कहीं सरकार की [illegible] भी कर देता। वेश-भूषा का अब भी वह बहुत ख्याल रखता, [illegible] करना छोड़ दिया, और दाढ़ी रख ली।

इस नये शहर में भी इवान इल्यीच का जीवन उतना ही सुखद रहा

जितना कि पहले शहर में रहा था। जो दल गवर्नर का विरोध करता था, वह बड़ा मिलनसार और दिलचस्प साबित हुआ। उसकी आमदनी बढ़ गई, उसने ह्विस्ट खेलना छोड़ दिया जिससे उसके जीवन में एक और दिलचस्पी शामिल हो गई। सामान्यतया वह बड़े उत्साह से ताश खेलता बड़ी चतुर और बारीक चालें भी चल जाता जिससे अक्सर उसकी जीत होती।

इस शहर में दो वर्ष तक रह चुकने के बाद उसकी भेंट अपनी भावी पत्नी से हुई। जिन लोगों में उसका उठना-बैठना था, उनमें प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना मिखेल ही सबसे चतुर, कुशाग्रबुद्धि और आकर्षक युवती थी। इस तरह जाँच-मजिस्ट्रेट के उत्तरदायित्व निभाते हुए उसे खाली वक्त में मनबहलाव तथा आमोद-प्रमोद के लिए एक और साधन मिल गया। इवान इल्यीच ने प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना के साथ हल्की-हल्की चुहलबाजी शुरू कर दी।

जिन दिनों इवान इल्यीच विशेष सेक्रेटरी हुआ करता था, उन दिनों वह नियमित रूप से नाचों में शरीक होता था, पर जाँच-मजिस्ट्रेट बन जाने पर वह केवल कभी-कभी नाचता। और अब नाचना भी तो वह दिखाने के लिए कि नये ढांचा कानून का परिचायक और पांचवीं श्रेणी का ऊंचा वकील होने के बावजूद वह नाचने के क्षेत्र में भी सामान्य लोगों से ऊपर है। इस तरह कभी-कभी शाम की पार्टी के खत्म होने पर वह प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना के साथ नाचता। इन्हीं नाचों में उसने उसका दिल जीत लिया। वह उससे प्रेम करने लगी। इवान इल्यीच का कोई इरादा शादी करने का न था, पर जब यह लड़की उससे प्रेम करने लगी तो उसके मन में विचार उठा, 'मैं शादी ही क्यों न कर लूं ?'

प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना अच्छे घर की लड़की थी, खूबसूरत थी, और पास में कुछ पैसा भी था। इवान इल्यीच को इससे अच्छी पत्नी मिल सकती थी, पर यह भी बुरी नहीं थी। इवान इल्यीच को अच्छी तनख्वाह मिलती थी। उधर इस स्त्री की अपनी आय थी, जो इवान इल्यीच का ख्याल था उसकी अपनी तनख्वाह के बराबर ही होगी। इस तरह उसे अच्छी ससुराल मिल जाएगी। लड़की प्यारी, सुन्दर और सुशील थी। यह कहना कि इवान इल्यीच ने उसके साथ इसलिए शादी की कि वह उससे प्रेम करता था, और वह युवती उसके विचारों का समर्थन करती थी, उतना ही गलत होगा, जितना यह कहना कि उसने इसलिए

शादी की कि उसकी मित्र-मण्डली को यह जोड़ी पसन्द थी। इवान इल्यीच ने इन दोनों ही बातों का खयाल रखकर शादी की थी। इस शादी में सुख भी था और औचित्य भी—इस जोड़ी को बड़े लोग भी उचित समझते थे।

इवान इल्यीच ने शादी कर ली।

विवाह की रस्में और विवाह के बाद पहले कुछ दिन बहुत अच्छे गुजरे—प्रेमक्रीडा, नये साज-सामान, नये बर्तन, नये कपड़े। वक्त खूब आनन्द में कटने लगा। इवान इल्यीच सोचता कि शादी से पहले की तरह अब भी उसकी जिन्दगी शिष्ट, उल्लासपूर्ण, आरामदेह और आमोदपूर्ण बनी रहेगी, इस शादी से उसमें कोई बाधा नहीं आएगी, बल्कि और भी रंग आ जाएगा। कुछ ही महीनों में उसकी स्त्री गर्भवती हुई। तब उसे एक नई, अप्रत्याशित स्थिति का सामना करना पड़ा जो बड़ी अप्रिय, अनुचित और असह्य साबित हुई। उसे इस बात का अनुमान तक नहीं हो सकता था कि जिन्दगी यह करवट लेगी। इससे छुटकारा पाना भी असम्भव था।

अकारण ही, या सनक के कारण यह हो, वह स्त्री जिन्दगी के सुख और शिष्टता को भंग करने लगी। वह इससे अकारण ही ईर्ष्या करने लगी और तकाजे करने लगी कि वह उसकी अधिक टहल-सेवा करे। हर बात में उसके दोष निकालने लगी, और बड़े अनुचित और भद्दे ढंग से झगड़ने लगी।

इस अप्रिय स्थिति से छुटकारा पाने के लिए इवान इल्यीच ने यह सोचा कि जीवन को पहले की तरह उसी शिष्ट और आरामदेह ढंग से ही बिताना चाहिए। इसीसे वह जिन्दगी में कामयाब हुआ था। उसने कोशिश की कि वह अपनी पत्नी के चिड़चिड़ेपन की कोई परवाह न करे और पहले की तरह सुख और चैन से रहता चले। वह अपने दोस्तों को ताश खेलने के लिए आमन्त्रित करता और स्वयं क्लब में या मित्रों के घरों में जाता। परन्तु एक बार उसकी पत्नी ने उसे इतने भद्दे ढंग से फटकारा कि वह बेचैन हो उठा। इसके बाद जब कभी वह उसकी ... के विरुद्ध आचरण करता तो वह उसे फटकारती। जान पड़ता ... ह उसने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि वह उस वक्त तक दम न लेगी ... तक उसे पूरी तरह अपने काबू में न कर ले। और काबू में करने ... ब था कि वह भी सारा वक्त, मुंह बाए, उसीकी तरह घर पर बैठा

रहे। उसने समझ लिया कि विवाह से, और विशेषकर ऐसी स्त्री के साथ विवाह से, जीवन में सुख और शिष्टता बढ़ेगी नहीं, बल्कि डर था कि खत्म ही हो जाएगी। इसलिए उसने इस खतरे से अपने को बचाना जरूरी समझा। इवान इल्यीच इसके लिए उपाय सोचने लगा। प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना को केवल एक ही बात प्रभावित करती थी, वह थी इवान इल्यीच की नौकरी। अतः इवान इल्यीच ने अपनी पत्नी के विरुद्ध लड़ने तथा अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिए, अपने काम और उस काम की जिम्मेदारियों को साधन बनाया।

बच्चा पैदा हुआ। परेशानियां और भी बढ़ने लगीं। कभी बच्चे को दूध पिलाने की समस्या, कभी मां अथवा बच्चे को बुखार—झूठा या सच्चा। उसके लिए इस परेलू वातावरण से दूर रहकर अपनी एक दुनिया बना लेना और भी आवश्यक हो गया। आशा तो यह की जाती थी कि इवान इल्यीच शिशु पालन की इन तकलीफों के प्रति सहानुभूति प्रकट करेगा, पर वह इनको समझता तक न था।

ज्यों-ज्यों उसकी पत्नी का स्वभाव अधिक चिड़चिड़ा होता जाता, और जितना अधिक वह अपने पति को तंग करती, उतना ही अधिक वह जान-बूझकर अपने दफ्तर को अपने जीवन का आकर्षण-केन्द्र बनाता जाता। वह पहले कभी भी इतना महत्त्वाकांक्षी न रहा था, न ही उसे अपने काम के साथ इतना गहरा अनुराग कभी हुआ था, जितना अब होने लगा था।

शीघ्र ही, शादी के साल-भर के अन्दर ही, इवान इल्यीच को पता चल गया कि विवाहित जीवन में कुछ आराम तो जरूर है, पर वास्तव में विवाह एक बड़ी जटिल और कठिन समस्या है। और इस सम्बन्ध में मनुष्य को चाहिए कि वह सुविवेक स्पष्ट नियम निर्धारित कर ले, जिस तरह उसे अपने व्यवसाय के बारे में करने पड़ते हैं, और उनके अनुसार अपना कर्तव्य निभाता चला जाए। यहां कर्तव्य निभाने का यही अर्थ है कि दाम्पत्य जीवन ऊपर से शिष्ट बना रहे ताकि समाज में उसपर कोई उंगली न उठा सके।

और इवान इल्यीच ने अपने नियम निर्धारित कर लिए। विवाहित जीवन से उसने इतने-भर की मांग की, कि घर में खाना मिलता रहे, गृहिणी हो, बिस्तर हो, और सबसे जरूरी बात कि लोगों की नजरों में गार्हस्थ्य-जीवन की औपचारिक शिष्टता बनी रहे, क्योंकि इसके

सात साल बाद इस शहर में काम करने के बाद इवान इल्यीच की नियुक्ति किसी दूसरे प्रदेश में सरकारी वकील के पद पर हो गई। वह और उसका परिवार दूसरे नगर में चले गए, पर वहाँ उन्हें पैसे की कमी महसूस होने लगी। उसकी पत्नी को यह नया शहर बिल्कुल पसन्द नहीं आया। यहाँ तनख्वाह तो पहले से अधिक थी, पर रहन-सहन का खर्च भी अधिक था। इसके अलावा उनके परिवार में दो बच्चों की मृत्यु हो गई जिससे इवान इल्यीच के लिए पारिवारिक जीवन और भी अप्रिय हो उठा।

नये शहर में जो भी मुसीबत आती उसके लिए प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना अपने पति को दोषी ठहराती। पति और पत्नी के बीच बातचीत के प्रत्येक विषय पर, विशेषकर अपने बच्चों के पालन के बारे में, कई बार झगड़ा हो चुका था और इन झगड़ों के फिर से शुरू हो जाने का हर वक्त डर लगा रहता। कभी-कभार ऐसे दिन भी आ जाते जब दोनों में प्रेमालाप होता पर ये कभी भी अधिक देर तक नहीं टिक पाते। वे मानो द्वीप थे जिनपर दम्पती थोड़ी देर विश्राम करने के बाद छिपी शत्रुता के समुद्र पर अपनी यात्रा जारी कर देते। और यह छिपी शत्रुता उपेक्षा होती थी। यदि इवान इल्यीच इस उपेक्षा को बुरा समझता तो जरूर उसके मन को क्लेश पहुँचता। पर वह उसे न केवल

अब वह एक अनुभवी पब्लिक प्रोसेक्यूटर था। इस नौकरी से अच्छी बड़ी और नौकरियां उसे मिलती थीं पर उसने उन्हें नामंजूर किया, इस उम्मीद पर कि उनसे भी बेहतर कोई नौकरी मिलेगी। और अब एक ऐसी घटना घटी जिससे उसका समस्त जीवन विक्षुब्ध हो उठा। उसकी यह तीव्र इच्छा थी कि उसे एक यूनिवर्सिटीवाले नगर में प्रधान न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया जाए। पर किसी भांति गोप्पे नामक व्यक्ति पहले वहां पहुंच गया और नौकरी संभाल ली। इवान इल्यीच बहुत बिगड़ा, आरोप लगाए, गोप्पे को बुरा-भला कहा, और अपने से ऐन ऊपरवाले अफसरों से शिकवा-शिकायत की। परिणाम यह हुआ कि अधिकारियों ने इवान इल्यीच की ओर से पीठ फेर ली। इसके बाद जब और जगहें खाली हुईं तो उसे फिर नजरन्दाज किया गया।

यह १८८० की बात है। यह साल इवान इल्यीच के जीवन का सबसे बुरा साबित हुआ। एक तरफ तो उसकी आय कम थी, उसमें उसके परिवार का गुजर न हो पाता था; दूसरी तरफ उसकी हेठी की जा रही थी। जहां अपने प्रति किए गए इस व्यवहार को वह क्रूर, द्वेषपूर्ण तथा अनुचित समझता था, वहां और लोगों को यह बड़ी साधारण बात जान पड़ती थी। इस समय उसके पिता ने भी उसकी सहायता नहीं की। इवान इल्यीच समझता था कि उसे लोगों ने निस्सहाय छोड़ दिया है। परन्तु और लोग उसकी स्थिति को साधारण समझने के अतिरिक्त उसकी ३,५०० रूबल सालाना तनख्वाह को देखते हुए उसे भाग्यवान समझते थे। पर वही जानता था कि कैसी-कैसी दिक्कतें उसे सहनी पड़ीं, किस भांति उसकी पत्नी सारा वक्त उसे कोसती-कलपती रही और किस भांति आमदनी से ज्यादा खर्च करने के कारण उसके सिर पर कर्ज चढ़ गए थे। यह सब देखते हुए कौन कह सकता था कि उसकी स्थिति साधारण है?

उस साल गर्मी की छुट्टियों में, खर्च बचाने की खातिर, वह और उसकी पत्नी गांव में रहने के लिए चले गए। वहां उसकी पत्नी का भाई रहता था।

देहात में कोई काम-काज न होने के कारण इवान इल्यीच अब [illegible] जीवन में उसे कभी इस तरह निठल्ला नहीं बैठना पड़ा था। वह [illegible] परेशान हुआ कि उसने कुछ न कुछ करने का, कोई निर्णायक कदम उठाने का पक्का इरादा कर लिया।

"मिलर के स्थान पर जखार नियुक्त हुआ है। पहली रिपोर्ट के बाद मेरी नियुक्ति होगी।"

यह तबादला बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। अचानक इवान इल्यीच को अपने ही मन्त्रालय में एक जगह मिल गई जिसमें वह अपने सहकर्मियों से दो दर्जे ऊपर हो गया। पांच हजार तनखाह, इसके अलावा साढ़े तीन हजार रूबल घर के साज-सामान तथा सफर-खर्च के लिए। अपने विरोधियों तथा मन्त्रालय के खिलाफ उसका सारा गुस्सा ठण्डा पड़ गया। अब वह पूर्णतया खुश था।

इवान इल्यीच गांव वापस लौटा। उसका चित्त बेहद प्रसन्न और सन्तुष्ट था। ऐसा पहले बहुत कम हुआ था। प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना का भी उत्साह बढ़ गया, और कुछ देर के लिए घर में शान्ति आ गई। इवान इल्यीच ने अपनी यात्रा का ब्योरा दिया, बतलाया कि सेंट पीटर्सबर्ग में उसकी बड़ी आवभगत हुई, उसके सभी विरोधियों को मुंह की खानी पड़ी, इस नौकरी के मिलने पर वे उसके तलवे चाटने लगे, और उससे डाह करने लगे। वह जहां भी गया था, सबके अनुग्रह का पात्र बना रहा था।

प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनती रही, बीच में एक बार भी नहीं बोली। यही दिखाने की कोशिश करती रही कि उसे इवान इल्यीच की हर बात पर विश्वास है। उसका सारा ध्यान अब नये शहर में था। वह यही सोच रही थी कि वहां पर किस ढंग से रहेंगे। इवान इल्यीच को यह जानकर खुशी हुई कि इसमें उसके इरादे उसकी पत्नी के इरादों से बिल्कुल मिलते थे, कि दोनों एक-दूसरे से सहमत थे। पहले जो थोड़े-से काल के लिए उसके जीवन में बाधा आई थी, वह दूर हो जाएगी, और उसका जीवन फिर से सुखमय और सुरुचिपूर्ण हो जाएगा। यही उसे स्वाभाविक जान पड़ता था।

इवान इल्यीच गांव में थोड़े ही दिन ठहरा। दस सितम्बर को उसे अपना नया काम संभालना था। इसके अलावा नये शहर में जाकर निवास-स्थान का प्रबन्ध करना, प्रान्तीय नगर से, जहां पर वह पहले था, सारा सामान ले जाना, बहुत-सी नई चीजें खरीदना, कई चीजों के आर्डर देना—ये सब काम उसे करने थे। संक्षेप में कहें तो जिस जीवन की रूप-रेखा उसने अपने मन में बना रखी थी, उसे नये शहर में क्रियान्वित करना था। जीवन की ऐसी ही रूप-रेखा प्रस्कोव्या

फ्योदोरोव्ना की सभी कल्पनाओं तथा महत्त्वाकांक्षाओं का केन्द्र बनी हुई थी।

यह बात बड़ी अनुकूलता से सुलझी थी, पति-पत्नी के विचार भी मेल खा गए थे, और वे दोनों एक-दूसरे से मिलते भी कम थे, अतः उनके सम्बन्ध इतने मैत्रीपूर्ण हो उठे थे जितने कि शादी के पहले दिनों के बाद आज तक कभी न हो पाए थे। पहले तो इवान इल्यीच ने सोचा कि वह अपने परिवार को भी साथ ले जाएगा, परन्तु अपने साले और साली के आग्रह पर, जो सहसा उसके और उसके परिवार के प्रति बड़े स्नेहपूर्ण और विनम्र हो उठे थे, उसने अकेले ही चले आने का निश्चय किया।

इवान इल्यीच रवाना हो गया। उसका मन प्रसन्न था। एक तो सफलता मिली थी, दूसरे पत्नी के साथ पटरी बैठ गई थी। एक चीज दूसरी की पुष्टि कर रही थी। सफर के दौरान सारा वक्त उसकी मन स्थिति ऐसी ही रही। रहने के लिए उसे एक बहुत अच्छा फ्लैट मिल गया, बिल्कुल वैसा ही जैसा कि वह और उसकी पत्नी चाहते थे। बड़े-बड़े, ऊंची छतवाले, पुराने ढंग के बैठने के कमरे, एक सुन्दर, आराम-देह पढ़ने-लिखने का कमरा, पत्नी और बेटी के लिए अलग कमरे, बेटे के लिए एक कमरा और उसका अध्यापक उसे पढ़ा सके — ऐसा मालूम होता जैसे ठीक उन्हीं की जरूरतों को देखकर घर बनाया गया हो। उसके लिए साज-सामान खरीदने, सजाने, ठीक ठाक करने का सब काम स्वयं इवान इल्यीच ने अपने हाथ में लिया। दीवारों के लिए कागज, पर्दे, पुराने चलन की मेज-कुर्सियां उसे विशेष दिलचस्प लगती थीं। वह सब खरीदता रहा, और धीरे-धीरे घर में रौनक आने लगी, और उसका भावी निवास-गृह उस आदर्श नमूने के अनुकूल बनने लगा जो उसने अपने मन में बना रखा था। जब आधा काम हो चुका तो घर का रूप देखकर वह दंग रह गया। फ्लैट उसकी उम्मीदों से कहीं बढ़कर निखरने लगा था। वह अभी से इस बात की कल्पना कर सकता था कि तैयार हो जाने पर फ्लैट की साज सज्जा कितनी सुन्दर, कितनी परिष्कृत होगी। छिछलेपन का लेशमात्र भी उसमें नहीं होगा। रात को सोते समय उसकी आंखों के सामने उस सजे-सजाए कमरे का चित्र आता जिसमें बाहर से भेंट करनेवाले लोग आकर बैठा करेंगे। वह बैठक में झांककर देखता — वह अभी तक तैयार नहीं हो पाई थी — तो

उसे अंगीठी, अंगीठी के सामने का पर्दा, अलमारियां, जहां-तहां बिना किसी क्रम के रखी हुई कुर्सियां, दीवारों पर बढ़िया चीनी मिट्टी की प्लेटें, अपनी-अपनी जगह पर सजी हुई कांसे की मूर्तियां इत्यादि नज़र आतीं। उसे यह सोचकर बेहद खुशी होती कि जब उसकी पत्नी और बेटी वहां आएंगी, और उन्हें वह एक-एक चीज दिखाएगा तो वे कितनी खुश होंगी। उन्हें भी इन चीजों में रुचि थी। वे सोच भी नहीं सकती थीं कि उन्हें क्या-क्या देखने को मिलेगा। सौभाग्य से उसे पुराना फर्नीचर सस्ते दामों मिल गया था, जिससे घर की सजावट में एक विशेष कमनीयता आ गई थी। अपनी चिट्ठियों में वह हर चीज का ब्योरा कुछ घटाकर देता था, ताकि जब वे आएं तो घर देखकर दंग रह जाएं। इन कामों में वह इतना व्यस्त रहता कि अपने नये सरकारी काम की ओर वह यथोचित ध्यान न दे पाता। उसे ख्याल नहीं था कि कभी ऐसी स्थिति आएगी। उसे यह काम सबसे ज्यादा पसन्द था। जब अदालत की कार्यवाही चल रही होती तो किसी-किसी वक्त उसका ध्यान उचट जाता, मन उड़ानें भरने लगता कि परदों के ऊपर का भाग खुला रहने दिया जाए या ढक दिया जाए। वह इस काम में इतना [illegible] गया था कि अक्सर स्वयं कारीगरों का हाथ बटाने लगता, मेज़-कुर्सियां इधर से उधर रखता, दरवाजों पर पर्दे टांगता। एक दिन वह सीढ़ी पर चढ़कर कारीगर को समझा रहा था कि वह किस तरह पर्दे लगाए जब उसका पांव फिसल गया और वह गिरते-गिरते बचा। वह बड़ा मजबूत और फुर्तीला आदमी था, फौरन संभल गया, केवल गिरते वक्त उसकी कमर एक तस्वीर के चौखटे से टकराई जिससे एक खरोंच-सी उसे लग गई। उसे कमर में कुछ देर तक दर्द होता रहा पर वह जल्दी ही दूर हो गया। उन दिनों सारा वक्त इवान इल्यीच विशेषकर स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रहा। उसने लिखा: "मैं यों महसूस करता हूं, जैसे पन्द्रह बरस छोटा हो गया हूं।" उसका ख्याल था कि सब काम सितम्बर के अन्त तक मुकम्मल हो जाएगा, पर वह अक्तूबर के मध्य तक घिसटता चला गया। पर परिणाम जो निकला वह विस्मयजनक था। यह केवल उसीका ख्याल नहीं था और लोग भी जो उस फ्लैट को देखने आते थे, यही कहते थे।

पर सच तो यह है कि वह भी अपना घर वैसा ही कुछ बना पाया था जैसा कि उस जैसे सभी लोग बना पाते हैं जो स्वयं अमीर न होते हुए

अमीरों जैसे बनना चाहते हैं, और अन्त में केवल एक दूसरे के समान ही बनकर रह जाते हैं। पर्दे, आवनूस का फर्नीचर, फून, कालीन, कांसे की मूर्तियां, हरेक चीज गहरे रंग की और भड़कीली—बिलकुल वैसी ही जैसी इस वर्ग के लोग इकट्ठी करते हैं और अपने वर्ग के अन्य लोगों के समान बन जाते हैं। उसका फ्लैट भी और लोगों के फ्लैटों जैसा ही था इसलिए उसका कोई प्रभाव न पड़ता था। पर वह उसे शानदार और बेजोड़ समझता था। वह स्टेशन पर अपने परिवार को लेने गया, फिर सबके सब रोशनी से जगमगाते फ्लैट में दाखिल हुए। सफेद नेकटाई लगाए, एक चोबदार ने ड्योढ़ी का दरवाजा खोला। ड्योढ़ी में फूल महक-महक कर रहे थे। वहां से वे बैठक में गए, फिर उसके पढ़नेवाले कमरे में। परिवार के लोग दंग रह गए। इवान इल्यीच की खुशी का ठिकाना न था। उसने उन्हें सारा घर दिखाया। उनके मुंह से प्रशंसा के शब्द सुन-सुनकर वह स्वयं प्रफुल्ल हो रहा था। आत्मसन्तोष से उसका चेहरा दमकने लगा। उसी दिन शाम को जब वे चाय पीने बैठे तो *प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना* ने उससे पूछा कि वह गिरा कैसे, तो वह हंसने लगा। नाटकीय अन्दाज में बताने लगा कि वह कैसे गिरा था और किस भांति जब वह गिरा तो एक कारीगर का दिल दहल गया था। यह सारा विवरण बड़ा रोचक रहा।

"अच्छा हुआ कि मैं बचपन में कसरत करता रहा। मेरी जगह कोई और होता तो बुरी तरह चोट खा जाता। मुझे केवल एक तरफ तो मामूली सी सूजन हुई है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। जब हाथ लगाऊं तो यहां अब भी थोड़ा दर्द होता है, मगर धीरे-धीरे कम हो रहा है। मामूली खरोंच-सी थी इससे ज्यादा कुछ नहीं।"

वे नये घर में रहने लगे। जैसा कि सदा होता है, जब घर में रहने लगे तो जान पड़ता है कि बस, अगर एक कमरा और होता, तो इस जैसा कोई घर न होता, और आमदनी में, बस यदि थोड़े-से पैसे और होते, केवल पांच सौ रूबल, तो परिवार की सब जरूरतें पूरी हो जातीं। पर सब मिलाकर, हर चीज यथोचित थी, खास तौर पर शुरू-शुरू में, जब फ्लैट की साज-सज्जा अभी मुकम्मल नहीं हो पाई थी, कई चीजों के खरीदने, मरम्मत करवाने, एक जगह से हटाकर दूसरी जगह रखने इत्यादि का काम बाकी रहता था। कुछ छोटी-मोटी गलतफहमियां भी उठती रहती थीं, पर पति-पत्नी इतने सु[illegible]

4265 453

कारण थे कि दोनों ही में गालागलौज शुरू हो जाती और झगड़े तेज होने की नौबत न आती थी। यहाँ तक कि मुलम्मा हो गया। जीवन में थोड़ी नीरसता आ गई। पर उस समय वे दोनों ... दोनों के परिवार प्राप्त कर रहे थे, और जो इन के जीवन में अलग हो रहे थे। जिन्दगी भरी पूरी लगने लगी।

इवान इल्यीच अदालत का समय न रहने पर क्लब में ... करता और भोजन के समय पर आ जाता। शुरू-शुरू में तो उसमें खूब उत्साह था, हालांकि ... के कारण वह कुछ ... उठता था। (अगर कहीं या मेजपोश पर कहीं एक भी दाग होता, पर्दों में कहीं कोई सलवट ढीली होती, तो वह खीझ उठता। उसने बड़ी मेहनत से उन्हें अपनी-अपनी जगह पर सजाकर रखा था। एक भी चीज इधर-उधर होती तो उसे खीझ उठती।) पर मन से और घर पर इवान इल्यीच का जीवन वैसा ही था जैसा कि वह बनाना चाहता था — आरामदेह, खुशगवार और शिष्टतापूर्ण। वह प्रातः ९ बजे उठता, कॉफी पीता, अखबार देखता और अपनी सरकारी पोशाक पहनकर कचहरी चला जाता। वहां रोजाना काम का जुआ पहले से उसके लिए तैयार रखा होता। वह जाते ही बड़ी आसानी से उसे गले में डाल लेता। वहां दरख्वास्तें पेश होतीं। वह पूछताछ के पत्रों से निबटता। दफ्तर का काम अलग था। मुकदमों की पेशियां होतीं—सार्वजनिक तथा प्रारंभिक। मनुष्य में इतनी योग्यता होनी चाहिए कि अपना काम छांट सके, और उसमें से ऐसे सब तत्वों को निकाल सके जो सरकारी काम में रुकावट डालते हों, भले ही वे दिलचस्प और जानदार हों। लोगों के साथ सरकारी सम्बन्ध के अलावा कोई और सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। इन सम्बन्धों का मूल आधार ही सरकारी काम होना चाहिए। यों भी ये सम्बन्ध केवल सरकारी स्तर पर ही रहने चाहिए। मिसाल के तौर पर एक आदमी कुछ पूछने के लिए कचहरी में आता है। यह मुमकिन नहीं कि इवान इल्यीच अपने सरकारी पद को भूलकर उसके साथ साधारण व्यक्ति की भांति बातें करने लगे। पर यदि वह आदमी न्यायालय के सदस्य के पास आता है तो इन सम्बन्ध के घेरे के अन्दर (जिसका उल्लेख सरकारी शब्दावली में सरकारी कागज पर हो सके) इवान इल्यीच उसके लिए सब कुछ करता, सचमुच यथाशक्ति सब कुछ ..., यहां तक कि उसके साथ बड़े आदर से पेश आता, और उसका ...र प्रत्यक्षतः मानवीय, यहां तक कि मैत्रीपूर्ण होता। सम्बन्ध वही

उचित होता है। पर ज्यों ही सरकारी सम्बन्ध समाप्त हों, उसी क्षण बाकी सभी सम्बन्ध भी समाप्त हो जाने चाहिए। इवान इल्यीच में सरकारी सम्बन्धों को अलग रखने की असाधारण योग्यता थी। वह उन्हें यथार्थ जीवन से बिल्कुल अलग रखता था। और यह गुण, उसकी योग्यता और अनुभव के कारण पनपकर कला के स्तर तक आ पहुंचा था। वह कभी-कभी, मानो मजाक में ही अपने को इतनी छूट दे दिया करता कि मानवीय-सरकारी सम्बन्धों को कुछ देर के लिए मिला देता। उसमें यह क्षमता थी कि अपने दृढ़ संकल्प से, जब चाहता, सरकारी रिश्ते को अलग कर देता या मानवीय रिश्ते को। इवान इल्यीच यह सब बड़ी सुगमता, लोकप्रियता तथा शिष्टता से किया करता था। खाली समय में वह सिगरेट पीता, चाय पीता, थोड़ी-बहुत राजनीति की चर्चा करता, काम-धन्धे की बातें होतीं, कुछ ताश की बाजियों के बारे में, बहुत कुछ नई नियुक्तियों के बारे में। आखिर थककर वह घर लौटता लेकिन उसका मन सन्तुष्ट होता, उसी भांति जिस भांति अच्छा वादन करने के बाद किसी आर्केस्ट्रा के प्रधान वादक का मन सन्तुष्ट होता है। घर पहुंचकर देखता कि उसकी पत्नी और बेटी, या तो कहीं बाहर जाने को तैयार हैं, या मेहमानों की देख-रेख में व्यस्त हैं। उसका बेटा स्कूल गया होता, या अपने अध्यापक के पास बैठा सबक याद कर रहा होता। जो कुछ भी वह जिम्नेजियम में पढ़कर आता, उसे वह बड़ी मेहनत से याद किया करता। सब बात बहुत बढ़िया ढंग से चल रही थी। भोजन के बाद यदि कोई अतिथि न आए होते तो इवान इल्यीच बैठकर कोई पुस्तक पढ़ता—कोई नई पुस्तक, जिसकी बहुत चर्चा हो रही होती। उसके बाद वह बैठकर दस्तावेज़ों की जांच करता, कानून देखता, गवाहों के बयान ध्यान से पढ़ता, उनपर कानून की धाराएं लगाता। यह काम उसे न तो रुचिकर लगता, न नीरस। अगर इसके लिए ताश की बाजी छोड़नी पड़ती तो यह काम नीरस होता, पर यदि ताश नहीं चल रही होती, तो अकेले बैठने या पत्नी के साथ बैठने से यही बेहतर होता था। इवान इल्यीच को सबसे ज्यादा खुशी समाज के सम्मानित पदाधिकारियों तथा उनकी पत्नियों को अपने घर बुलाकर छोटी-छोटी पार्टियां करने में मिलती थी। इन पार्टियों में भी वही कुछ होता जो इन लोगों के अपने घरों में होता था, शाम उसी ढंग से बीतती जिस ढंग से ये लोग उसे बिताने के आदी थे। उसके घर की बैठक भी

वैसे ही थी जैसी कि इन लोगों के घरों की बैठकें।

एक बार उन्होंने एक नाचपार्टी का आयोजन किया। पार्टी खूब कामयाब रही। इवान इल्यीच बेहद खुश था। केवल मिठाइयों और पेस्ट्रियों के सवाल पर पति-पत्नी का आपस में बहुत भद्दा-सा झगड़ा उठ खड़ा हुआ। प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना ने खाने-पीने की चीजों के बारे में कुछ निश्चय कर रखा था, परन्तु इवान इल्यीच ने ज़िद की कि चीजें सबसे बढ़िया दुकान से मंगवायी जाएं। उसने बहुत-सी पेस्ट्री मंगवा ली, नतीजा यह हुआ कि बहुत-सा सामान बच गया, और बिल पैंतालीस रूबल का आ गया। पति-पत्नी में तकरार होने लगी। यह झगड़ा कितना गम्भीर और अप्रिय रहा होगा, इसका अन्दाज़ इसी से लगाया जा सकता है, कि प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना ने उसे "गधा और अहमक" कहकर पुकारा, और इवान इल्यीच ने अपना सिर थाम लिया, और आवेश में तलाक लेने के बारे में चिल्लाया। पर पार्टी बहुत खुशगवार रही थी। बड़े-बड़े लोग आए थे। इवान इल्यीच राजकुमारी त्रुफोनोवा के साथ नाचा था। यह उस त्रुफोनोवा की बहन थी जिसने 'मेरा बोझ अपने कन्धों पर लो' नाम वाली संस्था की नींव रखी थी।

अपने सरकारी काम से इवान इल्यीच को एक प्रकार की खुशी मिलती थी। इससे उसकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होती थी। एक दूसरी प्रकार की खुशी उसे अपने सामाजिक जीवन से मिलती थी। उससे उसके अहं की तुष्टि होती थी। पर सच्चा आनन्द उसे मिलता था ताश खेलने में। कुछ भी हो जाए, जीवन कितना ही निराश क्यों न हो उठे, यह आनन्द छोटे-से दीपक की तरह उसके जीवन को आलोकित किए रहता था। जब चार दोस्त—चारों अच्छे खिलाड़ी—ताश की बाज़ी लगाते तो मन खिल उठता। हां, अगर साथी झगड़ालू निकले तो मज़ा किरकिरा होता था। (इस चौकड़ी में पांचवां बनने में कुछ मज़ा न था। आप मुंह बाए देखे जा रहे हैं और ऊपर से दिखावा भी किए जा रहे हैं कि आपको मज़ा आ रहा है)। इसके बाद रात का भोजन और एक गिलास हल्की-सी अंगूरी शराब। जब कभी इवान इल्यीच को इस तरह ताश खेलने का मौका मिलता, विशेषकर जब वह कुछ पैसे भी जीत लेता, तो वह सोने के वक्त बड़ा प्रसन्नचित्त होता (बहुत पैसे जीतने से उसका मन कुछ बेचैन-सा हो उठता था)।

इस ढर्रे पर उनका जीवन चल रहा था। वे सबसे ऊंचे हल्कों में

उठते-बैठते, उनके घर में प्रतिष्ठित तथा युवा लोगों का आना-जाना रहता।

पति, पत्नी और बेटी तीनों एक दूसरे से पूर्णतया सहमत थे कि किन लोगों के साथ उन्हें मेल-जोल बढ़ाना चाहिए। और बिना एक-दूसरे से पूछे, वे बड़ी कुशलता से ऐसे परिचितों तथा सम्बन्धियों से पीछा छुड़ा लेते थे जिनका वहां आना उसके लिए अप्रिय था, और जिन्हें वे अपने से निम्न स्तर के समझते थे। ऐसे लोग बड़े आग्रह से उनसे मिलने आते और अपना सम्मान प्रकट करते, उस बैठक में बैठने का दुःसाहस करते जिसकी दीवारों पर जापानी प्लेटें लगी थीं। पर शीघ्र ही वे टल जाते। अन्त में केवल वही लोग गोलोवीन परिवार के मित्र बने रहते जो समाज में सबसे प्रतिष्ठित थे। जो युवक लीज़ा से प्रेम करते उनका भविष्य बड़ा आशापूर्ण था। उनमें से एक दमीत्री इवानोविच पेत्रीश्चेव का बेटा था। वह लड़का जाँच-मजिस्ट्रेट था और अपने बाप की सारी ज़मीन-जायदाद का एकमात्र वारिस। एक दिन इवान इल्यीच ने प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना से इसका ज़िक्र किया और प्रस्ताव रखा कि उनके लिए एक स्ले-पार्टी या या किसी नाटक-अभिनय का आयोजन करना चाहिए। ऐसा था उनका जीवन। बिना किसी परिवर्तन के एक दिन बाद दूसरा बीत रहा था, और हर चीज़ में ठाठ था।

४

सबका स्वास्थ्य अच्छा था। कभी-कभी इवान इल्यीच यह शिकायत करता कि उसके मुंह का स्वाद अजीब-सा हो रहा है, या उसकी कमर में बाईं ओर कुछ बोझ-सा महसूस होता है, परन्तु यह कोई बीमारी नहीं थी।

पर यह बोझ बढ़ने लगा। इसे दर्द तो नहीं कहा जा सकता था, पर एक दबाव सा महसूस होता रहता जिसके कारण वह सारा वक्त उदास रहने लगा। यह उदासी और भी गहरी होने लगी, और उस सुखमय और शिष्ट जीवन में बाधक बनने लगी, जिसे गोलोवीन परिवार ने फिर से स्थापित किया था। पति और पत्नी में भी अब कलह बढ़ने लगा। शीघ्र ही घर का सुख-चैन जाता रहा। घर की शिष्टता बनाए रखना कठिन हो गया। झगड़े बार-बार उठ खड़े होते। पारिवारिक जीवन में द्वेष का विष घुलने लगा। ऐसे दिन बहुत कम होते जब

पति-पत्नी में कलह न उठता हो।

प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना कहती कि उसका पति चिड़चिड़े मिजा का आदमी है। उसका यह कहना किसी हद तक जायज भी था। लेकि बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की उसकी आदत थी। इसलिए वह अक्सर कहती कि उसके पति का स्वभाव शुरू से ही ऐसा रहा है, औ अगर उसने बीस साल उसके साथ निभा दिए तो अपने सहनशी स्वभाव के कारण। यह ठीक था कि अब जो भी बहस छिड़ती उसे शु करनेवाला वही होता। ज्यों ही परिवार खाना खाने बैठता, और शोरब सामने आता, तो वह मीन-मेख निकालने लगता। या तो कोई बर्त टूट गया होता, या खाना बुरा होता, या उसका बेटा मेज पर कोहन टिकाए बैठा होता, या बेटी ने बालों में ठीक तरह से कंघी नहीं क होती। हर बात के लिए प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना को दोषी ठहराय जाता। पहले तो प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना ईंट का जवाब पत्थर से देती, खूब बुरा-भला कहती, पर दो बार ऐसा भी हुआ कि भोजन शुरू होते ही गुस्से से वह इस कदर खौलता उठा कि उसकी स्त्री ने समझा कि भोजन में सचमुच कोई चीज इसके अनुकूल नहीं बैठी होगी जिस कारण इसका मिजाज इतना बिगड़ गया है। इसलिए उसने अपने को काबू में रखा और कुछ नहीं बोली। उसने यही कोशिश की कि जितनी जल्दी हो सके, भोजन समाप्त हो जाए। इस आत्म-नियन्त्रण के लिए वह बार-बार अपनी सराहना करती। उसने अपने मन में यह धारणा बिठा ली थी कि उसके पति का मिजाज बेहद बुरा है, और उसने इसके जीवन को बरबाद कर डाला है। इस तरह वह अपने पर तरस खाने लगी। जितना ही अधिक वह अपने पर तरस खाती उतना ही अधिक वह अपने पति से घृणा करने लगती। शुरू-शुरू में तो वह चाहती थी कि वह मर जाए, परन्तु समझती थी कि उस हालत में आमदनी खत्म हो जाएगी। इस लाचारी से उसकी घृणा और भी बढ़ गई। यह सोच कि वह मर भी जाए तो भी उसे चैन नहीं मिलेगा, उसका क्षोभ और भी बढ़ जाता। वह खीझ उठती, फिर खीझ को दबाने की चेष्टा करती, जिसे देखकर उसके पति का गुस्सा और भी ज्यादा भड़क उठता।

एक बार दोनों में झगड़ा हुआ तो इवान इल्यीच ने अपनी पत्नी पर बड़े बेजा दोष लगाए। वे इतने अनुचित थे कि जब बाद में सुल हुई तो उसने स्वीकार किया कि उसका मिजाज बिगड़ गया है, और

इसका कारण यह है कि वह अस्वस्थ है। इसपर उसकी पत्नी ने आग्रह किया कि यदि वह अस्वस्थ है तो उसे इलाज कराना चाहिए, और फौरन किसी प्रसिद्ध डाक्टर से मशवरा लेना चाहिए।

इवान इल्यीच ने ऐसा ही किया। वह डाक्टर के पास गया। सब वैसा ही था जैसा कि सदा हुआ करता है। पहले डाक्टर ने बड़ी देर इन्तजार करवाया, फिर बड़े रोब से उसका मुआयना किया। इवान इल्यीच इस अभिनय से परिचित था, क्योंकि वह स्वयं भी इसी तरह रोब से कचहरी में व्यवहार किया करता था। डाक्टर ने ठोक-ठोककर टटोलकर मुआयना किया, सवाल पूछे, और इवान इल्यीच जवाब देता गया। जाहिर है, ये सवाल अनावश्यक थे, क्योंकि उनके जवाब वह पहले से ही जानता था। फिर डाक्टर ने रोब से उसकी ओर देखा, जिसका अर्थ था, सब ठीक हो जाएगा। जरूरत केवल इस बात की है कि तुम बिल्कुल अपने को मेरे हाथों में सौंप दो। इलाज केवल मुझीको मालूम है। हर रोगी के प्रति डाक्टर का एक ही सा रवैया होता है। सब बात बिल्कुल वैसी ही थी जैसी कचहरियों में होता है। वह प्रसिद्ध डाक्टर उसके साथ उसी तरह रोब से पेश आया जिस तरह वह स्वयं मुजरिमों के साथ पेश आया करता था।

डाक्टर ने लक्षण बताए और कहा कि इनसे पता चलता है कि तुम्हें यह-यह तकलीफ है, परन्तु यदि इस-इस चीज के निरीक्षण का परिणाम हमारे निदान के अनुकूल न हुआ, तो सम्भव है तुम्हें यह और यह तकलीफ हो। और यदि हम मान लें कि तुम्हें यह और यह तकलीफ है, तो उस हालत में "इत्यादि। केवल एक ही प्रश्न था जिसका उत्तर इवान इल्यीच सुनना चाहता था : क्या मेरी हालत चिन्ताजनक है या नहीं। पर डाक्टर ने इस सवाल को असंगत समझा और कोई उत्तर नहीं दिया। डाक्टर के दृष्टिकोण के अनुसार, यह प्रश्न इस योग्य ही नहीं था कि इसपर विचार किया जाए। बात केवल सम्भावनाओं पर विचार करने की है : अपेन्डीक्स मुड़ी है, पेट में फोड़ा है, या अन्तड़ियों में कोई दोष है। इवान इल्यीच की जिन्दगी का तो सवाल ही नहीं उठता था—सवाल था अपेन्डीक्स मुड़ने और अन्तड़ियों का था। इवान इल्यीच के सामने डाक्टर ने जो समस्या का हल बताया वह अन्तड़ियों के पक्ष में था और अत्यन्त शिष्टतापूर्ण था। हां, आगे के लिए उन्होंने यह ना-मसाब गुंजाइश रखी कि पेशाब का निरीक्षण करने के बाद सम्भव

है, इसकी और बातों का पता चले, जिस सूरत में फिर इस पर दोबारा विचार करने की आवश्यकता होगी। ठीक यही बात, ऐसे ही विजयपूर्ण ढंग से स्वयं इवान इल्यीच न्यायाधीश मुल्ज़िम के सामने कर चुका था। और अब डाक्टर ने दूसरी बार एक विजयपूर्ण संक्षेप दिया, और साथ साथ अपनी ऐनक में से उसे मुल्ज़िम की ओर देखता रहा। उसकी आँखों में विजयोल्लास तथा एक तरह से विनोद का भाव था। डाक्टर का कथन सुनकर इवान इल्यीच इस परिणाम पर पहुँचा कि उसकी हालत चिन्ताजनक है, पर उसकी चिन्ता न डाक्टर को है, न किसी और को। इस परिणाम से इवान इल्यीच को बड़ा सदमा पहुँचा और दुःख हुआ। उसका हृदय अपने प्रति अनुकम्पा से भर उठा। डाक्टर के प्रति उसके मन में क्रोध उठा कि इतने महत्त्वपूर्ण प्रश्न के प्रति वह इतना उदासीन है।

पर उसने कोई शिकायत नहीं की। वह उठा, फीस मेज पर रखी और गहरी सांस भरकर बोला

"आपने तो रोगी बड़े-बड़े ऊल जलूल सवाल पूछते होंगे और आपको भी उन्हें सुनने की आदत हो गई होगी, परन्तु सामान्यतया क्या आप मुझे बतला सकते हैं कि मेरी बीमारी खतरनाक है या नहीं ?"

डाक्टर ने झट एक तीखी नज़र से उसकी ओर ऐनक में से देखा मानो कह रहा हो, 'सुन बे मुल्ज़िम, जो सवाल तुझे पूछने की इजाज़त है, यदि उनकी सीमा से तू बाहर निकला, तो मैं तुझे अदालत से बाहर निकाल दूंगा।'

"मैंने जो कुछ उचित और आवश्यक समझा है, आपको बतला दिया है," डाक्टर बोला, "उससे अधिक जो कुछ होगा वह निरीक्षण से पता चलेगा।" और डाक्टर ने झुककर उसे विदा किया।

इवान इल्यीच धीरे-धीरे बाहर निकल आया, चुपचाप अपनी स्लेज में बैठा, और घर की ओर चल दिया। सारा वक्त वह मन में डाक्टर के कहे वाक्यों को दोहराता रहा, और यह समझने की कोशिश करता रहा कि उन अस्पष्ट तथा असमंजस में डाल देनेवाले वैज्ञानिक नामों का साधारण भाषा में क्या अर्थ होगा, ताकि उसमें से उसके प्रश्न का ... कि क्या उसकी हालत बुरी है, बहुत बुरी है, या क्या बुरी तो नहीं हुई ? उसने समझा कि डाक्टर ने जो कुछ ... सारांश यही है कि हालत बहुत खराब है। अब जिस

उसकी [illegible] में कोई अपनी किसी दूसरे आदमी का हित [illegible] [illegible] हो गया था, [illegible] [illegible] की [illegible] कोशिश करना, [illegible] और [illegible] स्थिति को सुधार उसकी स्थिति में [illegible]।

२१ [illegible] वह बैठा बहुत रहा, [illegible] कोशिश करने लगा [illegible] कि [illegible] ठीक हो रहा हूँ, [illegible] पर अपने को भ्रम [illegible]। परन्तु [illegible] कभी [illegible] अचानक ही [illegible], कमजोरी में कोई [illegible] बात हो जाती, [illegible] आँसू [illegible] बड़ी तीव्रता से [illegible] हो जाता। एक [illegible] वह बड़े धैर्य से दुर्घटना का सामना किया करता था, इस विश्वास के साथ कि वह उसपर काबू पा लेगा, कि आगे से वह 'अच्छी तरह रहेगा'। पर अब छोटी-सी भी दुर्घटना पर उसके पाँव लड़खड़ा जाते और वह निराश हो उठता। वह मन ही मन कहता, 'अभी मैं अच्छा-भला ठीक हो रहा था, दवाई अभी-अभी असर करने लगी थी, कि यह नई मुसीबत आ खड़ी हुई···' वह उस मुसीबत को कोसता, उन लोगों को कोसता जो उस मुसीबत का कारण थे और उसे [illegible] मार रहे थे। वह यह भी जानता था कि इस तरह कोसने से वह और भी जल्दी मर जाएगा पर इसपर उसका कोई बस न चलता था। उसे सचमुच यह समझ लेना चाहिए था कि इस तरह लोगों पर या अपनी परिस्थितियों पर गुस्सा करने से बीमारी बढ़ेगी, और इसलिए उसे इन आकस्मिक घटनाओं की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए। पर उसका तर्क बिलकुल उल्टा था। वह कहता कि अगर उसे किसी चीज की जरूरत है तो शान्ति की। जब शान्ति न रहती, तो वह खीझ उठता। इसके अलावा चिकित्सा-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़-पढ़कर और बहुत डाक्टरों से परामर्श ले-लेकर उसने अपनी स्थिति को और भी बिगाड़ लिया। उसकी हालत बहुत धीरे-धीरे बिगड़ रही थी। एक-एक दिन का फर्क बहुत मामूली था। इस कारण वह बड़ी आसानी से एक दिन की तुलना दूसरे दिन के साथ करता और अपने को भ्रम में डाले रहता।

वह डाक्टरों के पास जाता तो उसे महसूस होता जैसे उसकी

हालत न केवल बिगड़ रही है, बल्कि तेजी से बिगड़ रही है। पर इसके बावजूद उसने डाक्टरों के पास जाना नहीं छोड़ा।

उसी महीने में वह एक दूसरे विख्यात डाक्टर के पास गया। इस डाक्टर ने भी वही कुछ कहा जो पहले ने कहा था, केवल उसने समस्या को पेश दूसरे ढंग से किया। इस डाक्टर की बातें सुनकर इवान इल्यीच का भय और संदाय और भी बढ़ गए। एक तीसरे डाक्टर ने, जो इवान इल्यीच के एक मित्र का मित्र था, और बड़ा ख्यातिप्राप्त डाक्टर था, आंत्र के बाद एक बिलकुल ही पृथक् रोग का नाम लिया। उसने आश्वासन दिलाया कि इवान इल्यीच ठीक हो जाएगा। पर जिस तरह के सवाल उसने पूछे, और जिस तरह के अनुमान लगाता रहा, उनसे इवान इल्यीच और भी चकराया, और उसके संशय पहले से भी अधिक बढ़ गए। एक होम्योपैथ ने बिलकुल ही भिन्न निदान बताया। इवान इल्यीच हफ्ता-भर, बिना किसीको बताए, छिपकर उसकी दवाई खाता रहा। जब एक हफ्ता गुजर गया और उसे कोई लाभ न हुआ तो उसका विश्वास इसपर से उठ गया। इसीपर से ही नहीं, अन्य इलाजों पर से भी, और इवान इल्यीच निराश हो गया। इतना निराश वह पहले कभी नहीं हुआ था। एक बार, उसकी जान-पहचान की एक स्त्री ने उसे बताया कि रोगी का इलाज देव-चित्रों से भी हो जाता है। इवान इल्यीच बड़े ध्यान से सुनता रहा। उसे विश्वास भी होने लगा कि ऐसे इलाज सम्भव हो सकते हैं। पर इसके बाद वह बहुत डर गया, 'यह क्या बकवास है! मैं क्या इतना निकम्मा हो गया हूं?' उसने मन ही मन कहा। 'अगर मैं यों घबराता रहा तो मेरा कुछ नहीं बनेगा। मुझे चाहिए कि किसी एक डाक्टर को चुन लूं, और उसीका इलाज बाकायदा करता जाऊं। अब ऐसा ही करूंगा। बहुत हो चुका। मैं अपनी बीमारी के बारे में सोचना बिल्कुल बन्द कर दूंगा और अगली गर्मियों तक नियमित रूप से डाक्टर के निर्देशों का अक्षरशः पालन करूंगा। इसके बाद देखा जाएगा। अब मैं डावांडोल नहीं हुआ।' फैसला करना आसान था, पर इसपर अमल करना नामुमकिन था। कमर के दर्द ने उसे शिथिल कर दिया। वह और भी तेज होता जान पड़ता था, उससे उसे कभी भी चैन न मिलता। उसके मुंह का स्वाद और भी बकबका हो गया था। वह सोचता कि उसके श्वास में से बू आने लगी है। उसकी ---- जाती रही, और वह पहले से भी दुबला हो गया। अपने को और

धोखा देने की अब कोई गुंजाइश न थी। इवान इल्यीच के साथ कोई भयानक बात होने जा रही थी, कोई अजीब और महत्वपूर्ण बात जैसी कि उनके साथ पहले कभी न हुई थी। केवल उन्हीं को इसका भास हो रहा था। उनके आसपास के लोग या तो समझते नहीं थे, या समझना नहीं चाहते थे। वे यही समझे बैठे थे कि संसार में सब कुछ सदा भांति चल रहा है। इवान इल्यीच को जितना दुःख यह देखकर होता था उतना और किसी बात में नहीं। घर के लोग, विशेषकर उनकी पत्नी और बेटी, आजकल सबसे ज्यादा पार्टियों में जाने लगी थीं क्योंकि पार्टियों का मौसम था। वे कुछ भी देख-सुन न रही थीं। उल्टे वे उनसे नाराज होने लगतीं कि हर वक्त मुंह क्यों लटकाए रहते हो, और इतने चिड़चिड़े क्यों होते जा रहे हो? मानो यह उनका दोष हो। वे छिपाने की बहुत कोशिश करती, पर इवान इल्यीच को साफ नजर आ रहा था कि वे इसे अपना दुर्भाग्य समझती हैं। उनकी पत्नी ने तो उनकी बीमारी के प्रति एक खास रवैया अपना लिया था। इवान इल्यीच कुछ भी कहें या करें उसका रवैया न बदलता। वह रवैया यों था—वह अपने मित्रों से कहती, "देखो न, इवान इल्यीच डाक्टर के निर्देशों का यथावत् पालन नहीं कर पाते जैसे कि सब समझदार लोग करते हैं। आज दवाई लिएंगे और खुराक भी डाक्टर के आदेशानुसार खाएंगे, कल, यदि मैं ध्यान न रखूं, तो यह दवाई खाना भूल जाएंगे और मछली खा लेंगे, जिसकी डाक्टर ने मनाही कर रखी है। रात के एक बजे तक बैठे ताश खेलते रहते हैं।"

"मैंने कब ऐसा किया है?" एक बार इवान इल्यीच ने खीझकर कहा, "केवल एक बार प्योत्र इवानोविच के यहां ऐसा हुआ था।"

"और कल रात शेबेक के साथ।"

"इसे तुम क्यों गिनती हो? दर्द के कारण मुझे नींद तो नहीं आ रही थी।"

"मुझे क्या? अगर इसी तरह करते रहोगे तो कभी ठीक नहीं होगे और हमें दुःख देते रहोगे।"

जो कुछ प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना अपने मित्रों को या सीधे इवान इल्यीच को कहती, उससे तो यही पता चलता था कि वह पति को ही बीमारी का दोषी ठहरा रही है, और समझती है कि उसे तंग करने का एक और साधन उसके हाथ में आ गया है। इवान इल्यीच

से बुरी बात यह कि वह देख रहा होता कि मिखाइल मिखाइलोविच बहुत नाराज़ है, परन्तु इवान इल्यीच को उसकी कोई परवाह नहीं। क्यों परवाह नहीं ? यह सोचते ही भय से उनके रोंगटे खड़े हो जाते।

सभी देख रहे थे कि इवान इल्यीच का मन खिन्न हो उठा है। उससे कहते, "अगर थक गए हो तो हम खेलना बन्द कर दें ? तुम थो आराम कर लो।" आराम ? उसे तो नाम की भी थकावट नहीं, व तो बाज़ी खत्म करके उठेगा। सब लोग चुपचाप, मुंह लटकाए उं देखते रहते। इवान इल्यीच जानता था कि वही इस उदासी का कारण है, पर वह इसे दूर नहीं कर सकता। मेहमान खाना खाते। उनके बाद वे चले जाते। इवान इल्यीच अकेला रह जाता, और सोचता कि उनके जीवन में ज़हर घुल रहा है और वह औरों के जीवन में भी ज़हर घोल रहा है। यह ज़हर कम होने के बजाय उसके अन्दर अधिकाधिक फैलता जा रहा है।

यह सोने के लिए बिस्तर पर लेट जाता। पर एक तो कमर में दर्द, दूसरे मन भयाकुल, बिस्तर पर लेटता पर सो नहीं पाता। देर तक वह दर्द के कारण परेशान रहता। पर सुबह के वक्त वह ज़रूर उठ खड़ा होता, कपड़े पहनकर कचहरी जाता, वहां काम करता, लिखता, पढ़ता। अगर वह कचहरी न जाता तो चौबीस घण्टे उसे घर में गुज़ारने पड़ते। र में एक-एक घण्टा गुज़ारना दूभर हो उठता था। उसे इसी भांति ए जाना है। मुसीबत सिर पर मंडराने लगी है, और वह बिल्कुल केला है। एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो इसे समझता हो या उसके से सहानुभूति रखता हो।

५

महीना गुज़र गया, फिर दूसरा। नया साल आने से कुछ ह यह ने उसका साला उससे मिलने आया। जिस वक्त वह घर पहुंच इल्यीच कचहरी में था। प्रस्कोव्या प्योदोरोव्ना बाज़ार गई हु घर लौटने पर इवान इल्यीच ने देखा कि उसके पढ़ने के कमरे में साला खड़ा अपना सामान खोल रहा है। लिखना हट्टा-कट्टा है ! इवान इल्यीच के कदमों की आहट पाते ही उसने सिर ,, और इवान इल्यीच पर नज़र

डाक्टर' ने बतलाया था, वो याद आ गया। एक सुर्ख आदमी जल्द से अन्दर आ गया था और वह तैयार किया था। अपनी कल्पना में उसने गुर्दे को पकड़ा और अपनी जगह पर लगा दिया। कितना आसान मामला था! 'मैं अभी प्योत्र इवानोविच के पास जाऊंगा।' (यही डाक्टर मित्र का [illegible] था।) उसने घंटी बजाई, गाड़ी तैयार करने का हुक्म दिया और जाने की तैयारी करने लगा।

"क्या बात है, जी, जान?" उसकी पत्नी ने उदास लहजे में पूछा। आज उसकी आवाज में एक असाधारण दयालुता थी।

यह असाधारण दयालुता उसे बुरी लगी। उसने अपनी पत्नी की ओर आंखें तरेरकर देखा।

"प्योत्र इवानोविच के पास जा रहा हूं। जरूरी काम है।"

वह अपने मित्र के पास गया, जिसका एक डाक्टर मित्र था, और दोनों डाक्टर से मिलने गए। डाक्टर घर पर ही थे। इवान इल्यीच बड़ी देर तक उनके साथ बातें करता रहा।

डाक्टर ने जब उसे बताया कि उसके अन्दर कौन-कौन-सी शारीरिक तथा अवयव-सम्बन्धी तब्दीलियां हो रही हैं, तो सब बात स्पष्ट तया इवान इल्यीच की समझ में आ गई।

अन्धान्त्र में कोई चीज थी, कोई बिल्कुल छोटी-सी, अनाज के दाने के बराबर। इसका इलाज हो सकता था। एक अंग की क्रिया को थोड़ा मजबूत करने और दूसरे की क्रिया को थोड़ा कमजोर करने की जरूरत थी, और साथ ही इस चीज को वहीं घुला देना था। ऐसा करने से सब ठीक हो जाएगा।

इवान इल्यीच, भोजन के समय से थोड़ा बाद में पहुंचा। उसने खाना खाया और कुछ देर तक खुशी-खुशी बातें करता रहा। उसका जी नहीं चाहता था कि उठकर जाए और अपने कमरे में काम करे। आखिर वह उठा, पढ़नेवाले कमरे में जाकर बैठ गया और काम देखने लगा। कुछेक मुकद्दमों के कागजात उसने देखे, अपने काम पर खूब ध्यान लगाया, पर सारा वक्त उसके मन में एक बात चक्कर काटती रही कि एक बड़ा ही जरूरी और निजी मामला है जिसपर विचार करना उसने स्थगित कर रखा है। इस काम से निबटकर उसपर विचार करना होगा। काम समाप्त हुआ तो उसे याद आया कि वह निजी मामला क्या था: वह था, अपने [illegible] [illegible] विचार करना।

ज़िन्दगी थी, और अब वह खत्म होती जा रही है, खत्म होती जा रही और मैं इसे किसी तरह भी रोक नहीं सकता। मैं क्यों अपने को धोखा दूं ? मेरे सिवाय सभी लोग यह जानते हैं कि मैं मर रहा हूं। अब कुछ हफ्तों, कुछ दिनों, हो सकता है कुछ घड़ियों तक की बात रह गई है। किसी वक्त रोशनी थी, अब अंधेरा हो गया है। पहले मैं यहां था, अब मैं वहां जा रहा हूं। कहां जा रहा हूं ?' उसका सारा बदन पसीने से तर हो गया, और उसके लिए सांस तक लेना कठिन हो गया। अपने दिल की धड़कन के अलावा उसे कुछ सुनाई न देता था।

'मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। रहेगा क्या ? कुछ भी नहीं। मर कर मैं कहां जाऊंगा ? क्या यह सचमुच मौत है ? उफ, मैं मरना नहीं चाहता !' वह मोमबत्ती जलाने के लिए झट से उठ खड़ा हुआ, कांपते हाथों मोमबत्ती ढूंढने लगा, बत्ती और शमादान उसके हाथ से छूट कर फर्श पर जा गिरे, और वह फिर बिस्तर पर निढाल होकर लेट गया। आंखें फाड़-फाड़कर अंधेरे में देखते हुए वह बड़बड़ाया, 'क्या फरक पड़ता है, सब एक ही बात है। मौत ! हां मौत ! ये लोग नहीं जानते, और ये जानना भी नहीं चाहते, इन्हें मेरे साथ कोई हमदर्दी नहीं। ये गाने-बजाने में मस्त हैं। (बन्द दरवाजे में से उसे गाने की आवाज और साथ में पियानो की धुन सुनाई दी।) इस समय इन्हें कोई फरक नहीं दिखाई देता, पर शीघ्र ही ये भी मरेंगे। पागल कहीं के ! पहले मैं जाऊंगा, फिर इनकी बारी आएगी। मौत इनके सिरहाने भी खड़ी होगी। अब ये खुशियां मना रहे हैं. पशु कहीं के !' क्रोध से उसका गला रुंधने लगा। अपने घोर विषाद को वह बयान नहीं कर सकता था। उसे विश्वास नहीं होता था कि हरेक व्यक्ति का इस भयानक आतंक का शिकार होना पड़ता है। वह बिस्तर पर से थोड़ा उठा।

'कहीं कोई गड़बड़ है। मेरा मन ठिकाने नहीं है, उसे ठिकाने लाना चाहिए और फिर सारी समस्या पर शुरू से विचार करना चाहिए।' और उसने विचार करना शुरू किया। 'मेरी बीमारी शुरू कैसे हुई ? मुझे कमर में ठोकर लगा, पर उस समय मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई, दूसरे दिन भी नहीं। मामूली-सा दर्द उठा फिर वह

और उदास-सा रहने लगा। फिर तरह-तरह के डाक्टरों से परामर्श लेने लगा। सारा वक्त मैं कगार के अधिकाधिक निकट पहुंचता जा रहा था। मेरी शक्ति क्षीण होती गई। कगार के और निकट। और मैं यहां आ पहुंचा हूं, हड्डियों का ढांचा रह गया हूं। मेरी आंखों में चमक नहीं। मौत। और मैं अब भी अपने अन्त्यान्त के बारे में सोचता हूं। सोचता हूं कि मैं अपनी अतड़ियों को ठीक कर लूंगा। और मौत सामने खड़ी है। क्या सचमुच मौत आ पहुंची है?' फिर उसे भय ने जकड़ लिया। वह हांफने लगा, फिर दियासलाई टटोलने के लिए आगे की ओर झुका, पर पलंग के साथ रखी तिपाई के साथ उसकी कोहनी टकराई। तिपाई बीच में पड़ी थी। उसे दर्द हुआ, और गुस्से में आकर उसने ज़ोर से उसपर घूसा मारा। तिपाई गिर पड़ी। गहरी निराशा में वह हांफता हुआ फिर पीठ के बल लेट गया। उसका जी चाहता था कि वह उसी घड़ी मर जाए।

मेहमान अपने-अपने घरों को जाने लगे थे। जब तिपाई गिरी तब प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना उन्हें विदा कर रही थी। आवाज़ सुनकर कमरे में आई।

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। अचानक मुझसे तिपाई गिर गई।"

वह बाहर गई और एक मोमबत्ती जलाकर ले आई। उसने देखा, वह बिस्तर पर लेटा हुआ आंखें गाड़े उसे देखे जा रहा है और हांफ रहा है, मानो कोई लम्बा फासला दौड़कर आया हो।

"क्या बात है, ज़ीन?"

"न···नहीं, कुछ नहीं, मुझसे गिर गई है।" ('मैं क्यों इसे कुछ बताऊं? यह कभी नहीं समझेगी,' उसने सोचा।)

और वह नहीं समझी। उसने तिपाई उठाई, मोमबत्ती रखी, और तेज़ी से बाहर चली गई। उसे अपने मेहमानों को विदा करना था।

जब वह लौटकर आई तो उसने देखा कि वह अब भी पीठ के बल लेटा हुआ छत को ताके जा रहा है।

"क्या बात है? क्या तुम्हारी तबीयत पहले से ज़्यादा खराब है?"

"हां।"

उसने सिर हिलाया और बैठ गई।

आती थी, जिसे वान्या इतना प्यार करता था ? क्या केयस ने भी कभी अपनी माँ के हाथ को इतनी भावुकता से चूमा था, या उसके रेशमी कपड़ों की सरसराहट उसे इतनी प्यारी लगी थी ? क्या केयस ने भी कभी स्कूल में मिठाई की टिकियों के लिए ऊधम मचाया था ? या कभी किसी युवती से इतना प्रेम किया था ? या इतनी योग्यता से कचहरी में किसी मुकद्दमे की अध्यक्षता की थी ?

केयस मरणधर्मा नश्वर था, और यह युक्तिसंगत और उचित ही था कि वह मर जाए, परन्तु वह स्वयं वान्या, इवान इल्यीच, इसके सभी विचारों और भावनाओं को देखते हुए, इसकी स्थिति ही अलग थी। इसका मरना उचित और न्यायसंगत नहीं होगा। यह विचार ही बड़ा भयानक था।

ये सब विचार उसके मन में उठे।

'यदि मेरी किस्मत में केयस की तरह मरना ही बदा था, तो मुझे इसका पता चल जाता, अन्दर से कोई आवाज मुझे बता देती। पर मुझे ऐसी किसी बात का भान नहीं हुआ। मैं इतेना जानता था और मेरे दोस्त भी जानते थे कि मैं उस मिट्टी का बना हुआ नहीं हूँ जिसका केयस बना था। परन्तु अब देखो, यह क्या होने जा रहा है ?' उसने मन ही मन कहा, 'परन्तु यह नहीं हो सकता, कदापि नहीं हो सकता। असम्भव है। तिसपर भी यह होने जा रहा है। यह कैसे हो सकता है ? इसको कोई कैसे समझे ?'

यह नहीं समझ पाया, और उसने इस विचार को झूठ, भ्रामक और रुग्ण समझकर मन में से निकालने की कोशिश की। और इसके स्थान पर सच्चे और स्वस्थ विचारों को जाग्रत करने की चेष्टा की। पर यह विचार केवल विचारमात्र ही न था, वह तो यथार्थता थी, और वह बार-बार उनके सामने आ खड़ी होती।

इस विचार के स्थान पर उसने एक-एक करके कई अन्य विचारों को लाने की कोशिश की, इस आशा से कि इनसे उसे कोई सहारा मिलेगा। उसने फिर से पहले ढंग से सोचने की चेष्टा की, इस विचार-क्रम में वह मृत्यु को भूले रहता था। पर अजीब बात है, जो बातें पहले मृत्यु के विचार को एक पर्दे की तरह ढके रहती थीं, उसे छिपाए रहती थीं और यहाँ तक कि उसके अस्तित्व तक का पता नहीं चलता था, अब उसे छिपाने में असमर्थ थीं। पिछले कुछ दिनों से इवान इल्यीच उसी विचार-

क्रम को फिर से अपनाना चाहता था जिसमें मौत उसकी आंखों के सामने से ओझल हुई रहती थी। मिसाल के तौर पर वह मन ही मन कहता, 'मुझे अपने को काम में खो देना चाहिए। एक समय था जब काम के अतिरिक्त मेरे जीवन का कोई और उद्देश्य नहीं था।' इस तरह वह मन में से सब संशयों को निकालता हुआ, कचहरी जाता। वहां आकर मित्रों से बातचीत करता, सदा की भांति उनके बीच कुर्सी पर बैठ जाता, बलूत की बनी कुर्सी की बांहों को अपने पतले-पतले हाथों से पकड़ता, बैठे हुए कचहरी में एकत्रित लोगों को, सदा की भांति, एक धूमिल और दम्भपूर्ण नजर से देखता, अपनी बगल में बैठे आदमी की ओर झुकता, कचहरी के कागजात इधर-उधर उठाकर रखता, कुछ फुसफुसाकर कहता, फिर सहसा सीधे बैठकर और भौंहें चढ़ाकर वह परिचित वाक्य कहता जिससे अदालत की कार्यवाही शुरू होती है। पर काम के ऐन बीच में, भले ही मुकदमे के किसी भी हिस्से की सुनवाई हो रही हो, कमर का [illegible] दर्द फिर उठ खड़ा होता, और अन्दर ही अन्दर उसे कुरेदने लगता। इवान इल्यीच कोई विशेष ध्यान उसकी ओर न देना चाहता। उसे मन में से निकालने की चेष्टा करता, पर वह वैसे का वैसा अपना काम चलाता रहता। मौत उसके ऐन सामने आकर मानो खड़ी हो जाती, और इवान इल्यीच की आंखों से आंखें मिलाकर एकटक देखने लगती। इवान इल्यीच घबरा उठता, उसकी आंखों की चमक मन्द पड़ जाती, और वह एक बार फिर मन ही मन पूछता, 'क्या यही एकमात्र सत्य है?' और उसके साथियों और उससे नीचे काम करनेवाले लोगों को यह देखकर दुःख और आश्चर्य होता कि यह आदमी जो सदैव इतना प्रतिभावान और बारीकियों को पकड़नेवाला न्यायाधीश रहा है, अब घबराने और गलतियां करने लगा है। वह फिर झटकता, अपने को संभालता, और जैसे-तैसे कार्यवाही को अन्त तक निभाता। फिर घर लौट आता। परन्तु साथ लेकर यह निराशापूर्ण विचार उसके मन पर छाया रहता कि जिस चीज को वह अपने आपसे छिपाना चाहता है, उसे कानूनी कार्यवाही भी नहीं छिपा सकती। उससे बचने के लिए कैसा भी अदालती काम हो, उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता। सबसे भयानक बात यह थी, कि वह उसका सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती थी, उसे कुछ करने को [illegible] थी, इसके विपरीत, केवल एकटक इसकी ओर, ऐन इसकी आंखों [illegible] देखती रहती थी। और सम्भवतः से बचे रहने के अलावा वह दुःख

कर न सकता था।

मन की इस भयानक स्थिति से छुटकारा पाने के लिए उसने अन्य सांत्वनाओं अन्य ओटों को ढूढ़ने की कोशिश की। उसे अपने को छिपाने के लिए कोई ओट मिल जाती और कुछ देर के लिए उसे आराम मिलता। पर शीघ्र ही वह भी फट जाती या पारदर्शी हो उठती, मानो उसमें हर चीज को बेधने की शक्ति हो, और संसार की कोई भी चीज उसे रोक न सकती हो।

इन्हीं पिछले दिनों में कभी-कभी वह अपनी बैठक में आता, जिसे उसने इतनी मेहनत से सजाया था। इसी बैठक में वह गिरा था, इसीकी खातिर वह अपनी जिन्दगी से हाथ धो रहा था। इस विचार से उसके होंठो पर एक कटु मुस्कान आ जाती। उसे यकीन था कि जिस दिन वह गिरा था, उसी दिन से उसकी बीमारी शुरू हुई थी। उसी बैठक में वह गया और देखा कि साफ चमचमाती मेज पर एक गहरी खरोंच पड़ी है। वह क्योंकर पड़ी? उसे कारण का पता चल गया। तस्वीरों की अल्बम के क्लिप का एक किनारा एक जगह से मुड़ गया है। क्लिप कांसे का बना था। उसने अल्बम को उठाया। बड़ी महंगी अल्बम थी, और इसमें उसने बड़े ध्यान से स्वयं तस्वीरें लगाई थीं। बाहर बकसुआ टेढ़ा हो गया था, अन्दर तस्वीरें उलट-पलट पड़ी थीं, उसे अपनी बेटी और उसकी सहेलियों की लापरवाही पर बेहद गुस्सा आया। उसने बड़ी मेहनत से तस्वीरों को ठीक तरह लगाया, और क्लिप को सीधा किया।

फिर उसे ख्याल आया कि क्यों न अल्बमों सहित इन सारे साम-सामान को उठाकर कमरे के दूसरे कोने में रख दिया जाए, जहां पौधे रखे हैं। उसने चाकरानी को आवाज दी। उसकी पत्नी और बेटी मदद करने के लिए आ गईं। पर तीनों में मतभेद हो गया, उन्हें यह तबदीली पसन्द नहीं आई। उसने उन्हें समझाने की कोशिश की, और फिर क्रुद्ध हो उठा। परन्तु यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि इसमें वह उसे भूले रहा, वह उसके ध्यान से ओझल रही।

पर ज्योंही वह मेज को स्वयं वहां से हटाने लगा, तो उसकी पत्नी ने कहा, "मत करो। नौकरों को करने दो। कहीं तुम्हें फिर चोट न लग जाए।" और सहसा वह फिर पर्दे के पीछे से निकलकर सामने आ खड़ी हुई। ऐन उसकी आंखों के सामने से होकर निकल गई। उसका ख्याल था कि वह फिर दूर हो जाएगी। पर उसे फिर अपने अन्दर-दर्द का भास

होने लगा। वह दर्द अब भी बड़ा गहरा था, अब भी उसे अन्दर ही अन्दर कुरेदे जा रहा था। वह उसे भूल नहीं सकता था। और वह लाश दोनों के पीछे से उसकी ओर ताके जा रही थी। तो फिर दो हफ्ते बचाने से क्या लाभ ?

'क्या यह सच है कि इन्हीं पदों के लिए मैंने अपनी मौत को बुलाया ? उसी तरह जिस तरह किले के बुर्जों के लिए, युद्ध के समय सैनिक प्राण दे बैठता है। यह सच नहीं ! उफ, कितनी भयानक बात है ! कितनी बेहूदा बात है ! यह नहीं हो सकता ! कभी नहीं हो सकता'''परन्तु यह सच है।'

वह अपने पढ़ने के कमरे में जाकर लेट गया। पर फिर से फिर उसे अपने सामने खड़े पाया। ऐन सामने, और वह उसे हटाने में बिल्कुल असमर्थ था, कुछ नहीं कर सकता था। वह केवल यही कर सकता था कि उसके बारे में सोचता जाए, और उसकी रगों का खून [illegible] जाए।

७

यह कहना कठिन है कि ऐसा कैसे हुआ, पर बीमारी के तीसरे महीने में [illegible] उसकी पत्नी, उसकी बेटी, बेटा, नौकर, मित्र, डाक्टर और विशेषकर इवान इल्यीच स्वयं जान गया कि लोगों की [illegible] कि वह कब अपनी जगह खाली करता है, [illegible] और [illegible] से छुटकारा मिलता है [illegible] बहुत धीरे-धीरे, [illegible] हो रहा था।

[illegible] दिन-ब-दिन नींद कम आने लगी। वे उसे [illegible] अफीम और मार्फिया के इंजेक्शन देने लगे। पर इनसे कुछ [illegible] [illegible] जो इस अर्द्धचेतना में [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] के आदेशानुसार उसके लिए विशेष प्रकार का भोजन [illegible]

तैयार किया जाने लगा, पर वह उसे अधिकाधिक अरुचिकर लगता, उससे उसे तीव्र घृणा होने लगी।

इसी तरह उसका पेट साफ रखने के लिए विशेष व्यवस्था की गई। उनके लिए यह एक नई यन्त्रणा बन गई जो उसे हर रोज सहनी पड़ती थी। कुछ तो इसकी गन्दगी, बदबू, अटपटेपन के कारण, और कुछ इस-लिए कि एक-दूसरे आदमी को इस काम के लिए उसके साथ रहना पड़ता।

पर इस अप्रिय काम में एक सान्त्वना भी थी। भण्डारे में काम करने-वाला नौकर गेरासिम कमोड उठाने के लिए आया करता था।

गेरासिम एक साफ-सुथरा, ताजादम देहाती युवक था जिसे शहर की खुराक खूब ठीक बैठी थी। वह हर वक्त प्रसन्नचित्त और खिला-खिला रहता। शुरू-शुरू में तो जब रूसी पोशाक पहने इस साफ-सुथरे लड़के को इतना घृणित काम करते देखा तो इवान इल्यीच को अच्छा न लगा।

एक बार इवान इल्यीच कमोड पर से उठा तो उसमें इतनी ताकत न थी कि वह अपनी पतलून भी ऊपर चढ़ा सके। वह धड़ाम [illegible] आराम कुर्सी पर पड़ गया। लेटे-लेटे भयातुर आंखों से वह अपनी नंगी पिंडलियों को देखने लगा। उनपर से उसके ढिलढिले पट्ठे लटकने लगे थे।

उसी वक्त गेरासिम हल्के-हल्के किन्तु मजबूती से पांव रखता हुआ वहां आ पहुंचा। उसमें जाड़े की ताजगी तथा कोलतार की गन्ध आ रही थी जो वह अपने मोटे-मोटे बूटों पर मलकर हटा था। उसने साफ-सुथरी सूती कमीज पहन रखी थी और उसके ऊपर घर के बुने साफ कपड़े का लबादा डाल रखा था। कमीज की आस्तीनें चढ़ी हुई थीं, जिससे उसकी तरुण हृष्ट-पुष्ट बांहें नजर आ रही थीं। शायद वह डरता था कि उसके अपने चेहरे को देखकर, जिसपर जीवन का आनन्द फूट-फूट पड़ता था, कहीं इवान इल्यीच अपने को तिरस्कृत महसूस न करे। इसलिए बिना इवान इल्यीच की ओर देखे, वह सीधा कमोड [redacted] पास जा पहुंचा।

"गेरासिम," इवान इल्यीच ने क्षीण-सी आवाज में पुकारा।

गेरासिम जरा चौंका, उसे डर लगा कि शायद उससे कोई भूल हो गई है। और जल्दी से वह घूमकर रोगी की ओर देखने लगा। उसके तरुण चेहरे से ही उसके सरल, मधुर स्वभाव का पता चल जाता था। उसकी मसें भीग चली थीं।

"क्या है, हुजूर ?"

"तुम्हें यह बहुत बुरा मालूम हो रहा होगा। मुझे माफ करना। मैं यह स्वयं कर नहीं सका।"

"आप क्या कहते हैं, हुजूर ?" और गेरासिम मुस्कराया जिससे उसकी आंखें और दांत चमक उठे। "मैं क्यों न आपकी मदद करूं ? आप बीमार जो हैं।"

अपने मजबूत, दक्ष हाथों से उसने अपना रोज का काम किया, और दबे पांव कमरे से बाहर निकल गया। पांच मिनट बाद वह वैसे ही दबे पांव फिर वापस आया।

इवान इल्यीच अब भी आराम कुर्सी पर पड़ा हुआ था।

लड़के ने साफ कमोड वहां रख दिया। इसपर इवान इल्यीच ने पुकारकर कहा :

"गेरासिम, जरा इधर आना भैया, मेरी थोड़ी मदद कर देना।" गेरासिम मालिक की ओर गया। "मुझे उठाओ। मैं खुद नहीं उठ सकता। द्मीत्री यहां पर नहीं है। मैंने उसे बाहर भेज दिया था।"

गेरासिम नीचे को झुका और अपने मजबूत हाथों से—उनका स्पर्श इतना ही हल्का था जितने कि उसके कदम—उसने इवान इल्यीच को धीरे से और बड़ी कुशलता से उठाया, फिर एक हाथ से उसे थामे रख कर, दूसरे हाथ से उसकी पतलून चढ़ा दी। वह उसे फिर आराम कुर्सी में बैठालने लगा था जब इवान इल्यीच ने उसे सोफे पर ले चलने को कहा। गेरासिम बिना जोर लगाए उसे उठा लाया और सोफे पर बिठा दिया।

"बड़ी मेहरबानी। तुम कितने समझदार हो, कितना अच्छा काम करते हो !"

गेरासिम फिर मुस्कराया, और बाहर जाने को हुआ, परन्तु इवान इल्यीच को उसका वहां ठहरना इतना भला लग रहा था, कि उसने उसे जाने नहीं दिया।

"बुरा न मानो तो वह कुर्सी जरा इधर लेते आना। नहीं, वह नहीं, आपवाली, मेरे पांव उसपर रख दो। मैं पांव जरा ऊपर कर लूं तो थोड़ा बेहतर महसूस करता हूं।"

गेरासिम कुर्सी ले आया। एक ही झटके में वह फर्श पर कुर्सी पट-कने को था, कि अपने को रोक लिया और बिना हल्की-सी भी आहट

किए उसे फर्श पर टिका दिया, और फिर इवान इल्यीच के पांव उसपर रख दिए। जब गेरासिम ने उसके पांव उठाए तो उसे भास हुआ जैसे अभी से वह बेहतर महसूस करने लगा है।

"मैं पांव ऊपर कर लूं तो बेहतर महसूस करता हूं। वहां से तकिया उठा लाओ और मेरे पांव के नीचे रख दो।"

गेरासिम ने वैसा ही किया। उसने मरीज़ के पांव उठाए और नीचे तकिया रख दिया। अब भी जब गेरासिम ने उसके पांव उठाए तो उसे अच्छा लगा। जब नीचे रख दिए तो तबीयत खराब होने लगी।

"गेरासिम, क्या इस वक्त तुम्हें बहुत काम है?"

"नहीं तो हुज़ूर, बिल्कुल नहीं।" शहरी लोगों से गेरासिम ने सीख लिया था कि बड़ों से कैसे बात करनी चाहिए।

"तुम्हें और क्या काम करना है?"

"कुछ भी नहीं हुज़ूर। मैंने सब काम कर लिया है। कल के लिए थोड़ी लकड़ी चीरना बाकी है, बस।"

"क्या तुम थोड़ी देर के लिए मेरे पांव ऊपर को उठाए रख सकते हो?"

"क्यों नहीं, हुज़ूर।" और गेरासिम ने उसके पांव ऊपर को उठा रखे। और इवान इल्यीच को लगा, जैसे उस स्थिति में उसे बिल्कुल ही कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा है।

"लकड़ी का क्या करोगे?"

"आप चिन्ता न करें, हुज़ूर। मैं वक्त निकाल लूंगा।"

इवान इल्यीच ने गेरासिम को बिठा लिया। पांव उठवाए हुए, वह उससे बातें करने लगा। भले ही यह विचित्र बात जान पड़े पर उसे सचमुच महसूस हो रहा था कि यदि गेरासिम उसके पैर थामे रहे, तो उसकी तबीयत सम्भली रहती है।

उसके बाद इवान इल्यीच किसी-किसी वक्त गेरासिम को अपने पास बुला लिया करता, और उसके कन्धों पर अपने पैर रखवा लेता। उस लड़के के साथ बातें करने में उसे बड़ा सुख मिलता। गेरासिम जो भी काम करता, इतने शौक से, इतने सहज और सरल ढंग से, इतनी हंसी-खुशी के साथ कि इवान इल्यीच का दिल भर आता। घर में गेरासिम को छोड़कर, और लोगों को स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट और प्रसन्नचित्त देखकर, इवान इल्यीच को चिढ़ होती। और गेरासिम को प्रसन्नचित्त

और स्वस्थ देखकर, ईर्ष्या के मारे उसे गलीज होता।

इवान इल्यीच को सबसे अधिक क्लेश इस बात का था कि सब लोग इस मनगढ़ंत झूठ को मानते थे कि वह केवल बीमार है, मर नहीं रहा, और यदि वह चुपचाप डाक्टरों के आदेश का पालन करता जाएगा तो स्वस्थ हो जाएगा। वह भली भांति जानता था कि कुछ भी क्यों न किया जाए, उसकी स्थिति नहीं सुधरेगी, केवल उसकी यन्त्रणा बढ़ती जाएगी और अन्त में वह मर जाएगा। इस झूठ से उसे कष्ट होता था, वह इस झूठ को मानने के लिए तैयार न था। सभी जानते थे कि क्या बात है। वह स्वयं भी जानता था। फिर भी उसकी भयंकर स्थिति के कारण सभी इस झूठ को उस पर थोपते चले जा रहे थे। उसे मजबूर करना चाहते थे कि वह भी इस झूठ को सच मानने लगे। जब वह मौत के द्वार पर आ पहुंचा है, उस समय उस पर यह झूठ थोपना उसकी मृत्यु की गम्भीर तथा गरिमामयी क्रिया को ओछे स्तर पर ले जाता था। उस ओछे स्तर पर जिस पर लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, और भोजन करते हैं, और बैठकों में बैठकर स्वादिष्ट खाने खाते हुए गप्पें हांकते हैं। यह सोचकर इवान इल्यीच को बेहद कष्ट होता, बर्दाश्त से बाहर। और, अजीब बात है, कई बार जब लोग उसके साथ इस औपचारिक ढंग से व्यवहार करते तो उसके मुंह से निकलने को होता, 'झूठ मत बोलो! तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूं कि मैं मर रहा हूं। और नहीं तो कम से कम झूठ बोलना तो बन्द कर दो!' पर यह कहने का साहस वह कभी भी नहीं जुटा पाता। उसे साफ नजर आ रहा था कि उसके इर्द-गिर्द के लोग उसकी मृत्यु की गम्भीर भयावह क्रिया को एक अप्रिय घटना के बराबर समझते हैं, एक तरह का अशिष्ट व्यवहार मानते हैं। (जिस भांति लोग उस आदमी को बुरा समझते हैं जो एक बैठक के अन्दर आए, और आते ही बू छोड़ दे, उसी तरह लोग इवान इल्यीच के व्यवहार को भी अशिष्ट समझते थे।) मानो वह शिष्टाचार के नियमों का उल्लंघन कर रहा हो, जिसका वह स्वयं आजीवन गुलाम रहा था। उसे लगता जैसे किसी को भी उसके प्रति सहानुभूति नहीं, कोई भी उसकी स्थिति को समझना नहीं चाहता। केवल एक ही [illegible] स्थिति को समझता था और जिसके दिल में उसके [illegible] । यह गेरासिम था। इस कारण उसी एक आदमी को [illegible] अपने पास रखना भी चाहता था। कभी-कभी गेरासिम

निर्णय के महत्त्व पर बिना किसी उत्साह के अपनी राय देनी पड़ती है और बड़ी दृढ़ता से उसका पक्ष लेना पड़ता है। इवान इल्यीच के जीवन के अन्तिम दिनों को कटु बनाने के लिए जिस चीज़ ने सबसे अधिक विष घोला रह था यह झूठ, जो उसके भीतर और बाहर सब ओर फैला हुआ था।

८

सुबह हो चुकी थी। इसका पता इस बात से चलता था कि गेरासिम कमरे से बाहर जा चुका था और चोबदार प्योत्र अन्दर आ गया था। चोबदार ने बत्तियां बुझाईं, एक खिड़की पर से पर्दे हटाए, और दबे पांव, चुपचाप कमरे की सफाई करने लगा। परन्तु सुबह हो या शाम, शुक्रवार हो या रविवार, इवान इल्यीच के लिए कोई फर्क न पड़ता था, सब दिन एक जैसे थे। सारा वक्त घातक पीड़ा अन्दर छीलती रहती, क्षण-भर के लिए भी न थमती; एक ही बात की चेतना उसे रहती कि जीवन, किसी अटल नियम के अनुसार समाप्त होता जा रहा है, परन्तु अभी तक पूर्णतया समाप्त नहीं हो पाया; और संसार की एकमात्र यथार्थता, मृत्यु, घृणित मृत्यु, धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ती चली आ रही है। और इसपर—वह झूठ। उसे दिनों, हफ्तों का ध्यान ही क्योंकर आ सकता था?

"आप चाय पिएंगे, हुज़ूर?"

('प्रात काल परिवार के सभी लोग चाय पीते हैं, इसलिए इसे बताना होगा,' इवान इल्यीच ने सोचा।)

"नहीं," उसने कहा।

"शायद हुज़ूर अब सोफे पर आराम करना चाहेंगे?"

('इसे कमरा साफ करना है और मैं इसकी सफाई में बाधक बन रहा हूं। मैं कमरे को खराब कर रहा हूं, मेरे कारण चीज़ें अस्त-व्यस्त हो रही हैं,' इवान इल्यीच ने सोचा।)

"नहीं, मैं यहीं पर ठीक हूं," उसने कहा।

चोबदार थोड़ी देर तक और काम करता रहा। इवान इल्यीच ने [illegible]। प्योत्र बड़ी उत्कण्ठा से उसके पास दौड़ा आया।

"क्या चाहिए हुज़ूर?"

"घड़ी।"

घड़ी इवान इल्यीच के हाथ के सामने पड़ी थी। प्योत्र ने घड़ी उठा, कर दे दी।

"साढ़े आठ। क्या सब लोग उठ गए हैं ?"

'अभी नहीं हुजूर। वसीली इवानोविच (बेटा) स्कूल चले गए हैं, और प्रस्कोव्या फ्योदारोव्ना ने हुक्म दे रखा है कि जब भी आप उनसे मिलना चाहें तो उन्हें फौरन खबर कर दी जाए। क्या उन्हें बुला लाऊं, हुजूर ?"

"नहीं, रहने दो।" ('मैं थोड़ी चाय पी ही लूं तो क्या हर्ज है,' उसने सोचा।) "मेरे लिए थोड़ी चाय ले आओ।"

प्योत्र दरवाज़े की ओर बढ़ा। पर इवान इल्यीच यह सोचकर डर गया कि उसे कमरे में अकेला बैठना पड़ेगा। ('जरा कब किसने यहां पर रुका रहे ? हां, दवाई का बहाना हो सकता है।') "प्योत्र, मुझे दवाई की खुराक देते जाओ।" ("क्यों न लूं ? इससे शायद सच-मुच कुछ फायदा हो।') उसने एक चम्मच दवाई पी ली। ('नहीं, इसमें कुछ लाभ नहीं होगा। फिजूल है। बिल्कुल अपने को धोखा देने-वाली बात है। इसपर से अब मेरा विश्वास उठ गया है,' वह सोचने लगा जब उसके मुंह में वही मीठा बकबका परिचित स्वाद आया। 'यह पीड़ा मुझे क्यों सताए जा रही है ? काश कि यह एक मिनट-भर के लिए थम पाती !') वह कराह उठा। प्योत्र लौट आया। "नहीं, जाओ और मेरे लिए चाय ले आओ।"

प्योत्र चला गया। इवान इल्यीच अकेला रह गया था। कुछ तो दर्द के कारण, परन्तु अधिक मानसिक क्लेश के कारण वह कराहता रहा। 'समय का क्रम उसी तरह चल रहा है। लम्बे दिन जो कभी खत्म नहीं होते, और लम्बी, कभी न खत्म होनेवाली रात। काश कि वह जल्दी आ पाए। कौन जल्दी आ पाए ? मौत, अन्धकार ! नहीं, नहीं, मौत से तो कुछ भी बेहतर होगा !'

नाश्ते की तश्तरी उठाए प्योत्र अन्दर आया। इवान इल्यीच कुछ देर तक बड़ी व्यग्रता से उसकी ओर देखता रहा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह कौन है और क्या चाहता है। उसके यों घूरने पर प्योत्र कुछ सकपका गया। उसकी सकपकाहट देखकर इवान इल्यीच को होश आया।

"ओह, ठीक है, चाय लाया है," उसने कहा, "रख दो। अच्छा। बस, मेरे हाथ-मुंह धुला दो, और एक साफ कमीज निक दो।"

इवान इल्यीच मुंह-हाथ धोने लगा। धीरे-धीरे, थोड़ी-थोड़ी दे रुक-रुककर उसने अपने हाथ धोए, मुंह धोया, दांत साफ किए, बा काढे, और शीशे में अपना चेहरा देखा। चेहरा देखते ही वह डर गय विशेषकर जब उसने अपने बेजान से बाल उई, पीले माथे पर चिप हुए देखे।

कमीज बदलने वक्त उसने समझ लिया कि यदि उसने अपना शरी शीशे में देखा तो वह और भी भयावना होगा, इसलिए वह शीशे के सामने नहीं गया। आखिर सब काम निबट गया। उसने अपना ड्रेसिंग गाउन पहना, टांगों पर कम्बल ओढ़ा और आराम कुर्सी पर बैठकर चाय पीने लगा। कुछ देर के लिए उसने अपने को तरोताजा महसूस किया। पर ज्यों ही उसने चाय पीना शुरू किया, उसे फिर दर्द का भास होने लगा, और मुंह का स्वाद बदल गया। जैसे-तैसे उसने चाय पी ली और फिर टांगें फैलाकर लेट गया। लेटते ही उसने प्योत्र को कमरे में से चले जाने को कहा।

फिर वही चक्र चल पड़ा था। क्षण-भर के लिए आशा की एक किरण फूटती पर दूसरे क्षण निराशा का प्रचण्ड सागर उसे लील लेता। सारा वक्त यह पीड़ा, यह असह्य यातना उसे बेचैन किए रहती। जब वह अकेला होता तो पीड़ा असह्य हो उठती। जी चाहता कि किसी को बुलाए, पर वह पहले से जानता था कि इससे कोई लाभ न होगा, बल्कि और भी बुरा होगा। "अगर वह मुझे फिर मार्फीन दे दे जिससे मैं यह दर्द भूले रहूं तो कितना अच्छा हो। मुझे डाक्टर को जरूर कहना चाहि कि सोचकर कुछ बतलाए। यह स्थिति तो बिल्कुल असह्य हो गई बिल्कुल असह्य।"

एक घण्टा, फिर दूसरा घण्टा इसी तरह बीत गया। ड्योढ़ी किसीने घण्टी बजाई। शायद डाक्टर आया है। हां, डाक्टर है, मो ताजा, चुस्त, प्रसन्नचित्त, चेहरे पर आत्मविश्वास छलकता है, मा कह रहा हो, 'तुम डर गए जान पड़ते हो, पर चिन्ता नहीं क तुम्हारे डर का कारण अभी दूर किए देता हूं।' डाक्टर जान कि चेहरे पर यह भाव लेकर यहां पर आना असंगत है। पर व

"मैं ठीक हूँ, ठीक है, भाग्य साथ है," उसने कहा, "रह दो
सकता। बस, मेरे हाथ-मुंह धुला दो, और एक साफ कमीज
दो।"

इसान उत्तीन मुंह-हाथ धोने लगा। धीरे-धीरे, थोड़ी-थो
रुक-रुककर उसने अपने हाथ धोए, मुंह धोया, दांत साफ किए
काढ़े, और शीशे में अपना चेहरा देखा। चेहरा देखते ही वह
विशेषकर अब उसने अपने बेजान से बाल देखे, जो कि माथे पर
हुए थे।

कमीज बदलते वक्त उसने समझ लिया कि यदि उसने अपना
शीशे में देखा तो वह और भी भयावना होगा, इसलिए वह
सामने नहीं गया। आखिर सब काम निबट गया। उसने अपना
गाउन पहना, टांगों पर कम्बल ओढ़ा और आराम कुर्सी पर बैठकर
पीने लगा। कुछ देर के लिए उसने अपने को साधारण महसूस कि
पर ज्यों ही उसने चाय पीना शुरू किया, उसे फिर दर्द का भाव
लगा, और मुंह का स्वाद बदल गया। जैसे-तैसे उसने चाय पी
फिर टांगें फैलाकर लेट गया। लेटते ही उसने प्योत्र को कमरे में
जाने को कहा।

फिर वही चक्र चल पड़ा था। क्षण-भर के लिए आशा की
किरण फूटती पर दूसरे क्षण निराशा का प्रचण्ड सागर उसे लील ले
सारा वक्त वह पीड़ा, यह असह्य यातना उसे बेचैन किए रहती।
वह अकेला होता तो पीड़ा असह्य हो उठती। जी चाहता कि किसी
बुलाए, पर वह पहले से जानता था कि इससे कोई लाभ न होगा,
और भी बुरा होगा। "अगर वह मुझे फिर मार्फीन दे दे जिससे मैं
दर्द भूले रहूं तो कितना अच्छा हो। मुझे डाक्टर को जरूर कहना चाहि
कि सोचकर कुछ बतलाए। यह स्थिति तो बिल्कुल असह्य हो रही है
बिल्कुल असह्य।"

एक घण्टा, फिर दूसरा घण्टा इसी तरह बीत गया। ड्योढ़ी में
कितने घण्टी बजाई। शायद डाक्टर आया है। हां, डाक्टर है, मोटा
ताजा, चुस्त, प्रसन्नचित्त, ...
कह रहा हो, 'तुम
मैं तुम्हारे

वह अक्सर मरीजों के मामलों के प्रभाव में आ जाया करता था, भली भाँति जानते हुए भी कि वे झूठ बोल रहे हैं, और यह भी जानते हुए कि क्यों झूठ बोल रहे हैं।

डाक्टर अब भी मोढ़े पर घुटने टेके उसकी छाती को ठोंक-बजा देख रहा था जब दरवाज़े की ओर से रेशमी कपड़ों की सरसर सुनाई दी, और प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना की आवाज़ आई। वह पति पर नाराज़ हो रही थी कि उसने उसे डाक्टर के आने की खबर नहीं दी।

उसने आते ही पति को चूमा और उसकी सफ़ाई देने लगी कि वह तो कब की जगी हुई है, केवल किसी गलतफहमी के कारण वह डाक्टर के आने पर कमरे में नहीं पहुँच पाई।

इवान इल्यीच ने उसकी ओर देखा। उसकी एक-एक चीज़ ध्यान से देखा और उसका जी घृणा से भर उठा। उसकी बाहें कितनी सफ़ेद हैं, शरीर कितना हृष्ट पुष्ट, बाजू और गर्दन चिकने बाल और आँखें कैसी चमक रही हैं, अंग-अंग से जीवन का ओज फूट रहा है। इवान इल्यीच का रोम-रोम उसके प्रति घृणा से भर उठा। जब भी वह उसे हाथ लगाती, तो इवान इल्यीच के सारे शरीर में घृणा की एक लहर दौड़ जाती।

पर स्त्री का रवैया अपने पति और उसकी बीमारी की ओर नहीं बदला था। जैसे डाक्टर अपना रवैया अपने मरीज़ों के प्रति स्थिर कर लेते हैं और बदल नहीं पाते, उसी भाँति इसने भी अपने पति के प्रति एक रुख अपना लिया था—कि वह अपने रोग के लिए स्वयं ज़िम्मेवार है, वह ऐसी बातें करता है जो इसे नहीं करनी चाहिए। फिर प्यार से उसकी भर्त्सना करती। वह इस रवैये को बदल नहीं सकती थी।

"यह किसीकी सुनते ही नहीं। बाक़ायदा दवाई नहीं लेते। सबसे बुरी बात तो यह है कि जिस तरह यह टाँगें ऊपर को उठाए लेटे रहते हैं, उससे इन्हें ज़रूर नुकसान होगा।"

उसने बताया कि किस तरह इवान इल्यीच सेराफ़िम से टाँगें ऊपर उठवाए लेटा रहता है।

डाक्टर के होठों पर एक हल्की-सी स्नेह-भरी, अनुकम्पा-भरी मुस्कान आई। वह मानो कह रहा हो, 'मैं क्या कर सकता हूँ? हमारे मरीज़ तरह-तरह की कलाबाज़ियाँ करते रहते हैं।

माफ ही करना है।

जांच समाप्त करके डाक्टर ने अपनी घड़ी की ओर देखा। इधर प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना कहने लगी कि चाहे इवान इल्यीच को अच्छा लगे या बुरा, उसने एक प्रसिद्ध डाक्टर को भी आज बुला रखा है और वह और मिखाइल दनीलोविच (यह साधारण डाक्टर का नाम था) दोनों मिलकर जांच करेंगे और आपस में परामर्श करेंगे।

"बस, बस, इसका विरोध नहीं करना। यह मैं तुम्हारी खातिर नहीं, अपनी खातिर कर रही हूं," उसने व्यंग्य से कहा, इसलिए कि वह समझ जाए कि वह यह प्रबन्ध उसीकी खातिर कर रही है ताकि उसे प्रतिवाद करने का अधिकार न रहे। उसकी त्योरियां चढ़ गईं, पर वह बोला कुछ नहीं। वह जानता था कि वह झूठ के ऐसे कुचक्र में फंस गया है कि उसके लिए झूठ-सच पहचानना कठिन हो रहा है।

सच तो यह था कि उसकी स्त्री जो कुछ भी उसके लिए कर रही थी, वह दरअसल अपने ही लिए था। वह कहती भी यही थी कि मैं अपने लिए कर रही हूं, और वह कर भी अपने ही लिए रही थी। लेकिन वह बात इस ढंग से कहती कि यह असम्भव जान पड़ता, और सोचती कि इवान इल्यीच को समझना चाहिए था कि जो कुछ हो रहा है, उसीकी खातिर हो रहा है।

जैसा कि उसने कहा था, ठीक साढ़े ग्यारह बजे प्रसिद्ध डाक्टर आ पहुंचा। फिर उसके शरीर की ध्वनि-परीक्षा हुई, और उसकी उपस्थिति में, और साथवाले कमरे में, गुर्दों और अन्धान्त्रों के बारे में बड़ी विद्वत्तापूर्ण बातें हुईं। इतनी गम्भीर मुद्रा में सवाल-जवाब [illegible] मानो समस्या जीवन और मरण की नहीं—जो वास्तव में आज [illegible] इवान इल्यीच के सामने खड़ी थी—बल्कि गुर्दों और अन्धान्त्र की है, जिनका रवैया ठीक नहीं रहा और जिन्हें अब मिखाइल दनीलोविच और प्रसिद्ध डाक्टर अपने हाथ में लेकर अपने निश्चयानुसार चलाएंगे।

उसी तरह गम्भीर मुद्रा बनाए डाक्टर ने विदा ली। उस मुद्रा में निराशा का भाव न था। जब इवान इल्यीच ने भय और आशा से चमकती आंखें ऊपर उठाईं और डाक्टर से डर-डरकर पूछा कि क्या मैं तन्दुरुस्त हो जाऊंगा, तो जवाब में डाक्टर ने कहा कि पूरे विश्वास के साथ तो नहीं कह सकता, किन्तु इसकी सम्भावना जरूर है। डाक्टर जाने लगा तो इवान इल्यीच की आंखें दरवाजे

- 4

तक उसे देखती रही। उन आंखों में आशा की ऐसी हृदयविदारक करुणा थी कि जब प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना, डाक्टर के लिए फीस लाने कमरे से निकली, तो वह भी अपने आंसू नहीं रोक सकी।

डाक्टर के प्रोत्साहन से इवान इल्यीच का फिर होसला बढ़ा। पर वह अधिक देर तक नहीं रहा। वही कमरा, वही तस्वीरें, वही पर्दे, वही दीवारों का कागज, वही साज-सामान, और वही यन्त्रणा सहता हुआ, दर्द से छटपटाता शरीर। इवान इल्यीच कराहने लगा। उन्होंने एक इन्जेक्शन दिया जिससे वह बेसुध-सा पड़ रहा।

जब वह जगा तो शाम हो चुकी थी। उसके लिए खाना लाया गया। बड़ी मुश्किल से उसने थोड़ा-सा सूप मुंह में डाला। हर चीज फिर वैसी की वैसी हो रही थी। फिर रात घिरने लगी थी।

भोजन के उपरान्त, सात बजे प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना कमरे में आई। उसने बाहर जाने के लिए कपड़े पहन रखे थे। चेहरे पर पाउडर था, भारी-भरकम वक्ष कसकर बांधा था। आज प्रातः उसने इवान इल्यीच को याद करा दिया था कि परिवार के सब लोग नाटक देखने जा रहे हैं। सारा बेरनार नगर में अभिनय करने आई थी। इवान इल्यीच के ही बार-बार इसरार करने पर उन्होंने टिकट लिए थे। पर उसे यह सब भूल चुका था। बल्कि पत्नी का इतना अधिक शृंगार देखकर उसके दिल को चोट भी लगी। परन्तु यह याद करके कि उसी के आग्रह पर उन्होंने टिकट खरीदे थे—उसीने कहा था कि कलात्मक अभिनय से बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलती है—उसने अपनी भावनाओं को छिपाए रखा।

प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना कमरे में आई—चेहरे पर आत्मसंतोष, किन्तु कुछ-कुछ अपराधी महसूस करती हुई। वह बैठ गई, पति का हाल पूछा। वह जानता था कि इसका और कोई अभिप्राय नहीं, केवल औपचारिकता निभा रही है। वह इसलिए नहीं पूछ रही थी कि कुछ जानना चाहती थी। जानने को था ही क्या? उसने जो कुछ कहा वह केवल औपचारिकता थी: कि मैं तो कभी जाने का नाम भी न लेती यदि ये कम्बख्त टिकट न ले रखे होते, कि एलेन, उनकी बेटी और पेत्रोविच (जांच-मजिस्ट्रेट, उनकी बेटी का मंगेतर) तीनों जा रहे थे और उन्हें अकेले जाने देना ठीक नहीं है। पर मेरा जी तो जरा भी जाने को नहीं,

तक मैं बाहर रहूं डाक्टर के सभी आदेशों का पालन करते रहना।

"और फ्योदोर पेत्रोविच (वेटी का मंगेतर) तुम्हें मिलना चाहता है। क्या वह अन्दर आ जाए ? लीजा भी तुम्हें मिलना चाहती है।"

"आने दो।"

बेटी अन्दर आई, बनी-ठनी, शरीर का बहुत-सा हिस्सा उघड़ा हुआ। वह अपने शरीर की नुमाइश करना चाहती थी, जब कि इवान इल्यीच का शरीर दर्द से तड़प रहा था। वह स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट थी, प्रेम में मग्न कुछ भूली हुई, और दिल में इस बात पर नाराज थी कि पिता की बीमारी, क्लेश और आसन्न मृत्यु से उसके सुख पर एक छाया-सी आ पड़ी है।

फ्योदोर पेत्रोविच अन्दर आया। शाम की बढ़िया पोशाक पहने हुए, बाल घुंघराले बनाए हुए, लम्बी, उभड़ी हुई नसोंवाली गर्दन पर सफेद, कलफ लगा कालर, सफेद कमीज, मजबूत पिण्डलियों पर तंग काली पतलून, एक हाथ सफेद दस्ताने में, दूसरे में ऑपेरा हैट उठाए हुए।

उसके पीछे-पीछे इवान इल्यीच का बेटा, सरकता हुआ चला आया। वह स्कूल में पढ़ता था। किसीने उसे अन्दर आते नहीं देखा। उसने स्कूल की नई पोशाक पहन रखी थी और हाथों पर दस्ताने चढ़ाए था। बेचारा, उसकी आंखों के ईर्द-गिर्द वह काले वृत्त थे, जिनका अर्थ इवान इल्यीच समझता था।

इवान इल्यीच को सदा अपने बेटे पर दया आती थी। परन्तु अब लड़के की सहमी हुई, सहानुभूतिपूर्ण आंखों को देखकर उसे भय लगने लगा था। इवान इल्यीच को महसूस हुआ जैसे गेरासिम के बाद वास्या ही एक ऐसा व्यक्ति है, जो उसे समझता है और जिसके दिल में उसके प्रति सहानुभूति है।

सब बैठ गए। उन्होंने फिर पूछा कि उसकी तबीयत कैसी है। थोड़ी देर तक कोई कुछ नहीं बोला। लीजा ने मां से नाटक-गृह की दूरबीन के बारे में पूछा। इसपर मां-बेटी में छोटा-सा झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि किसने दूरबीन गलत जगह पर रख दी है। बड़ी भद्दी-सी बात हुई।

फ्योदोर पेत्रोविच ने इवान इल्यीच से पूछा कि क्या उन्होंने सारा बेर्नार का अभिनय देखा है। पहले तो प्रश्न इवान इल्यीच की समझ में नहीं आया, फिर उसने कहा :

"नहीं, क्या तुमने देखा है ?"
"हां, 'भाईने सेकुम्बर' में।"
फ्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना बोली कि एक-दूसरे नाटक में
ऐसा अच्छा अभिनय किया कि उसका मन मोह लिया। बेटी
इससे भिन्न थी। इसपर उसके अभिनय की स्वाभाविकता औ
बंध पर बहस होने लगी। इस बहस में दोनों ने वही कुछ कहा
ऐसे विषयों पर कहा जाता है।
वार्तालाप के दौरान फ्योदोर पैत्रोविच की नजर इवान इल्यी
पड़ी और वह चुप हो गया। और लोगों ने भी उसकी ओर देख
चुप हो गए। इवान इल्यीच ऐन अपने सामने देखे जा रहा था।
आंखें क्रोध से चमक रही थीं, जिसे वह छिपा नहीं पा रहा था।
करना होगा, पर क्या किया जा सकता है ? इस चुप्पी को तोड़ना
परन्तु किसीमें भी इसे तोड़ने की हिम्मत नहीं थी। सब डर रहे
किसी बात से इस झूठ का भण्डाफोड़ हो जाएगा जिसे शिष्टत
खातिर कायम रखा जा रहा था, और सब बात अपने असली
सामने आ जाएगी। सबसे पहले लीज़ा ने साहस जुटाया और
तोड़ी। चाहती तो थी कि उस भावना को छिपाए रखे, जो सब
हर कोई महसूस कर रहा था, पर इसके विपरीत उसने उसे प्रकट
ही दिया।
"अगर हमें जाना है तो फिर उठो," उसने घड़ी देखते हुए क
ह घड़ी उनके पिता ने उसे उपहार-रूप दी थी। उसी समय उ
हरे पर एक हल्की-सी महत्त्वपूर्ण मुस्कान भी दौड़ गई जो किसी
व्यक्ति को नजर नहीं आई, और जिसका अर्थ केवल वह और उस
गेतर ही जानते थे। फिर रेशमी कपड़ों की सरसराहट के साथ
ठ खड़ी हुई।
सब उठ खड़े हुए, विदा ली और चले गए।
इवान इल्यीच ने सोचा जैसे उनके चले जाने के बाद वह बेहत
हसूस करने लगा है। कम से कम उस झूठ से तो उसे छुटकारा मिला
न्हीं के साथ झूठ भी चला गया। पर दर्द और आतंक अब भी पीछे रह
ए थे। वही पुराना दर्द, वही पुराना भय जिनसे अधिक निर्मम कुछ न
, जिनसे क्षण-भर के लिए भी चैन न मिलता था। अब वे और भी
ज होने लगे थे

फिर उसी रफ्तार से वक्त रेंगने लगा, एक-एक मिनट, एक-ए
घंटा, पहले की ही तरह। इसका कोई अन्त न था। तिसपर भी अनिवा
अन्त का त्रास उसके हृदय में बढ़ने लगा था।

"हां, भेज दो गेरासिम को," उसने प्योत्र के प्रश्न का उत्तर दे
हुए कहा।

९

जब उसकी पत्नी लौटी तो काफी देर हो चुकी थी। वह धीरे-धी
दबे पांव अन्दर आई, पर उसे आहट मिल गई। उसने आखें खो
फिर झट से बन्द कर लीं। वह चाहती थी कि गेरासिम को बाहर भे
दे और स्वयं उसके पास बैठे, परन्तु उसने आखें खोलीं और बोला :

"नहीं, तुम चली जाओ।"

"क्या तुम्हें दर्द ज्यादा है ?"

"कोई परवाह नहीं।"

"थोड़ी अफीमवाली दवाई ले लो।"

उसने मान लिया और दवाई का घूंट भर लिया। वह बाहर च
गई।

प्रातः तीन बजे तक वह अर्द्धचेतन अवस्था में यन्त्रणा सहता र
अपनी कल्पना में उसने देखा कि वे लोग उसे एक तंग काली बोरी
अन्दर घुसेड़ने की कोशिश कर रहे हैं, वह अधिकाधिक उसमें घुसत
रहा है, परन्तु वे लोग उसे नीचे तक नहीं पहुंचा पाते। उनके इस भ
नक व्यवहार से वह बड़ा दुःखी है। वह डर रहा था, तिसपर भी
बोरी के अंदर जाना चाहता था। इस तरह वह एक ही साथ, अपने
रोकने की भी चेष्टा कर रहा था और अन्दर घुसने की भी। सहसा
उसके हाथ से निकल गई और वह गिर पड़ा, और उसकी आख
गई। गेरासिम अब भी पलंग के पायताने बैठा था और चुपचाप,
था रहा था। इवान इल्यीच, अपनी पतली-पतली टांगें लड़के के
पर रखे, लेटा हुआ था। टांगों पर मोजे चढ़े थे। कमरे में, दीप के
अब भी बत्ती जल रही थी। इवान इल्यीच को अब भी दर्द हो रहा

"जाओ, चले जाओ, गेरासिम," उसने फुसफुसाकर कहा।

"कोई बात नहीं, हुजूर, मैं कुछ देर बैठूंगा।"

"नहीं, जाओ।"

सुखी जीवन की वे सभी घड़ियाँ अब वैसी नहीं लगती थीं, जैसी कि वह समझता आया था। हाँ, बचपन की सबसे पहली स्मृतियाँ अब भी सुखद लगती थीं। उसके बचपन के बहुत-से दिन सचमुच बड़े प्यारे थे, लगता जैसे उन दिनों जीवन में कोई प्रयोजन था। काश, कि वे दिन फिर लौट आते ! वह व्यक्ति अब कहाँ था जिसने उस सुखद जीवन का रस लिया था ? इवान इल्यीच को लगा, जैसे वह किसी अन्य व्यक्ति की स्मृतियों को जगा रहा है।

फिर वे स्मृतियाँ सामने आने लगीं जिनका नायक आज का इवान इल्यीच था। इवान इल्यीच के एकाग्र मन को वे सब बातें निरर्थक और दूषित जान पड़ने लगीं जो किसी समय आह्लादपूर्ण लगा करती थीं।

ज्यों-ज्यों वह अपने बचपन के बाद, वर्तमान के निकट आता जाता, उसे अपना सुख निरर्थक और संदिग्ध लगने लगा। इसकी शुरुआत न्याय-विद्यालय से हुई। कुछेक बातों में वहाँ के अनुभव अच्छे भी थे, वहाँ हँसी-खेल था, मैत्री थी, जीवन में आशा थी। पर ज्यों-ज्यों वह ऊपर की कक्षाओं में पहुँचता गया त्यों-त्यों ये सुख विरल होते गए। इसके बाद उसकी नौकरी शुरू हुई। शुरू-शुरू के दिनों में, जब वह गवर्नर का सेक्रेटरी था, तब भी उसे कुछेक अच्छी बातों का अनुभव हुआ। उनमें से अधिकांश का सम्बन्ध प्रेम से था। फिर क्रमशः उसका जीवन असम्बद्ध होता गया और अच्छी चीजें और भी कम होती गईं। उसके बाद अच्छाई और भी कम होती गई। जितना ही वह नौकरी में आगे बढ़ता जाता उतनी ही अच्छाई कम होती जाती।

फिर उसकी आँखों के सामने उसके विवाह का चित्र घूम गया। उसकी शादी बहुत ही अचानक हो गई थी। फिर उसका भ्रमजाल टूटा। उसे अपनी पत्नी के श्वास की गन्ध याद हो आई, वह कामान्धता, और फिर वह बनावटीपन ! वह नीरस धन्धा—पैसे की चिन्ता, वर्ष प्रतिवर्ष चलनेवाली चिन्ता। एक वर्ष, फिर दूसरा, तीसरा, दस साल, बीस साल, बिना किसी परिवर्तन के। जितनी ही अधिक यह चिन्ता होती, उतना ही अधिक जीवन नीरस होता जाता। 'मानो मैं सारा वक्त नीचे ही नीचे जा रहा हूँ, जहाँ मैं यह समझे बैठा था कि मैं ऊपर ही ऊपर उठ रहा हूँ। ठीक है, ऐसा ही था। मेरे मित्र भी यही कहते थे कि मैं ऊँचा उठ रहा हूँ, परन्तु वास्तव में स्वयं जीवन ही मेरे पाँव तले भरभराता जा रहा था। और आज मैं मौत के किनारे आ पहुँचा हूँ।

करता, 'यह क्या है ? क्या सचमुच यह मौत है ?' और कोई आन्तरिक आवाज उत्तर देती, 'हां, यह सचमुच मौत है।' 'फिर यह यन्त्रणा क्यों ?' जवाब आता, 'कोई कारण नहीं।' बस, यहीं तक यह बात पहुंच पाती। इसके अतिरिक्त कोई उत्तर न मिलता।

जब से यह बीमारी शुरू हुई थी और वह पहली बार डाक्टर के पास गया था, इवान इल्यीच का जीवन दो परस्पर-विरोधी मनःस्थितियों में बंट गया था, जो बारी-बारी से आती रहती थीं। एक थी निराशा की स्थिति, इस पूर्वाभास की कि भयानक, अगम्य मृत्यु निकट आ रही है, दूसरी थी आशा की, जिसकी प्रेरणा से वह अपने शरीर की क्रियाओं का बड़े ध्यान के साथ निरीक्षण करता रहता। एक समय उसकी नजर के सामने अपना गुर्दा या अन्धान्त्र होता और वह सोचता कि यह कुछ देर के लिए अपना काम ठीक तरह से नहीं कर रहा है; दूसरा वक्त होता जब उसे मौत के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आता था जो भयानक और अथाह थी जिससे छुटकारा पाने का कोई उपाय न था।

बीमारी के शुरू के दिनों से ही ये दो मन स्थितियां चल रही थीं। पर ज्यों-ज्यों उसकी बीमारी बढ़ती गई, उसके गुर्दे और अन्धान्त्र के सम्बन्ध में अनुमान अधिकाधिक काल्पनिक और असम्भव होते गए, परन्तु आनेवाली मौत की चेतना अधिकाधिक स्पष्ट होने लगी।

इतना याद-भर करने से ही कि उसकी हालत तीन महीने पहले क्या थी और अब क्या है, किस तरह क्रमशः वह नीचे ही नीचे उतरता चला गया है, आशा की सम्भावना तक मिट जाती थी।

इस एकाकीपन में, अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, वह सारा वक्त दीवार की ओर मुंह किए लेटा रहता, और केवल अपने अतीत के बारे में सोचा करता। इस आबाद शहर में, जहां इतने मित्र और सम्बन्धी रहते थे, वह बिल्कुल अकेला था। यदि वह समुद्र के तल पर पड़ा होता तो भी वह इतना अकेला न होता। एक एक करके बीते दिनों के चित्र उसके सामने उभरने लगते। उनका आरम्भ तो सदा हाल ही की किसी घटना से होता, पर फिर वे दूर अतीत में चले जाते, उसके बचपन में, और वहां बड़ी देर तक मंडराते रहते। कभी उसे सूखे आलूबुखारे याद हो आते जो उसे एक दिन खाने को दिए गए थे। इसपर अवश्य उसे बच-... हो आती, उनका विशेष स्वाद मुह

[illegible]

सम्भव है मैंने अपना जीवन उस ढंग से व्यतीत नहीं किया जैसे कि करना उचित था, उसके मन में विचार उठा। पर यह कैसे हो सकता है कि मैंने अपना जीवन ठीक तरह से न बिताया हो? मैं हर बात ठीक उसी तरह करता था जैसे कि करनी चाहिए थी। उसने मन ही मन कहा। फिर फौरन इस समस्या को मन से निकाल दिया। जीवन और मृत्यु के गूढ़ प्रश्न का उत्तर देना उसे असम्भव जान पड़ता था।

'तब तुम क्या चाहते हो? जीना? किस तरह जीना चाहते हो? जैसे तुम अदालत में रहे, और अदालत का चपरासी चिल्लाता था रहा है — 'जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं!' — 'जज आ रहा है, जज आ रहा है!'' उसने मन ही मन दोहराकर कहा, 'यह आ पहुंचा, जज आ गया! पर इसमें मेरा दोष नहीं है!'' उसने क्रोध से चिल्लाकर कहा, 'मेरा क्या दोष है?' उसने रोना बन्द कर दिया, और मुंह दीवार की ओर करके एक ही बात बार-बार सोचने लगा, 'क्यों, किस कारण मुझे यह भयानक यन्त्रणा सहनी पड़ रही है?'

परन्तु चाहे कितना ही वह विचार करे, उसे कोई उत्तर नहीं मिल पाता था। जब भी उसके मन में यह विचार उठता (और ऐसा अक्सर होता था) कि उसने उस भांति जीवन व्यतीत नहीं किया जैसे कि उसे करना चाहिए था, तो वह फौरन इस असंगत विचार को अपने मन से निकाल देता, यह कहकर कि उसने सर्वथा उचित ढंग से अपना जीवन व्यतीत किया है।

१०

दो सप्ताह और बीत गए। इवान इल्यीच अब सोफे पर ही पड़ा रहता था। सोफे पर इसलिए पड़ा रहता था कि वह बिस्तर पर नहीं लेटना चाहता था। अधिकांश समय दीवार की ओर मुंह किए लेटे रहता, और अकेले छटपटाता रहता। उसकी यन्त्रणा का वर्णन नहीं किया जा सकता। अकेले ही पड़े-पड़े वह इन जटिल प्रश्नों का उत्तर भी बूझा

'यह सब क्या हो रहा है? क्यों हो रहा है? विश्वास नहीं होता। विश्वास नहीं होता कि मेरा जीवन इतना निरर्थक और घृणित था। पर यदि मान भी लें कि वह घृणित और निरर्थक था, तो मैं मर क्यों रहा हूं, इतनी कठोर यन्त्रणा में क्यों मर रहा हूं? कहीं कोई भूल हुई है।

'शायद मैंने अपना जीवन उस ढंग से व्यतीत नहीं किया जैसे कि करना चाहिए था,' उसके मन में विचार उठा। 'पर यह कैसे हो सकता है कि मैंने अपना जीवन ठीक तरह से न बिताया हो? मैं हर बात उसी तरह करता था जैसे कि करनी चाहिए थी,' उसने मन ही मन जवाब दिया। फिर फौरन इस उत्तर को मन में से निकाल दिया। जीवन और मृत्यु के समूचे प्रश्न का उत्तर दे पाना उसे असम्भव लग रहा था।

'अब तुम क्या चाहते हो? जीना? किस भांति जीना चाहते हो? मानो तुम अदालत में हो, और अदालत का परिचायक चिल्लाए जा रहा है—'जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं!—जज आ रहा है, जज आ रहा है!' उसने मन ही मन दोहराकर कहा, 'वह आ पहुंचा, जज आ गया! पर इसमें मेरा दोष नहीं है!' उसने रोष से चिल्लाकर कहा, 'मेरा क्या दोष है?' उसने रोना बन्द कर दिया, और मुंह दीवार की ओर करके एक ही बात बार-बार सोचने लगा, 'क्यों, किस कारण मुझे यह भयानक यन्त्रणा सहनी पड़ रही है?'

परन्तु चाहे जितना ही वह विचार करे, उसे कोई उत्तर नहीं मिल पाता था। जब भी उसके मन में यह विचार उठता (और ऐसा अक्सर होता था) कि उसने उस भांति जीवन व्यतीत नहीं किया जैसे कि उसे करना चाहिए था, तो वह फौरन इस असंगत विचार को अपने मन से निकाल देता, यह कहकर कि उसने सर्वथा उचित ढंग से अपना जीवन व्यतीत किया है।

१०

दो सप्ताह और बीत गए। इवान इल्यीच अब सोफे पर ही पड़ा रहता था। सोफे पर इसलिए पड़ा रहता था कि वह बिस्तर पर नहीं लेटना चाहता था। अधिकांश समय दीवार की ओर मुंह किए लेटे रहता, और अकेले छटपटाता रहता। उसकी यन्त्रणा का वर्णन नहीं किया जा सकता। अकेले ही पड़े-पड़े वह इन कठिन प्रश्नों का उत्तर भी ढूंढ़ा

'यह सब क्या हो रहा है ? क्यों हो रहा है ? विश्वास नहीं होता। विश्वास नहीं होता कि मेरा जीवन इतना निरर्थक और घृणित था। पर यदि मान भी लें कि वह घृणित और निरर्थक था, तो मैं मर क्यों रहा हूँ, इतनी कठोर यन्त्रणा में क्यों मर रहा हूँ ? कहीं कोई भूल हुई है।

'शायद मैंने अपना जीवन उस ढंग से व्यतीत नहीं किया जैसे करना चाहिए था,' उसके मन में विचार उठा। 'पर यह कैसे हो सकता है कि मैंने अपना जीवन ठीक तरह से न बिताया हो ? मैं हर काम उसी तरह करता था जैसे कि करनी चाहिए थी,' उसने मन ही मन जवाब दिया। फिर फौरन इस उत्तर को मन में से निकाल दिया। जीवन और मृत्यु के गहरे प्रश्न का उत्तर दे पाना उसे असम्भव लग रहा था।

'अब तुम क्या चाहते हो ? जीना ? किस भाँति जीना चाहते हो ? मानो तुम अदालत में हो, और अदालत का परिचारक चिल्लाए जा रहा है—जज साहिबान तशरीफ ला रहे हैं !—जज आ रहा है, जज आ रहा है !' उसने मन ही मन दोहराकर कहा, 'वह आ पहुँचा, जज आ गया ! पर इसमें मेरा दोष नहीं है !' उसने क्रोध से चिल्लाकर कहा 'मेरा क्या दोष है ?' उसने रोना बन्द कर दिया, और मुँह दीवार की ओर करके एक ही बात बार-बार सोचने लगा, 'क्यों, किस कारण मुझे यह भयानक यन्त्रणा सहनी पड़ रही है ?'

परन्तु चाहे जितना ही वह विचार करे, उसे कोई उत्तर नहीं मिल पाता था। जब भी उसके मन में यह विचार उठता (और ऐसा अक्सर होता था) कि उसने उस भाँति जीवन व्यतीत नहीं किया जैसे कि उसे करना चाहिए था, तो वह फौरन इस असंगत विचार को अपने मन से निकाल देता, यह कहकर कि उसने सर्वथा उचित ढंग से अपना जीवन व्यतीत किया है।

१०

दो सप्ताह और बीत गए। इवान इल्यीच अब सोफे पर ही पड़ा रहता था। सोफे पर इसलिए पड़ा रहता था कि वह बिस्तर पर नहीं लेटना चाहता था। अधिकांश समय दीवार की ओर मुँह किए लेटे रहता, और अकेले छटपटाता रहता। उसकी यन्त्रणा का वर्णन नहीं किया जा सकता। अकेले ही पड़े-पड़े वह इन जटिल प्रश्नों का उत्तर भी ढूंढ़ा

करता, 'यह क्या है ? क्या सचमुच यह मौत है ?' और कोई आन्तरिक आवाज उत्तर देती, 'हां, यह सचमुच मौत है।' 'फिर यह यन्त्रणा क्यों ?' जवाब आता, 'कोई कारण नहीं।' बस, यहीं तक यह बात पहुंच पाती। इसके अतिरिक्त कोई उत्तर न मिलता।

जब से यह बीमारी शुरू हुई थी और वह पहली बार डाक्टर के पास गया था, इवान इल्यीच का जीवन दो परस्पर-विरोधी मनःस्थितियों में बंट गया था, जो बारी-बारी से आती रहती थी। एक थी निराशा की स्थिति, इस पूर्वाभास की कि भयानक, अगम्य मृत्यु निकट आ रही है, दूसरी थी आशा की, जिसकी प्रेरणा से वह अपने शरीर की क्रियाओं का बड़े ध्यान के साथ निरीक्षण करता रहता। एक समय उसकी नज़र के सामने अपना गुर्दा या अन्धान्त्र होता और वह सोचता कि यह कुछ देर के लिए अपना काम ठीक तरह से नहीं कर रहा है; दूसरा वक्त होता जब उसे मौत के सिवाय कुछ भी नज़र नहीं आता था जो भयानक और अथाह थी जिससे छुटकारा पाने का कोई उपाय न था।

बीमारी के शुरू के दिनों से ही ये दो मन स्थितियां चल रही थीं। पर ज्यों-ज्यों उनकी बीमारी बढ़ती गई, उनके गुर्दे और अन्धान्त्र के सम्बन्ध में अनुमान अधिकाधिक काल्पनिक और असम्भव होने गए, परन्तु आनेवाली मौत की चेतना अधिकाधिक स्पष्ट होने लगी।

इतना याद-भर करने से ही कि उनकी हालत तीन महीने पहले क्या थी और अब क्या है, किस तरह क्रमशः वह नीचे ही नीचे उतरता चला गया है, आशा की सम्भावना तक मिट जाती थी।

इस एकाकीपन में, अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, वह सारा वक्त दीवार की ओर मुंह किए लेटा रहता, और केवल अपने अतीत के बारे में सोचा करता। इस आबाद शहर में, जहां इतने मित्र और सम्बन्धी रहते थे, वह बिल्कुल अकेला था। यदि वह समुद्र के तल पर पड़ा होता तो भी वह इतना अकेला न होता। एक एक करके बीते दिनों के चित्र उसके सामने उभरने लगते। उनका आरम्भ तो सदा हाल ही की किसी घटना से होता, पर फिर वे दूर अतीत में चले जाते, उसके बचपन में, और वहां बड़ी देर तक मंडराते रहते। कभी उसे सूखे आलूबुखारे याद हो आते जो उसे एक दिन खाने को दिए गए थे। इसपर अवश्य उसे बचपन के पिलपिले आलूबुखारों की याद हो आती, उनका विशेष स्वाद मुंह

में आ जाता, वह स्वाद याद आ जाती जो आलूबुखारों की गुठलियाँ चूसते समय मुँह में से निकला करती थी। इस स्वाद को याद करके, उस के बाद उस समय की स्मृतियों का एक ताँता-सा लग जाता: धाय, भाई, खिलौने इत्यादि। 'मुझे उनके बारे में नहीं सोचना चाहिए··· इनसे दिल में दर्द उठता है जिसे मैं सह नहीं सकता,' इवान इल्यीच मन ही मन कहता और अपने विचारों को वर्तमान में खींच लाता। वह सोफे की पीठ पर लगे बटन और मोरक्को के बढ़िया चमड़े में पड़ी सिलवट के बारे में सोचने लगता। 'यह चमड़ा महँगा है परन्तु टिकाऊ नहीं। इसे खरीदते वक्त पत्नी के साथ मेरा झगड़ा हुआ था। जब हमने पिताजी के बैग का चमड़ा उधेड़ा था, तो वह चमड़ा दूसरी किस्म का था। तब हमें दण्ड दिया गया था, और माँ हमारे लिए पेस्ट्रियाँ लाई थीं। जो झगड़ा इसपर उठा था, वह भी दूसरी किस्म का था।' एक बार फिर उसके विचार बचपन की ओर भागते। उनके कारण मन दुःखी होता, और वह किसी दूसरी बात पर ध्यान लगाकर उन्हें मन में से निकालने की कोशिश करता।

परन्तु उसी समय अन्य स्मृतियाँ मन में उठने लगतीं। उस समय भी उसे भास होने लगता कि अपने अतीत में जितना ही वह दूर जाता है, उतना ही अधिक जिन्दगी बदतर होती जाती है। उस समय जीवन में अधिक अच्छाई और ओज था। अच्छाई और ओज दोनों एक रूप थे। 'जिस भाँति मेरी यन्त्रणा बढ़ती जा रही है, उसी भाँति मेरा सम्पूर्ण जीवन बद से बदतर होता चला गया है। एक ही सुहावना स्थल था और वह जीवन के आरम्भ में। उसके बाद जीवन की हर चीज पर अधिकाधिक कालिमा छाती गई, और वह कालिमा अधिकाधिक गहरी होती गई। जितनी दूरी अब मुझे मौत से अलग किए हुए है, उसके प्रतिलोमानुपात में···' इवान इल्यीच सोचता रहा। और उसके मन में एक पत्थर का चित्र खींच गया जो बढ़ते वेग से गिर रहा था। जीवन क्या है, निरन्तर बढ़ते हुए दुःखों का एक ताँता, जो तीव्रतर गति से अपने गन्तव्य ··· चला जा रहा है। और यह गन्तव्य क्या है? घोरतम ··· 'मैं गिर रहा हूँ···' वह चौंका, उसने इसका मुकाबला करने ·· हाथ-पाँव हिलाने की कोशिश की, परन्तु वह अब जान गया कि मुकाबला करना असम्भव है। उन विचारों से थककर, वह फिर ··· की पीठ पर टकटकी बाँधे देखने लगा—वह अपने सामने ··· उस

र को हटा नहीं सकता था जो भयानक कराल रूप लिए उसके सामने ड़ी थी। वह इन्तजार करने लगा कि कब वह गिरेगा, कब उसे वह ख़िरी धक्का लगेगा, कब वह नष्ट हो जाएगा। 'मुकाबला करना सम्भव है,' उसने मन ही मन कहा। 'काश कि मुझे इसका कारण मालूम हो पाता! पर यह भी असम्भव है। यदि मेरे जीवन-व्यवहार में कोई अनुचित बात रही हो तो इसका कुछ मतलब हो सकता है। पर यह मानना असम्भव है।' और उसे अपने जीवन की नेकी, शिष्टता, और औचित्य याद हो आया। 'मैं यह नहीं मान सकता,' उसने मुस-कराकर होंठ खोलते हुए, मन ही मन कहा, मानो उसकी मुस्कान देख-कर कोई धोखे में आ जाएगा। 'इसका कोई मतलब नहीं! यन्त्रणा। मृत्यु। क्यों?'

११

इसी तरह पन्द्रह दिन और बीत गए। इस बीच वह घटना घट गई जिसका उसे और उसकी पत्नी को इन्तजार था। पेत्रोविच ने शादी का प्रस्ताव रखा। यह एक दिन सायंकाल की बात है। दूसरे दिन प्रातः प्रस्कोव्या फ्योदोरोव्ना अपने पति के कमरे में आई। वह मन ही मन सोच रही थी कि किस भांति यह प्रस्ताव उसके सामने रखे। उस रात इवान इल्यीच की हालत और भी बिगड़ गई थी। जब प्रस्कोव्या फ्यो-दोरोव्ना कमरे में पहुंची तो वह उसी सोफे पर लेटा हुआ था, पर दूसरे ढंग से। वह पीठ के बल लेटा हुआ था और कराहे जा रहा था। उसकी आंखें एकटक सामने देख रही थीं।

उसकी पत्नी ने दवाई के बारे में कुछ कहना शुरू किया। वह घूम-कर उसकी ओर देखने लगा। उसे उसकी आंखों में अपने प्रति इतनी गहरी घृणा नजर आई कि वह अपना वाक्य भी पूरा नहीं कर पाई, और चुप हो गई।

"भगवान के लिए मुझे चैन से मरने दो," वह बोला।

वह बाहर जाने को हुई, परन्तु उसी वक्त उनकी बेटी अन्दर आ गई और अभिवादन के लिए उसके पास गई। उसने बेटी की ओर भी वैसी ही नजर से देखा। जब बेटी ने पूछा कि तबीयत कैसी है तो बड़ी रुखाई के साथ बोला कि जल्दी ही तुम लोगों को मुझसे छुटकारा मिल जाएगा। दोनों चुप हो गईं, और थोड़ी देर तक बैठी रहीं। फिर उठकर

"अच्छी बात है," उसने कहा। उनके सामने अपने पापों का स्वीकार करते हुए इवान इल्यीच का दिल द्रवित हो उठा, उसकी शंकाएं शिथिल-सी जान पड़ीं। इससे उसकी यातना भी कम हुई, और क्षण-भर के लिए उसकी आशा फिर जाग उठी। वह फिर अपने अन्धान्त्र के बारे में सोचने लगा। सम्भव है, उसका इलाज हो जाए। धार्मिक अनुष्ठान करते समय उसकी आंखों में आंसू भर आए।

अनुष्ठान के बाद उन्होंने उसे लिटा दिया। कुछ देर के लिए उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह पहले से बेहतर हो गया है। उसका दिल फिर एक बार स्वस्थ हो जाने की आशा से भर उठा। उसे उस ऑपरेशन की याद हो आई जो डाक्टर ने एक बार करने को कहा था। 'मैं जिन्दा रहना चाहता हूं, मरना नहीं चाहता,' उसने मन ही मन कहा। उसकी पत्नी उसे मुबारक देने आई, उसने वही बातें कहीं जो रोज कहती थी, फिर बोली :

"तुम्हारी तबीयत पहले से बेहतर है न, प्यारे जीन ?"

"हां," उसने बिना उसकी ओर देखे जवाब दिया।

उसके कपड़े, उसकी काया, उसके चेहरे का भाव, उसका स्वर—सभी कह रहे थे—'यह सब सत्य से बहुत दूर है। जो कुछ भी अभी तक तुम्हारे जीवन का अंग रहा है, या है, वह सब झूठ है, धोखा है, तुमसे जीवन और मरण के सत्य को छिपाता रहा है।' ज्योंही उसे यह ध्यान आता, उसी समय उसका हृदय घृणा से भर उठता, और घृणा के साथ घोर पीड़ा शरीर को चीरने लगती, और पीड़ा के साथ उसे अपनी अनिवार्य तथा आसन्न मृत्यु का ध्यान हो आता। शरीर नई-नई बातें महसूस करने लगा। उसके अन्दर कोई चीज मुड़ने और टूटने लगी और उसका दम घोटने लगी।

जब उसने अपने मुंह से 'हां' शब्द निकाला तो उसके चेहरे का भाव अत्यन्त डरावना था। उसकी आंखों में देखते हुए उसने [illegible] कर औंधा पड़ गया। जिस तरह झटके से वह लेटा, [illegible] भी आदमी हैरान रह जाता कि इतने कमजोर आदमी [illegible] लेटते ही वह चिल्लाया :

"[illegible]ओ ! चली जाओ ! निकल जाओ यहां से !"

१२

इसके बाद तीन दिन तक निरन्तर वह चीखता-चिल्लाता रहा।
उसकी चिल्लाहट दो कमरों से आगे तक सुनाई देती थी और सुनने
वाले कांप उठते थे। जिस घड़ी उसने अपनी पत्नी के सवाल का जवाब
दिया, उसी घड़ी उसने समझ लिया था कि सब खेल खत्म हो चुका है,
कोई आशा नहीं रह गई, अन्त आ पहुंचा है और उसकी सभी शंकाएं,
बस शंकाएं ही बनी रह जाएंगी, और उनका समाधान कभी नहीं हो
पाएगा।

"ओह! ओह! ओह!" वह भिन्न-भिन्न स्वरों में चीखता
शुरू-शुरू में वह चिल्ला उठता: "मैं···नहीं चा···ह···ता!" और
उसके बाद केवल 'ओह, ओह!' की चिल्लाहट सुनाई देती।

इन तीन दिनों में उसे महसूस होता रहा जैसे समय की गति थम
गई है, और वह उस काले बोरे के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है, जिसमें
कोई अदृश्य तथा अदम्य शक्ति उसे धकेले जा रही है। वह उस व्यक्ति
की भांति छटपटाता रहा, जिसे फांसी की सजा मिल चुकी हो, और
यह जानते हुए कि बचाव का कोई रास्ता नहीं, वह जल्लाद की बांहों
में छटपटाने लगे। वह जानता था कि प्रतिक्षण, इस तीव्र संघर्ष के
बावजूद, वह उस भयावह चीज के निकटतर होता जा रहा है। व
सोचता था कि उसकी इस यन्त्रणा का कारण यह है कि उसे जबरदस्ती
उस काली बोरी में धकेला जा रहा है, पर इससे भी अधिक इसलि
कि उसमें रेंगकर उसके अन्दर जाने की शक्ति नहीं है। यह विश्वास
कि उसने अपना जीवन उचित ढंग से व्यतीत किया है, उसे रेंगक
अन्दर जाने से रोक रहा था। अपने जीवन का इस तरह पक्ष लेन
उसकी प्रगति में बाधक बना हुआ था। इस कारण उसकी यन्त्रण
और भी बढ़ गई थी।

सहसा किसी शक्ति ने उसकी छाती और कमर में घूंसा मार
जिससे उसका सांस टूट गया और वह सीधा उस सूराख के अन्दर चल
गया। सूराख के पेंदे में उसे थोड़ी-सी टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी
उसे उस समय वैसे ही महसूस हुआ जैसे एक बार रेलगाड़ी में बैठे-बै
हुआ था। उसे लगा था जैसे गाड़ी आगे बढ़ी जा रही है, जबकि द
असल वह पीछे की ओर जा रही थी। फिर सहसा उसे वास्तवि

दिशा का बोध हुआ था।

'मैंने अपना जीवन उस ढंग से व्यतीत नहीं किया जैसे कि करना चाहिए था,' उसने मन ही मन कहा। 'पर कोई बात नहीं। अब भी वक्त है, मैं इसीको सच्चा बना सकता हूं। पर सत्य है क्या?' उसने अपने-आपसे पूछा, और सहसा चुप हो गया।

यह बात तीसरे दिन की अन्तिम घड़ियों में, उसके मरने से एक घण्टा पहले हुई। ऐन उसी वक्त उसका बेटा धीरे-धीरे उसके कमरे में आया और अपने पिता के बिस्तर के पास खड़ा हो गया। मरणासन्न व्यक्ति अब भी चीख-चिल्ला रहा था और बाहें पटक रहा था। एक हाथ बेटे के सिर को भी जा लगा। बेटे ने उसे पकड़ लिया, और अपने होठों से लगा लिया, और रोने लगा।

ऐन इसी वक्त वह उस सूराख के अन्दर घुसा था और उसे वह रोशनी दिखाई दी थी। उसी समय उसपर यह सत्य प्रकट हुआ था कि उसका जीवन उस भांति नहीं बीत पाया जैसे कि बीतना चाहिए था, कि अब भी वह उसका सुधार कर सकता है। 'सच्चा जीवन क्या है?' उसने अपने-आपसे पूछा, और चुप होकर सुनने लगा। उस समय उसे इस बात का बोध हुआ कि कोई उसका हाथ चूम रहा है। उसने आंखें खोलीं और अपने बेटे की ओर देखा। उसका दिल उसके प्रति द्रवित हो उठा। उसकी पत्नी अन्दर आई। इवान इल्यीच ने एक नजर पत्नी की ओर डाली। उसका मुंह खुला था और वह एकटक उसे देखे जा रही थी—नाक और गालों पर आंसू बह रहे थे जिन्हें पोंछा नहीं गया था। चेहरे पर निराशा का भाव था। उसका दिल पत्नी के प्रति भी अनुकम्पा से भर उठा।

'मैं इन्हें सता रहा हूं,' उसने सोचा, 'उन्हें मेरे कारण दुःख हो रहा है। मेरे चले जाने के बाद उनके लिए स्थिति बेहतर हो जाएगी।' यह बात वह उन्हें कह देना चाहता था, पर कहने की उसमें शक्ति नहीं थी। 'पर कहने से क्या लाभ, मुझे कुछ करना चाहिए,' उसने सोचा। उसने पत्नी की ओर देखा और बेटे की ओर आंख का इशारा किया।

'इसे ले जाओ···बेचारा···और तुम भी,' उसने कहा। साथ ही
२ कहना चाहता था, 'मुझे माफ कर दो,' परन्तु उसके होठों से 'मुझे भूल जाओ'। पर गलती सुधारने की उसमें ताकत नहीं थी। उसने केवल हाथ हिला दिया, इस ख्याल से कि जिसे समझना

वह उसका अर्थ समझ लेगा।

और शीघ्र ही उसपर यह बात स्पष्ट हो गई कि हर वह चीज जो उसे यन्त्रणा पहुंचा रही थी, और जिसे वह अपने पर से हटा नहीं पा रहा था, अब अपने आप गिर रही है, दोनों तरफ से गिर रही है, दसियों तरफ से, सभी तरफ से गिर रही है। उनके प्रति उसका दिल भर आया। वह सोचने लगा कि उनके दर्द को दूर करने के लिए उसे जरूर कुछ करना चाहिए। इस यन्त्रणा से अपने को और उनको मुक्ति दिलानी होगी। 'यह कितनी अच्छी बात है, कितनी सरल !' उसने सोचा। 'और यह दर्द ?' उसने अपने-आपसे पूछा, 'इसे मैं कैसे दूर करूं ? हे दर्द, कहां हो तुम ?'

वह दर्द को ढूंढने लगा।

'हां, यह रहा, पर इसकी क्या चिन्ता, रहने दो इसे।'

'और मौत ! मौत कहां है ?'

वह मौत के भय को खोजने लगा जिसका वह अभ्यस्त हो चुका था। वह उसे मिली नहीं। मौत कहां गई ? मौत है क्या चीज ? चूंकि मौत नहीं रही, इसलिए मौत का भय भी नहीं रहा।

मौत के स्थान पर अब वहां पर रोशनी थी।

"तो यह बात है !" सहसा वह ऊंची आवाज में बोल उठा, "अहा, क्या ही सुख है !"

यह सब क्षण-भर में हो गया, पर इस क्षण का महत्त्व चिरस्तन था। आसपास खड़े लोगों के लिए उसकी मृत्यु-यातना और दो घण्टे तक रही। उसके गले में घरघराहट होती रही, उसका दुर्बल शरीर बार-बार सिकुड़ता रहा। पर धीरे-धीरे यह घरघराहट बन्द हो गई।

'बस, समाप्त !' किसीने कहा।

उसने ये शब्द सुने और अपने अन्तर्मन में इन्हें दोहराया। 'मृत्यु समाप्त हो गई,' उसने मन ही मन कहा, 'अब मृत्यु नहीं रही।'

उसने एक लम्बी सांस खींची, जो बीच में ही टूट गई, अपने अंग फैलाए और मर गया।

नाच के बाद

"आपका कहना है कि मनुष्य अच्छे-बुरे का निर्णय स्वतन्त्र रूप से नहीं कर सकता, सब कुछ परिस्थितियों पर निर्भर करता है। आप कहते हैं कि मनुष्य जो कुछ भी बनता है, परिस्थितियों के हाथों बनता है। मैं यह नहीं मानता। मैं समझता हूं कि सब संयोग का खेल है। कम से कम अपने बारे में तो मुझे यही लगता है..."

हमारे बीच बहस चल रही थी। बहस का विषय था परिस्थितियों को बदलने की आवश्यकता। कहा गया कि मनुष्य के चरित्र को सुधारने से पहले जीवन की परिस्थितियों में सुधार करना जरूरी है। बहस के खात्मे पर ये शब्द हमारे दोस्त इवान वसील्येविच ने कहे। हम सब उनका बड़ा मान करते हैं। सच तो यह है कि बहस के सिलसिले में किसी ने भी यह नहीं कहा कि अच्छे और बुरे का निर्णय स्वतन्त्र रूप से नहीं हो सकता है। पर इवान वसील्येविच की आदत है कि बहस की गरमागरमी में जो सवाल उनके अपने मन में उठते हैं, वह उन्हीं के जवाब देने लगते हैं और उन्हीं विचारों से सम्बन्धित अपने जीवन के अनुभव सुनाने लगते हैं। किसी घटना की चर्चा करते समय अक्सर वह इस तरह खो जाते हैं कि उन्हें चर्चा के उद्देश्य का भी ध्यान नहीं रहता। मानो वह सदा बड़े उत्साह और सच्चाई से सुनाते हैं। इस बार भी यही कुछ हुआ।

"कम से कम अपने बारे में तो यही कहूंगा। मेरे जीवन को ढालने में परिस्थितियों का हाथ नहीं रहा, किसी दूसरी ही चीज़ का हाथ रहा।"

"किस चीज़ का?" हमने पूछा।

"यह एक लम्बी दास्तान है। अगर आप यह समझना चाहेंगे तो मुझे कहानी शुरू से आखिर तक सुनानी पड़ेगी।"

"तो सुनाइए न।"

इवान वसील्येविच ने क्षण-भर सोचकर सिर हिलाया।

"ठीक है," वह कहने लगे, "मेरे सारे जीवन का रुख एक रात-भर में, या यों कहें एक सुबह-भर में ही बदल गया।"

"क्यों, क्या हुआ?"

"हुआ यह कि मैं किसी लड़की से प्रेम करने लगा था। इससे पहले भी मैं कई बार प्यार कर चुका था, पर रंग इतना गाढ़ा कभी न हुआ था। इस बात को काफी मुद्दत हुई है, अब तो उसकी बेटियों तक की भी शादियां हो चुकी हैं। उसका नाम था व०, वरेन्का व०।" इवान वसील्येविच ने उसका पूरा नाम बताया। "आज पचास बरस की उम्र में भी वह देखते ही बनती है, पर उस समय तो वह केवल अठारह वर्ष की थी और गजब ढाती थी, ऊंचा-लम्बा, सांचे में ढला-सा, छरहरा बदन, गर्वीला, हां गर्वीला! वह सदा इस तरह सीधे तनी रहती मानो झुकना उसके लिए असम्भव हो। उसका सिर जरा-सा पीछे की ओर झुका रहता। सामने खड़ी होती तो शानदार कद और सलोने चेहरे के कारण रानी-सी लगती। वैसे वह ऐसी दुबली-पतली थी कि उसकी हड्डी-हड्डी नजर आती थी। उसकी रोबीली चाल-ढाल से डर लगता, पर उसके होंठों पर हर वक्त लुभावनी, मधुर मुस्कान खेलती रहती। उसकी आंखें बेहद खूबसूरत थीं, हर वक्त दमकती रहतीं। जवानी जैसी उमड़ी पड़ी थी। अदम्य आकर्षण था उस लड़की में।"

"इवान वसील्येविच तो सचमुच कविता करने लगे हैं, कविता।"

"मैं चाहे जितनी भी कविता करूं पर उसका सौन्दर्य उसमें बांध नहीं सकता। खैर, यह एक दूसरी बात है। इसका मेरी कहानी से कोई सम्बन्ध नहीं। जिन घटनाओं का मैं जिक्र करने जा रहा हूं, वे सन् ४० के आसपास घटीं। उस समय मैं एक प्रान्तीय विश्वविद्यालय में पढ़ता था। मैं नहीं जानता कि बात अच्छी थी या बुरी पर जो बहस-मुबाहिसे और गोष्ठियां आजकल होती हैं, वे उन दिनों हमारे विश्वविद्यालय में नहीं होती थीं। हम जवान थे और जवानों की तरह रहते थे—पढ़ते-पढ़ाते और जीवन का रस लूटते। मैं उन दिनों बड़ा हंसोड़ और हट्टा-कट्ठा युवक था। इसपर तुर्रा यह कि अमीर भी था। मेरे पास एक बढ़िया घोड़ा था। मैं लड़कियों के साथ बर्फगाड़ी में बैठकर पहाड़ों की ढलानों पर से फिसलने जाया करता था (तब स्केटिंग का फैशन नहीं चला

था)। पीने-पिलाने की पार्टियों में भी मैं अपने विद्यार्थी दोस्तों के साथ जाया करता। (उन दिनों हम शैम्पेन के अतिरिक्त और कुछ न पीते थे। अगर जेब खाली होती, तो हम कुछ भी न पीते। आजकल की तरह वोदका तो हम छूते भी नहीं थे।) पर सबसे अधिक मुझे नाच और पार्टियां भाती थीं। मैं अच्छा नाचता था और देखने में भी बुरा न था।"

"इतनी विनय की शायद ज़रूरत नहीं, क्यों?" एक महिला ने चुटकी ली। "हम सबने आपकी उन दिनों की तसवीर देखी है। आप तो बड़े खूबसूरत जवान थे।"

"शायद रहा हूंगा, पर मेरे कहने का यह मतलब नहीं था। मेरा प्रेम मरने की हद तक आ पहुंचा। एक दिन मैं एक नाचपार्टी में गया। पार्टी का आयोजन श्रवटाइड के आखिरी दिन मार्शल ने किया था। मार्शल बड़े अच्छे स्वभाव का बूढ़ा आदमी था। अमीर था, कामिरहैर की उपाधि प्राप्त था और इस तरह की पार्टियां करने का खासा शौकीन था। उसकी पत्नी भी उतने ही अच्छे स्वभाव की थी। जब मैं उनके घर पहुंचा तो वह मेहमानों का स्वागत करने के लिए पति के साथ दरवाजे पर खड़ी थी। मखमली गाउन पहने थी, और सिर पर हीरों की छोटी-सी जड़ाऊ टोपी लगा रखी थी। उसकी गर्दन और कन्धे गोरे और गुदगुदे थे और उन पर बढ़ती उम्र के चिह्न नज़र आने लगे थे। कन्धे उघड़े हुए थे, जैसे तस्वीरों में विक्टोरिया महारानी येलिज़ावेता पेत्रोव्ना के दिखाए जाते हैं। नाचपार्टी बहुत शानदार रही। जिस हॉल में इसका आयोजन हुआ था वह भी बड़ी शान-शौकत का था। मशहूर गवैये और साज़िन्दे मौजूद थे। वे शौकीन-रसिक ज़मींदार की मिल्कियत में थे। खाने को बहुत कुछ था, और शैम्पेन की तो जैसे नदियां बह रही थीं। मैंने शराब नहीं पी—मुझे प्रेम का नशा जो था! मैं इतना नाचा, इतना नाचा कि थककर चूर हो गया। मैंने हर तरह के नाच में भाग लिया—क्वाड्रिल, वाल्ज़, और पोल्का में। और यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मैं सबसे अधिक वारेन्का के साथ नाचा। वह सफ़ेद गाउन और गुलाबी रंग का कमरबन्द पहने थी। हाथों में बढ़िया चमड़े के दस्ताने थे, जो उसकी कुहनियों तक पहुंचते थे। पांवों में साटिन के जूते पहने थी। मज़ूर्का नाच के वक्त एक अनीसिमोव नाम का कमबख्त इंजीनियर मेरे साथ आ बैठ गया वारेन्का के साथ नाचने लगा। इसके लिए मैंने उसे कभी माफ़

नहीं किया। ज्यों ही वह हॉल के अन्दर आई, वह उसके पास जा पहुंचा और नाचने का प्रस्ताव रखा। मुझे पहुंचने में थोड़ी देर हो गई थी। मैं पहले हेयर-ड्रेसर के पास फिर दस्ताने खरीदने चला गया था। इस-लिए मजूर्का वरेन्का के साथ नाचने के बजाय मुझे एक जर्मन लड़की के साथ नाचना पड़ा। उसने किसी जमाने में मेरा प्रेम रहा था। मैं सोचता हूं कि उस शाम मैं उस लड़की के साथ बहुत बेरुखी से पेश आया। मैंने न तो उससे कोई बात की और न ही उसकी तरफ देखा। मेरी आंखें तो दूसरी ही लड़की पर गड़ी थीं—वही लड़की जिसका कद ऊंचा, बदन छरहरा और नाक-नक्शा सांचे में ढला-सा था और जिसके बदन पर सफ़ेद गाउन और गुलाबी कमरबन्द था। उसकी गालों में गड्ढे पड़ते थे। चेहरे पर उत्साह और खुशी की लाली थी। और आंखों में मोहकता और मृदुता छलकती थी। केवल मेरी ही आंखें उसपर नहीं थमी थीं, सभी उसीको निहार रहे थे। यहां तक कि स्त्रियां भी। बाकी सभी स्त्रियां उससे हेच लगती थीं। उसके सौन्दर्य से प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रह सकता था।

"कायदे से देखा जाए तो मजूर्का नाच के मामले में मैं उसका जोड़ीदार नहीं था, इसपर भी ज्यादा वक्त मैंने उसीके साथ नाचने में बिताया। बिना किसी झेंप-सकोच के वह नाचती हुई सारा कमरा लांघती सीधी मेरी ओर चली आती। मैं भी बिना निमन्त्रण का इन्त-जार किए, उछलकर उसके पास आ पहुंचता। वह मुस्कराती। ऐ उसके दिल की बात भांप जाता, इसके लिए वह मुस्कराकर मुझे धन्य-वाद देती। पर जब मैं और एक दूसरा पुरुष नाच में उसके पास पहुंचते और वह मेरा गुण भांप न बूझ पाती तो अपने दुबले-पतले कन्धे बिचका देती और अपना हाथ दूसरे पुरुष की ओर बढ़ा देती। फिर मेरी ओर देखकर हल्के-से मुस्कराती, मानो अफसोस कर रही हो और मुझे ढाढ़स बन्धा रही हो। मजूर्का के बाद वाल्ज नाच होने लगा। मैं बड़ी देर तक उसके साथ नाचता रहा। नाचते-नाचते उसकी सांस फूलने लग गई, वह मुस्कराती और धीमे से फ्रेंच में कहती, 'एक बार और!' मैं उसके साथ नाचता जाता। मुझे लगता जैसे कि मैं हवा में तैर रहा हूं। मुझे अपने शरीर का ध्यान तक न रहा।"

"जी, ध्यान तक न रहा। क्या कहते हैं! आपको खासा ध्यान रहा होगा दोस्त, जब आपने उसकी कमर में हाथ डाला होगा। आपको

अपने ही नहीं, बल्कि उनके भी शरीर का ध्यान रहा होगा," एक आदमी ने चुटकी ली।

इवान वसील्येविच का चेहरा तमतमा उठा, उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "तुम अपने बारे में या आजकल के युवकों के बारे में सोच रहे होगे। तुम लोग शरीर के सिवा और किसी बात के बारे में सोच ही नहीं सकते। हमारा ज़माना ऐसा नहीं था। ज्यों-ज्यों हमारा प्रेम किसी लड़की के लिए गहरा होता जाता था, हमारी नज़रों में उसका रूप एक देवी के समान निखरता जाता था। आज तुम्हें केवल टाँगें और टखने और शरीर के अंग-प्रत्यंग ही नज़र आते हैं। तुम्हारी दिलचस्पी केवल अपनी प्रेमिका के नंगे शरीर में रह गई है। पर मैं, जैसे अल्फ़ान्स कार्र ने लिखा है—सच मानो, वह बहुत अच्छा लेखक था—अपनी प्रेयसी को सदा कांसे के वस्त्रों में देखा करता था। उसकी नग्नता उघाड़ने के बजाय हम सदा, नोह के नेक बेटे के समान, उसे छिपाने की चेष्टा किया करते थे, पर यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आएगी।"

"उसकी बातों की परवाह न कीजिए, आप अपनी कहिए," एक दूसरे श्रोता ने कहा।

"हाँ, तो मैं उसके साथ नाचता रहा, मुझे वक्त का कोई अन्दाज़ न रहा। साज़िन्दे बुरी तरह थक गए थे—आप तो जानते हैं कि नाच के खात्मे पर क्या हालत होती है—वे मज़ूर्का की ही धुन बजाते रहे थे। इस बीच वे बुज़ुर्ग जो बैठक में ताश खेलने में व्यस्त रहे थे, तथा स्त्रियाँ और दूसरे लोग उठ-उठकर खाने की मेज़ों की ओर जाने लगे थे। नौकर-चाकर इधर-उधर भाग-दौड़ रहे थे। तीन बजने को हुए। हम इने-गिने बाकी मिनटों का रस निचोड़ लेना चाहते थे। मैंने फिर उससे नाचने का आग्रह किया। और हम शायद सौवीं बार कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक नाचने चले गए।

"'भोजन के बाद मेरे साथ क्वाड्रिल नाचोगी न?' उसे उसकी जगह पहुँचाते हुए मैंने पूछा।

"'ज़रूर, अगर माँ-बाप ने घर चलने का इरादा नहीं किया तो,' उसने मुस्कराते हुए कहा।

"'मैं उन्हें नहीं करने दूँगा,' मैंने कहा।

"'मेरा पंखा तो ज़रा देना,' वह कहने लगी।

"'मेरा दिल नहीं चाहता कि मैं यह पंखा तुम्हें लौटा दूँ,' उसका

सस्ता-सा सफ़ेद पंख उसके हाथ में देते हुए मैंने कहा।

"'घबराओ नहीं, यह लो,' उसने कहा और पखे में से एक पंख तोड़कर मुझे दे दिया।

"मैंने पंख ले लिया। मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा और रोम-रोम उसके प्रति कृतज्ञ हो उठा। मेरे मुह से एक शब्द भी न निकला। आखो ही आखो से मैंने अपने दिल का भाव जताया। उस समय मैं असीम सुख और आनन्द का अनुभव कर रहा था। मेरा दिल जाने कितना बड़ा हो उठा था। मुझे लगा जैसे मे पहलेवाला युवक ही नहीं रहा। मुझे अनुभव हुआ कि मैं किसी दूसरे लोक का प्राणी हू, जो कोई पाप नहीं कर सकता, केवल नेकी ही नेकी कर सकता है।

"मैंने वह पख अपने दस्ताने मे खोस लिया। और वहीं उसके पास खड़ा रह गया। मेरे पाव जैसे कील उठे।

"'वह देखो, वे लोग मेरे पिताजी से नाचने का आग्रह कर रहे हैं,' उसने एक ऊचे-लम्बे, रोबीले आदमी की तरफ इशारा करते हुए कहा। वह कर्नल की वर्दी मे दरवाज़े मे खड़ा था। कन्धो पर चादी के फ़ब्बे थे। घर की मालकिन तथा अन्य स्त्रियो ने उसे घेर रखा था।

"'वरेन्का, इधर आओ,' घर की मालकिन ने कहा—उस महिला के जिसके सिर पर जड़ाऊ टोपी थी और कन्धे रानी येलिज़वेता के-से थे।

"वरेन्का दरवाज़े की ओर जाने लगी तो मैं उसके पीछे हो लिया।

"'अपने पिता से कहो, बेटी, कि तुम्हारे साथ नाचें।' फिर कर्नल की ओर घूमकर मालकिन बोली, 'ज़रूर नाचो, प्योत्र व्लादिस्लाविच।'

"वरेन्का का पिता ऊचा-लम्बा, खूबसूरत, रोबीला व्यक्ति था। उम्र काफ़ी बड़ी थी। जान पड़ता था कि उसकी तन्दुरुस्ती का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता है। दमकता चेहरा, ज़ार निकोलाई प्रथम की तरह ऐंठी हुई सफ़ेद मूछें, सफ़ेद ही कलमें जो मूछो से जा मिली थीं। आगे की ओर बढ़े हुए बालों ने कनपटियां ढक रखी थीं। चेहरे पर लुभावनी, मधुर मुस्कराहट, *जैसी बेटी के, वैसी ही बाप के।* वह मुस्कराता तो उसकी आखें चमक उठतीं और होठ खिल उठते। शरीर उसका बड़ा खूबसूरत था, फ़ौजी अफ़सरों की तरह चौड़ी, आगे को उभरी हुई छाती और उसपर कुछेक तमगे, कन्धे चौड़े और टागें लम्बी और गठी हुई। वह पुराने ढंग का फ़ौजी अफ़सर था।

"हम दरवाज़े के पास पहुचे तो कर्नल बार-बार कह रहा था

'मुझे अब नाचने-वाचने का अभ्यास नहीं रहा।' इसपर भी उनने मुस्कराते हुए पेटी से तलवार उतारी, और पास खड़े एक लड़के को थमा दी। लड़के ने बड़ी उत्सुकता से तलवार ले ली। कर्नल ने बढ़िया चमड़े का दस्ताना अपने दायें हाथ पर चढ़ाया। 'सब बात नियम के अनुसार होनी चाहिए,' उनने मुस्कराते हुए कहा, और फिर अपनी बेटी का हाथ अपने हाथ में लेकर, थोड़ा-सा घूमकर नाचने के अन्दाज में खड़ा हो गया और नाच की संगत के लिए संगीत का इन्तजार करने लगा।

"मजूर्का की धुन बजने लगी। कर्नल ने एक पांव से फर्श पर जोर से ठोका दिया, और दूसरा पांव तेजी से घुमाकर नाचने लगा। फिर उनकी ऊंची-लम्बी काया कमरे में वृत्त में बनाती हुई थिरकने लगी। कभी धीरे-धीरे, बड़े बांकपन से, और कभी तेज-तेज, और मैं वह एड़िया ठकोरता। वरेन्का मता की तरह सधी-सी, उसके साथ-साथ तैरती। वह भी अपने छोटे-छोटे रेशम-से मुलायम पैर उठाती और ताल पर अपने पिता के कदमों के साथ-साथ, कभी लम्बे डग भरती तो कभी छोटे। सभी मेहमानों की निगाहें उनकी एक-एक हरकत पर गड़ी रहीं। मेरे हृदय में उस समय सराहना से अधिक गहरे आनन्द की भावना रही। कर्नल के बूट देखकर तो मेरा मन जैसे द्रवित हो उठा। यों तो वे बढ़िया बछड़े के चमड़े के बने थे, परन्तु नये फैशन के अनुसार नोकदार होने के बजाय, चौकोर थे। जाहिर है कि उन्हें फौज के मोची ने बनाया था। —कर्नल फैशनेबुल बूट नहीं पहनता है, साधारण बूट पहनता है ताकि अपनी बेटी को अच्छे से अच्छे कपड़े पहना सके और उसे सोसाइटी में ले जा सके—मैंने मन ही मन कहा। इसी कारण, कर्नल के बूटों को देखकर मेरा मन द्रवित हुआ था। कर्नल किसी जमाने में जरूर ही अच्छा नाचता रहा होगा। अब उसका शरीर बोझिल हो गया था, टांगों में भी वह लचक न रह गई थी, वह तेज और नाजुक तोड़ न ले सकता था, पर कोशिश जरूर कर रहा था। दो बार वह कमरे में गोल चक्कर-सा काटता हुआ घूम गया। इसके बाद उसने अपने दोनों पांव खोले, और फिर सहसा उन्हें एकसाथ जोड़कर एक घुटने के बल बैठ गया। लोग 'वाह-वाह' कर उठे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस भारी-भरकम बदन का घुटनेपर खासा दबाव पड़ा। वरेन्का ... घुटने के नीचे दब गई। उसने मुस्कराते हुए उसे छुड़ाया ... से नाचती हुई कर्नल के इर्द-गिर्द घूम गई। कर्नल को

थोड़ी-सी कठिनाई का अनुभव हुआ मगर वह उठ खड़ा हुआ और बड़े प्यार से, दोनों हाथों में अपनी बेटी का मुंह लेकर, उसका माथा चूमा। फिर वह उसे मेरी ओर ले आया। उसने मुझे अपनी बेटी का नाच का साथी समझा, पर मैंने इस स्थिति से इन्कार किया। इसपर वह दुलार से मुस्कराया और अपनी तलवार पेटी में बांधते हुए बोला :

"कोई बात नहीं, तुम अब इसके साथ नाचो।"

"जिस तरह शराब की बोतल से पहले कुछ बूंदें रिसती हैं और फिर धार फूट निकलती है, ठीक वैसे ही मेरे अन्तर से वरेन्का के प्रति प्यार उमड़ पड़ा। इस प्यार ने सारे विश्व को आलिंगन में भर लिया। क्या हीरों की टोपीवाली घर की मालकिन, क्या घर के मालिक, क्या मेहमान और क्या मुझसे रूठा हुआ अनीसिमोव, सभीके प्रति मैंने असीम अनुराग का अनुभव किया। वरेन्का के पिता के प्रति, जिसने बोझीलदार्यावाले बूट पहन रखे थे और जिसकी मुस्कान अपनी बेटी की मुस्कान से मिलती-जुलती थी, मेरे हृदय में श्रद्धा का भाव उठने लगा।

"मजूर्का समाप्त हुआ। मेजबानों ने हमें भोजन के लिए आमन्त्रित किया। परन्तु कर्नल ब० खाने के मेज पर नहीं आया। बोला, 'मैं अब और न रुक सकूंगा, क्योंकि मुझे कल सुबह जल्दी उठना है।' मुझे डर लगा कि वह अपने साथ वरेन्का को भी ले जाएगा, पर वरेन्का अपनी मां के साथ बनी रही।

"भोजन के बाद मैं वरेन्का के साथ क्वाड्रिल नाचा। इसका उसने मुझे वचन दिया था। मैं समझ रहा था कि मेरी खुशी चरम सीमा तक जा पहुंची है। पर नहीं, अब वह और भी अधिक बढ़ने लगी, और क्षण-प्रतिक्षण बढ़ती गई। हमने प्रेम की कोई बात नहीं की। वह मुझसे प्रेम करती है या नहीं, यह एक सवाल रहा। पर, इस विषय में न तो मैंने उससे कुछ पूछा और न ही अपने मन से मैं प्रेम करता हूं, यह मैंने अनुभव किया, और यह बात मुझे अपनी खुशी काफी लगी। डर लगा तो केवल यह कि कहीं रंग में भंग न हो।

"मैं घर पहुंचा, कपड़े बदले और सोने की तैयारी करने लगा, मगर नींद कहां? हाथ में वह पर और वरेन्का का दस्ताना अब भी पकड़े हुए था। दस्ताना उसने मुझे अपनी मां के साथ बग्घी में चढ़ते समय दिया था। इन चीजों पर निगाह पड़ते ही मुझे उसका चेहरा याद हो आता था। या तो उस समय जब नाच के लिए दो पुरुषों में से चुनते

हुए उसने मेरा गुप्त नाम पूछ लिया था और मधुर स्वर में कहा था, 'गर्व' है क्या तुम्हारा नाम ?' और हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया था। या भोजन करते समय शैम्पेन के हल्के हल्के घूंट भरते हुए उसने गिलास के ऊपर से मेरी ओर देखा था। उसकी आंखों में मृदुता छलक रही थी। पर उसका सबसे सुन्दर रूप मुझे वह लगा था जब वह अपने पिता साथ नाच रही थी। संगीत की गुनगुनाहट में उसके साथ-साथ तैरती और अपने प्रशंसकों की ओर गर्व और उल्लास से देखती जा रही थी ! यह गर्व और उल्लास का भाव जितना अपने प्रति था उतना ही अपने पिता के प्रति भी। दोनों प्राणी, अपने आप ही, बिना किसी चेष्टा के मेरे दिल में समा गए थे और मेरे स्नेह के केन्द्र बन गए थे।

"मेरे भाई का देहान्त हो चुका है पर उस समय मैं और वह, एक साथ रहते थे। मेरे भाई को समा-सोसाइटी में कोई रुचि न थी और वह इन नाचपार्टियों में कभी भी नहीं जाते थे। उन दिनों स्नातक-परीक्षा की तैयारी कर रहे थे और बड़ा आदर्श जीवन बिताते थे। उस समय वह तकिये पर सिर रखे गहरी नींद में सो रहे थे। आधे चेहरे पर कम्बल था। उन्हें देखकर मेरा दिल दया से भर उठा। वह मेरी भावना, मेरे उल्लास और मेरे सुख से अनभिज्ञ थे और मैं उनसे उन्हें भागीदार बना भी न सकता था। मेरा नौकर, पेत्रूशा, मोमबत्ती जलाकर ले आया और कपड़े बदलवाने लगा। लेकिन मैंने उसे रुखसत कर दिया। उसकी आंखें नींद से बोझिल हो रही थीं और बाल बिखरे हुए थे। वह मुझे बहुत भला लगा। किसी तरह की आहट न करने के खयाल से मैं दबे पांवों अपने कमरे में चला गया और बिस्तर पर आ बैठा। मैं बेहद खुश था यहां तक कि मेरे लिए सोना असम्भव हो रहा था। मुझे लगा कि कमरे में बड़ी गर्मी है। बिना वर्दी उतारे मैं चुपचाप बाहर ड्योढ़ी में आ गया और ओवरकोट पहनकर दरवाजे से बाहर निकल आया।

"लगभग पांच बजे मैं नाच से लौटा था, और मुझे लौटे भी लगभग दो घण्टे हो चले थे। इसलिए जब मैं बाहर निकला तो दिन चढ़ चुका था। मौसम भी बिलकुल श्रवटाईड के दिनों का-सा था—चारों ओर धुंध छाई थी, सड़कों पर बरफ पिघल रही थी और छतों से टप-टप की बूंदें गिर रही थीं। उन दिनों ब० परिवार के लोग शहर के दूर के हिस्से में रहा करते थे। उनका मकान एक खुले मैदान के एक सिरे पर था। दूसरे सिरे पर लड़कियों का एक स्कूल था। एक ओर

लोगों के टहलने की जगह थी। मैं अपने घर के सामनेवाली छोटी-सी गली लांघकर बड़ी सड़क पर आ गया। सड़क पर लोग आ-जा रहे थे। बर्फगाड़ियों पर गाड़ीवान लकड़ी के तख्ते लादे लिए जा रहे थे। गाड़ियों के बमों से लकीरें पड़ रही थीं। बर्फ पर गहरे निशान बनते जा रहे थे। घोड़ों पर पानी से पालिश किए साज कसे थे। उनके पीले सिर एक लय में हिल रहे थे, गाड़ीवान कन्धों पर छाल की चटाइयां ओढ़े थे, और बड़े-बड़े बूट चढ़ाए गाड़ियों के साथ-साथ कीचड़ में धीरे-धीरे चले जा रहे थे। मुझे हरेक चीज प्यारी और महत्त्वपूर्ण लग रही थी: सड़क के दोनों तरफ के घर भी, जो धुंध में बड़े ऊंचे नज़र आ रहे थे।

"मैं उस मैदान के पास जा पहुंचा जहां उनका मकान था। मुझे वहां एक सिरे पर, जहां लोग टहलने आया करते थे, कोई बड़ी काली-सी चीज नज़र आई। साथ ही ढोल और बांसुरी बजने की आवाज भी कानों में पड़ी। वैसे तो हर घड़ी मेरा मन खुशी में नाचता रहा था, और मजूर्का की धुन जब-तब मेरे कानों में गूंजती रही थी, पर यह संगीत कुछ अलग ही लगा—तीखा और भद्दा-सा।"

"'यह भला क्या हो सकता है?' मैं सोचने लगा। मैं उसी आवाज की दिशा में फिसलन-भरी सड़क पर बढ़ा। सड़क मैदान के बीचोंबीच से जाती थी, और उसपर छकड़े अक्सर ही आते-जाते रहते थे। मैं कोई सौ कदम गया हूंगा कि मुझे धुंध में लोगों की भीड़-सी नज़र आई। बात साफ हुई। वे फौजी सिपाही थे। मैंने सोचा कि सुबह की कवायद कर रहे होंगे। मेरे साथ-साथ सड़क पर एक लोहार चला जा रहा था। उसने एप्रन और जाकेट पहन रखे थे। कपड़ों पर जगह-जगह तेल के धब्बे थे। उसके हाथ में बड़ी-सी गठरी थी। मैं उसके साथ हो लिया। पास आकर मैंने देखा कि सैनिकों की दो कतारें आमने-सामने खड़ी हैं। उन्होंने काले कोट पहन रखे हैं, उनके हाथों में बन्दूकें हैं और वे चुपचाप खड़े हैं। उनके पीछे दो आदमी हैं—एक बांसुरी बजानेवाला और दूसरा ढोल पीटनेवाला लड़का। दोनों कोई धुन निकाल रहे हैं। पुन वही तीखी और भद्दी है।

"हम रुक गए। 'ये क्या कर रहे हैं?' मैंने लोहार से पूछा।

"'एक तातार को सज़ा दी जा रही है। उसने फौज से भागने कोशिश की थी,' लोहार ने गुस्से के साथ जवाब दिया और दोहरी के दूसरे सिरे की ओर आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगा।

थी, नीली और लाल-लाल, और यहां से वहां तक बढ़ियां ही बढ़ियां थीं। मुझे विश्वास न हुआ कि यह एक इन्सान का शरीर है।

'हे भगवान !' मेरे पास खड़ा लोहार बुदबुदाया।

"जुलूस आगे को बढ़ने लगा। उस गिरते-पड़ते, बार-बार दया की भीख मांगते जीव पर दोनों तरफ से कोड़े पड़ते गए। ढोल बजता गया, बांसुरी में से वही तीखी धुन निकलती रही, और रोबीला कर्नल उसी तरह रोब-दाब से अपराधी के साथ चलता गया। सहसा कर्नल रुक गया और तेजी से एक सैनिक की ओर बढ़ा :

"'चूक गए, क्यों ? मैं तुम्हें सिखाऊंगा !' उसकी क्रोध-भरी आवाज मेरे कानों में पड़ी। उसने अपने मजबूत, चमड़े के दस्ताने से लैस हाथ से, नाटे-छोटे, दुबले-पतले सैनिक के मुंह पर तमाचे पर तमाचे जड़ने शुरू कर दिए, क्योंकि सैनिक का हण्टर पूरे जोर के साथ तातार की लहूलुहान पीठ पर नहीं पड़ा था। 'यह ले ! और ले ! समझ में आया ? नये हण्टर लाओ !' कर्नल ने चिल्लाकर कहा, मुझ और उसकी नजर मुझपर पड़ी। मुझे देखकर अनदेखा करते हुए, उसने बुरी तरह भौंह सिकोड़कर बड़े गुस्से से मेरी ओर देखा और झट से पीठ फेर ली। मैंने बड़ी शर्म महसूस की। मेरी समझ में न आया कि मुड़ तो किस ओर को मुड़। मुझे लगा कि जैसे मैं कोई घिनौना काम करते पकड़ा गया हूं। मैं सिर झुकाए, तेज चाल से घर लौट आया। सारा रास्ता मेरे कानों में बजते ढोल और तीखी बांसुरी की आवाज आती रही। 'रहम करो, भाइयो !' की दर्द-भरी चीख और 'यह ले, और ले ! समझ में आया ?'—कर्नल की गुस्से और दम्भ से भरी चिल्लाहट कानों के पर्दे फाड़ती रही। मेरा दिल इस तरह दर्द से भर उठा कि मुझे लगा जैसे कि सचमुच मेरे दिल में पीड़ा होने लगी है। मुझे मतली आने लगी, यहां तक कि मुझे बार-बार राह में ठिठकना पड़ा। रह-रहकर जी चाहता कि मैं कै कर, किसी तरह, इस दृश्य से ईरजी घृणा को अपने अन्दर से बाहर निकाल दूं। मुझे याद नहीं कि मैं कैसे घर पहुंचा, और कैसे जाकर बिस्तर पर पड़ गया। पर, ज्यों ही आंख लगने को हुई, वह दृश्य फिर आंखों के सामने घूमने लगा, सारी आवाजें फिर मुझे सुनाई देने लगीं, और मैं उठकर पलंग पर बैठ गया

"हो न हो, कोई न कोई बात ऐसी जरूर है जिसे वह जानता है पर मैं नहीं जानता, कर्नल के बारे में सोचते [illegible] मन

कहा। —अगर उसकी जगह पर कुछ मेरी समझ में भी आ जा...
जाकर इस तरह मेरा दिल नहीं दुखे —पर, हज़ार चेष्टा करने पर भी
मेरी समझ में वह बात नहीं आई जो उस कर्नल को मालूम थी। ...
वह कि कहीं शाम को जाकर मेरी आँख लगी और सो भी ...
कुछ मित्र के घर गया और मैंने अत्यधिक शराब पी थी। ... है कि
शराब पीने के बाद किसी चीज की सुध बुध न रही।

"आप क्या समझते हैं कि मैंने इस दुख से कोई सुख नहीं... निकाला? हरगिज नहीं। मैं तो इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यदि उस... सारे दुःख के पीछे ऐसा कोई रहस्य है, और हर आदमी उसे आत्म... समझकर अंगीकार कर लेता है, तो कोई न कोई बात ऐसी जरूर है जिसका पता बाकी सबको तो है, पर केवल मुझे नहीं। ... कार मैं भी इस रहस्य का भेद पाने की कोशिश करने लगा। पर, वह रहस्य मेरे लिए सदा रहस्य ही बना रहा। और चूंकि मैं उसे समझ नहीं पाया, इसलिए फौज में भरती भी नहीं हुआ, हालांकि मैं फौज की नौकरी करना चाहता था। वैसे, फौज की नौकरी ही क्या, मैं तो कोई और नौकरी भी नहीं कर पाया। बस, मैं कुछ भी नहीं बन पाया!"

"हम खूब जानते हैं कि आप क्या कुछ बन गए हैं," एक मेहमान बोला, "यह कहना ज्यादा मुनासिब होगा कि अगर आप न होते तो जाने कितने ही लोग कुछ न बन पाते।"

"यह बड़ी फिजूल-सी बात आपने कही है," इवान वसील्येविच ने सचमुच चिढ़कर कहा।

"खैर, तो आपके प्रेम का क्या हुआ?" हमने पूछा।

"मेरा प्रेम? मेरे प्रेम को तो उसी दिन पाला मार गया। जब उस लड़की के चेहरे पर वह अनमनी-सी मुस्कराहट नजर आती, तो मैदान में खड़ा कर्नल मेरी आंखों के सामने आ जाता। मैं सकपका उठता, और मेरा दिल बेचैन होने लगता। होते-होते मैंने उससे मिलना छोड़ दि... और मेरा प्रेम धीरे-धीरे मर गया। ऐसी ही बातें कभी-कभी स... जीवन का रुख बदल देती हैं, और आप हैं कि कहे जा रहे हैं कि जो...

विश्व-साहित्य के महान उपन्यास-
[illegible] 'नाम के बाद' अत्यन्त
रोचक और बार-बार पढ़ने के योग्य [illegible]
की अद्भुत उपन्यासकला के सर्वोत्तम उदाहरण।

हिन्द पॉकेट बुक्स

की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स